RNI. NO. RAJHIN/2021/82156 डाक पंजीयन संख्या: RJ/ALW/866/23-25

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा

जज्बा सच दिखाने का

वर्ष -05 | अंक -42 | मूल्य: 2.00 रू. | अलवर, शनिवार 26 अप्रैल, 2025 | प्रभात संस्करण | कुल पेज- 10

WWW.Voiceofpratigya.com | Twitter.com/Voiceofpratigya | facebook.com/Voiceofpratigya | YouTube.com/Voiceofpratigya | Instagram- Instagram.com/Voiceofpratigya | 9414508610 | pratigya.alwar@gmail.com

पहलगाम हमले के बाद एक्शन में अमित शाह

पाकिस्तानियों को खोजो और वापस भेजो, सभी सीएम को दिया निर्देश

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा नई दिल्ली

पहलगाम में आतंकी हमले के बाद केंद्र सरकार एक्शन मोड में है। पहले पीएम मोदी ने आपात बैठक कर पाकिस्तानी नागरिकों का वीजा कैंसिल करने का फैसला किया।

कोई पाक नागरिक भारत में न रहे

अब गृह मंत्री अमित शाह ने सभी मुख्यमंत्रियों से बात करके उन्हें कहा कि वे यह सुनिश्चित करें कि देश छोड़ने की समय सीमा समाप्त होने के बाद कोई भी पाकिस्तानी भारत में न रहे। दरअसल, शाह ने आज सभी मुख्यमंत्रियों से बात करके उन्हें कहा कि वो अपने-अपने राज्य में खोज-खोजकर सभी पाकिस्तानी नागरिकों को भारत से वापस पाक भेजने का काम करें। गृहमंत्री ने अधिकारियों के साथ हुई लंबी बैठक के बाद ये निर्देश जारी किया।

लगातार एक्शन ले रही मोदी सरकार

बता दें कि पहलगाम में आतंकी हमले के बाद से केंद्र की मोदी सरकार लगातार एक्शन मोद में हैं। हमले के बाद भारत ने सबसे पहले कड़ा कदम उठाते हुए सिंधु जल समझौते को स्थगित कर दिया। भारत ने औपचारिक पत्र लिखकर समझौता रद करने की जानकारी पाक को दी।

शीघ्र पाकिस्तान वापसी सुनिश्चित करने को कहा

पाकिस्तान के सभी तरह के वीजा तत्काल प्रभाव से रद्द करने का फैसला लिया गया है। शाह ने मुख्यमंत्रियों से लोगों की शीघ्र पाकिस्तान वापसी सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाने को भी कहा है। इस बीच, केंद्रीय गृह मंत्री अपने आवास पर सिंधु जल संधि को लेकर बैठक भी करेंगे। इस बैठक में गृह मंत्री और केंद्रीय जल शक्ति मंत्री सीआर पाटिल के अलावा अन्य वरिष्ठ सरकारी अधिकारी शामिल होंगे। सूत्रों ने एएनआई को बताया कि कि भारत ने सिंधु जल संधि को निलंबित करने के बारे में पाकिस्तान को औपचारिक रूप से लिखित रूप से सूचित कर दिया है जल शक्ति मंत्रालय की सचिव देवश्री मुखर्जी ने पाकिस्तान के जल संसाधन मंत्रालय के सचिव सैयद अली मुर्तजा को एक पत्र के जरिए भारत सरकार के इस फैसले की जानकारी दी है। भारत सरकार द्वारा सिंधु समझौता स्थगित करना एक बड़ा कदम है। दरअसल, पाक के 21 करोड़ लोग इसी के पानी पर निर्भर है। सभी लोगों के लिए ये लाइफ लाइन मानी जाती है।

राजस्थान से समय सीमा में पाक नागरिकों का होगा निष्कासन: सीएम भजनलाल

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने शुक्रवार (25 अप्रैल) को केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह से वार्ता हुई. वहीं इस वार्ता के बाद केन्द्र द्वारा पाकिस्तानी नागरिकों के वीजा को लेकर जारी की गई गाइडलाइन की पालना हेतु अधिकारियों को निर्देशो की तत्काल एवं सख्ती से पालना करने के निर्देश दिए है. मुख्यमंत्री ने केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह को वार्ता में उन्हें यह आश्वस्त किया कि पाकिस्तान नागरिकों के वीजा के संबंध में प्राप्त दिशा-निर्देशो का राज्य में कठोरता से पालना की जाएगी. वहीं सभी अधिकारियों से कहा गया है कि समय सीमा में पाक नागरिकों का निष्कासन का काम किया जाए. इस क्रम में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के निर्देश पर गृह विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव आनन्द कुमार ने शुक्रवार को सचिवालय में सम्बंधित अधिकारियों की बैठक ली. बैठक में पुलिस महानिदेशक यू.आर. साहू, सी.आई.डी. सुरक्षा पुलिस महानिदेशक संजय अग्रवाल, गृह विभाग की शासन उप सचिव सोविला माथुर, राजेश जैन, समस्त पुलिस अधीक्षक एवं अन्य पुलिस अधिकारी उपस्थित रहे. सभी जिला कलेक्टर एवं पुलिस अधीक्षक वी.सी. के माध्यम से बैठक में उपस्थित रहे. उल्लेखनीय है कि केन्द्रीय गृह मंत्रालय ने पाकिस्तानी नागरिकों को जारी सार्क वीजा 26 अप्रैल, शनिवार से एवं दीर्घकालिक वीज़ा, राजनयिक और आधिकारिक वीज़ा को

छोड़कर सभी मौजूदा वैध वीज़ा 27 अप्रैल, रविवार से तत्काल प्रभाव से रद्द कर दिये हैं. पाकिस्तानी नागरिकों को जारी किए गए मेडिकल वीज़ा 29 अप्रैल, 2025 तक ही वैध रहेंगे. पाकिस्तानी नागरिकों का निष्कासन अटारी बॉर्डर से किया जाना है. ष्टस (होम) ने संबंधित पुलिस अधीक्षकों एवं एफआरओ को निर्देश दिए कि ऐसे पाक नागरिक जो लॉग टर्म वीजा एल.टी.वी. के अतिरिक्त अन्य वीजा पर राज्य में निवासरत हैं, उनके निष्कासन की कार्यवाही गृह मंत्रालय द्वारा जारी निर्देशों में वर्णित समय सीमा के अनुसार की जाये. मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा द्वारा पिछले बुधवार को कानून व्यवस्था के सम्बंध में ली गई बैठक में दिए गए निर्देशों के अनुसार पुलिस और प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा राज्य में पूर्ण चौकसी रखने, आमजन और पर्यटकों की सुरक्षा का विशेष ध्यान रखने, सोशल मीडिया पर निगाह रखने की अक्षरशः पालना के भी निर्देश दिए गए.

सीमा पर तनाव के बीच हाई अलर्ट पर अस्पताल, डॉक्टरों की छुट्टी कैंसिल

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा जम्मू

सीमा पर चल रहे तनाव के चलते राजकीय मेडिकल कॉलेज अस्पताल जम्मू अलर्ट हो गया है। अस्पताल प्रशासन ने किसी भी प्रकार की स्थिति के लिए तैयार रहने और अपने स्टाफ को अनावश्यक छुट्टियां नहीं लेने को कहा है। जीएमसी के चिकित्सा अधीक्षक द्वारा जारी एक आदेश में सभी कर्मचारियों को अलर्ट पर रहने के निर्देश दिए गए हैं। इसमें कहा गया है कि किसी भी समय अगर कोई भी स्थिति उत्पन्न होती है तो उसके लिए पूरी तरह से तैयार रहें। कोई भी अनावशयक छुट्टी न लें और डयूटी के समय अस्पताल प्रांगण को न छोड़े ताकि मरीजों की देखभाल प्रभावित न हो। आपातकालीन स्थिति से निपटने के लिए 24 घंटे चलने वाला कंट्रोल रूम स्थापित किया गया है। कंट्रोल रूम में कोई भी किसी भी स्थिति पर 0191-2582355 और 0191-2582356 पर संपर्क कर सकता है। गौरतलब है कि जम्मू में सीमावर्ती क्षेत्रों में कभी भी हालात खराब होने पर जीएमसी जम्मू हमेशा से ही अलर्ट पर रहा है। आसपास सिर्फ जीएमसी जम्मू में ही एकमात्र अस्पताल है जहां पर घायलों को उपचार के लिए लाया जाता है। इसी को देखते हुए अभी से ही जीएमसी जम्मू किसी भी प्रकार की स्थिति से निपटने के लिए तैयार है।

सरकार जो भी एक्शन लेगी हम साथ देंगे, श्रीनगर में बोले राहुल गांधी, हमले में घायल हुए लोगों से की मुलाकात

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा श्रीनगर

पहलगाम आतंकी हमले के बाद आज विपक्ष के नेता राहुल गांधी जम्मू-कश्मीर पहुंचे। लोकसभा में विपक्ष के नेता ने श्रीनगर में हमले में घायल हुए लोगों से मुलाकाात की। इस बीच कांग्रेस सांसद ने कहा कि यह देखकर दुख होता है कि कुछ लोग कश्मीर और देश के बाकी हिस्सों में मेरे भाइयों और बहनों पर हमला कर रहे हैं। कांग्रेस सांसद ने कहा कि मुझे लगता है कि यह बहुत महत्वपूर्ण है कि हम सभी एक साथ खड़े हों, एकजुट रहें और इस घिनौनी कार्रवाई का मुकाबला करें और आतंकवाद को हमेशा के लिए हरा दें। उन्होंने कहा, कांग्रेस सांसद ने कहा कि कल हमने सरकार के साथ बैठक की और संयुक्त विपक्ष ने इस कार्रवाई की निंदा की और कहा कि सरकार जो भी कार्रवाई करना चाहती है, हम उसका समर्थन करेंगे। उन्होंने कहा कि जो कुछ हुआ है उसके पीछे समाज को बांटने, भाई को भाई से लड़ाने का विचार है। और यह बहुत महत्वपूर्ण है कि हर एक भारतीय एकजुट हो, एक साथ खड़ा हो, ताकि हम आतंकवादियों को हरा सकें। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने शुक्रवार को पर्यटकों पर पहलगाम आतंकी हमले पर चर्चा करने के लिए जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला से मुलाकात की। इस बाबत अधिकारियों ने बताया कि राहुल गांधी ने पहले सेना के अस्पताल में घायल पर्यटकों से बातचीत की और अब्दुल्ला से उनके आवास पर मुलाकात की। बता दें कि 22 अप्रैल को पहलगाम में आतंकवादियों ने पर्यटकों पर हमला किया था। इसमें 26 लोग मारे गए थे और कई घायल हो गए। अधिकारियों ने बताया कि कांग्रेस नेता ने पहले व्यापार प्रतिनिधियों, छात्र नेताओं और पर्यटन क्षेत्र के प्रतिनिधियों सहित विभिन्न प्रतिनिधिमंडलों से मुलाकात की।

किसी न किसी तरह आपसी तनाव दूर कर लेंगे भारत-पाक, ट्रंप बोले- इन दोनों देशों के बीच हमेशा रहा है विवाद

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा वाशिंगटन

पहलगाम आतंकी हमले के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच तल्खी के बीच अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने शुक्रवार को उम्मीद जताई कि दोनों देश आपसी रिश्तों में आए तनाव को दूर कर लेंगे।

पाकिस्तान और भारत के बीच बहुत तनाव है

ट्रंप ने एयरफोर्स वन के विमान में पत्रकारों से कहा, पाकिस्तान और भारत के बीच बहुत तनाव है, लेकिन दोनों देश किसी न किसी तरह से इसका हल निकाल ही लेंगे। ट्रंप ने कहा कि वह दोनों देशों के नेताओं को जानते हैं। जब ट्रंप से पूछा गया कि क्या वह उनसे संपर्क करेंगे, तो उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। भारत के साथ बढ़ते तनाव के बारे में जानकारी इस बीच प्रेट्र के अनुसार इस्लामाबाद में पाकिस्तान ने लगातार दूसरे दिन विदेशी राजनयिकों को भारत के साथ बढ़ते तनाव के बारे में जानकारी दी। विदेश कार्यालय ने बयान में कहा, विदेश सचिव आमना बलूच ने इस्लामाबाद में मिशन प्रमुखों और राजनयिकों को पहलगाम हमले के बाद के घटनाक्रमों की जानकारी दी। इससे पहले गुरुवार को भी बलूच ने राजनयिकों को पहलगाम हमले के बाद उत्पन्न स्थिति के बारे में जानकारी दी थी। अमेरिकी विश्लेषकों का कहना है कि अंतरिक्ष में एक रूसी उपग्रह

अनियंत्रित रूप से घूमता हुआ दिखाई दे रहा है, जिससे संकेत मिलता है कि यह अब काम नहीं कर रहा है। मास्को के अंतरिक्ष हथियार कार्यक्रम के लिए यह एक झटका हो सकता है। अमेरिकी अधिकारियों का मानना है कि यह सेटेलाइट परमाणु उपग्रह-रोधी हथियार कार्यक्रम से जुड़ा है। अंतरिक्ष-ट्रैकिंग फर्म लियोलैब्स के डापलर रडार डाटा और स्लिंगशाट एयरोस्पेस के ऑप्टिकल डाटा के अनुसार,

रूस लगातार कर रहा परमाणु हथियार

पिछले वर्ष अमेरिका ने आरोप लगाया था कि रूस कई वर्षों से एक परमाणु हथियार विकसित कर रहा है, जो पूरे उपग्रह नेटवर्क को नष्ट करने में सक्षम है, जैसे कि स्पेसएक्स की विशाल स्टारलिंक इंटरनेट प्रणाली, जिसका उपयोग यूक्रेनी सैनिक कर रहे हैं।

2022 में यूक्रेन पर आक्रमण करने से कुछ सप्ताह पहले रूस द्वारा लांच किए गए कास्मोस 2553 उपग्रह में पिछले साल भर में कई बार गलत तरीके से घूमने की घटनाएं हुई हैं।

भारत-पाकिस्तान सीमा विवाद पर बोले ट्रंप

ट्रंप ने पहलगाम हमले को लेकर कहा कि जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में जो हुआ वो बहुत बुरा था। इसके साथ ही ट्रंप ने भारत-पाकिस्तान सीमा विवाद पर कहा कि भारत पाकिस्तान के बीच सीमा पर 1,500 सालों से तनाव रहा है। यह नया नहीं है। लेकिन मुझे भरोसा है कि भारत और पाकिस्तान इसे किसी तरह से सुलझा लेंगे। मैं दोनों नेताओं को जानता हूं। वे इसे किसी न किसी तरह से खुद ही सुलझा लेंगे। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम शहर के निकट 'मिनी स्विटरलैंड' नाम से मशहूर पर्यटन स्थल पर मंगलवार दोपहर हुए आतंकवादी हमले में 26 लोगों की मौत हो गई, जिनमें ज्यादातर पर्यटक हैं। यह 2019 में पुलवामा में हुए हमले के बाद घाटी में हुआ सबसे घातक हमला है। एक उच्च पदस्थ अधिकारी ने बताया कि 26 मृतकों में दो विदेशी और दो स्थानीय निवासी हैं। जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने इस आतंकी हमले को 'हाल के वर्षों में आम लोगों पर हुए किसी भी हमले से कहीं बड़ा' हमला बताया। अधिकारियों ने बताया कि यह हमला ऐसे समय हुआ है जब अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस भारत की यात्रा पर हैं।

दिल्ली में आज से 'ट्रिपल इंजन' की सरकार, राजा इकबाल सिंह बने नए मेयर

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा नई दिल्ली

दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) के मेयर का चुनाव शुक्रवार को संपन्न हो गया। राजा इकबाल सिंह नए मेयर निर्वाचित हुए हैं। इससे पहले, मेयर चुनाव की प्रक्रिया शुरू हुई थी, जिसमें बीजेपी के सभी सांसद मतदान करने पहुंचे। मेयर चुनाव में कुल 142 वोट डाले गए। इसमें राजा इकबाल सिंह को 133 वोट मिले। एक वोट अमान्य घोषित कर दिया गया। जीत के बाद राजा इकबाल सिंह ने कहा कि वह सभी को साथ लेकर चलेंगे। सफाई कार्यक्रम उनकी पहली प्राथमिकता रहेगी। दिल्ली की जनता को सभी सुविधाएं मिलेगी। वहीं, जय भगवान यादव उप-महापौर निर्वाचित हुए हैं। कांग्रेस ने उप-महापौर पद पर नाम वापस ले लिया था। वहीं राजा इकबाल सिंह ने आज ही अपना पदभार भी ग्रहण कर लिया।

पीएनबी घोटाले में राजस्थान में ईडी की बड़ी कार्रवाई

बीकानेर, हनुमानगढ़ और जयपुर समेत 10 से ज्यादा ठिकानों पर रेड

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा जयपुर

पंजाब नेशनल बैंक में हुए करोड़ों रुपए के घोटाले को लेकर शुक्रवार को राजस्थान में ईडी ने 10 से ज्यादा ठिकानों पर छापे मारे हैं।

मामले में एफआईआर पहले ही दर्ज की जा चुकी है। श्रीगंगानगर का अमनदीप चौधरी इस घोटाले का मुख्य आरोपी है। एंटी करप्शन ब्यूरो ने इस प्रकरण में एफआईआर दर्ज की थी। अब इस मामले में ईडी ने बीकानेर, हनुमानगढ़ और जयपुर में छापेमारी की कार्रवाई तेज कर दी गई है। ईडी प्रदेश में लगातार दूसरे दिन सक्रिय रही। गुरुवार को ईडी ने जल जीवन मिशन घोटाले में राजस्थान के पूर्व कैबिनेट मंत्री महेश जोशी को भी गिरफ्तार कर लिया था। इससे पहले ईडी ने यहां सहारा प्राइम लिमिटेड की 1023 एकड़ जमीन को भी अस्थाई रूप से अटैच किया था।

पूर्व कैबिनेट मंत्री महेश को किया गिरफ्तार

सहारा प्राइम लिमिटेड की 1023 एकड़ जमीन अटैच

चिटफंड घोटाले में पूर्व कैबिनेट मंत्री खाचरियावास के यहां भी मारा था छापा

इसी महीने में पूर्व कैबिनेट मंत्री प्रताप सिंह खाचरियावास के घर पर भी ईडी ने चिटफंड घोटाले को लेकर छापा मारा था। बताया जा रहा है कि इस घोटाले में प्रदेश भर के 28 लाख निवेशकों के करीब 2850 करोड़ रुपए फंसे हैं।

चौधरी ने बैंक से 25 करोड़ रुपए का लोन लेकर किया गोलमाल

बताया जा रहा है कि श्रीगंगानगर निवासी अमनदीप चौधरी ने अपने साथियों के साथ मिलकर पंजाब नेशनल बैंक से 25 करोड़ रुपए का लोन लिया और इसके बाद बैंक को धोखा देकर रकम हड़प ली। आरोप है कि उसने वेयर हाउस में रखे माल को गिरवी रखकर लोन प्राप्त किया लेकिन बाद में बैंक को बिना जानकारी दिए वह माल बाजार में बेच दिया गया। इस पूरे मामले में अमनदीप चौधरी के साथ उसकी पत्नी सुनीता चौधरी, ओमप्रकाश और अन्य आरोपी भी शामिल हैं। ईडी की टीमों ने आरोपियों के जयपुर में 3 बीकानेर में 2और हनुमानगढ़ व श्रीगंगानगर में 5 ठिकानों पर छापे की कार्रवाई की।

मनी लॉन्ड्रिंग की आशंका

इस धोखाधड़ी को लेकरअक्टूबर 2020 में भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो जोधपुर में केस दर्ज किया गया था। इसमें मनी लॉन्ड्रिंग की आशंका के चलते ईडी ने भी जांच शुरू की है। छापेमारी बैंकिंग सिस्टम में बड़े फर्जीवाड़े का पर्दाफाश मानी जा रही है। आरोपियों की संपत्तियों औरलेन-देन की भी पड़ताल हो रही है।

सोनिया और राहुल को कोर्ट से बड़ी राहत

ईडी बोली- हम नहीं चाहते आदेश लंबा खिंचे, 2 को फिर सुनवाई

नेशनल हेराल्ड मनी लॉन्ड्रिंग मामले में दिल्ली की एक कोर्ट ने कांग्रेस नेता सोनिया गांधी, राहुल गांधी और अन्य को नोटिस जारी करने से फिलहाल इनकार कर दिया है। कोर्ट ने अगली सुनवाई 2 मई को तय की है। कोर्ट ने ईडी से और अधिक प्रासंगिक दस्तावेज लाने और खामियों को दूर करने को कहा है। ईडी ने तर्क दिया कि नए कानूनी प्रावधानों के तहत आरोपी को सुने बिना शिकायत (आरोप पत्र) पर संज्ञान नहीं लिया जा सकता।

40 स्कूली बच्चों के बैग में मिली ई-सिगरेट, मचा हड़कंप

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा अलवर

शहर के एक निजी स्कूल में उस समय हड़कंप मच गया जब करीब 40 स्कूली विद्यार्थियों के बैग से ई-सिगरेट बरामद की गई। यह मामला कुछ दिनों पहले सामने आया, लेकिन प्रशासन की ओर से अब तक इसकी आधिकारिक पुष्टि नहीं की गई है। सोशल मीडिया पर जैसे ही यह खबर वायरल हुई, अभिभावकों और आमजन में चिंता की लहर दौड़ गई। ई-सिगरेट का चलन इन दिनों किशोरों और स्कूली बच्चों में तेजी से बढ़ रहा है। बीड़ी-सिगरेट की तुलना में यह न केवल छिपाना आसान है, बल्कि इसका धुआं नहीं होता, बल्कि वेप निकलता है, जिससे आसपास के लोगों को इसकी भनक तक नहीं लगती। इसे पेन, पेन ड्राइव जैसी आकृतियों में तैयार किया जा रहा है, जिससे यह स्कूली बैग या जेब में आसानी से छिपाया जा सकता है। विशेषज्ञों के अनुसार ई-सिगरेट में निकोटिन होता है, जो शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए अत्यंत हानिकारक है। यह दिल, फेफड़ों को नुकसान पहुंचाता है और दीर्घकाल में कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों का कारण बन सकता है। सबसे गंभीर बात यह है कि भारत सरकार ने वर्ष 2019 में ई-सिगरेट पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया था। इसके बावजूद देशभर में यह अवैध रूप से बेची जा रही है। अलवर शहर भी इससे अछूता नहीं है। शहर के कई इलाकों में चोरी-छिपे इसकी बिक्री की जा रही है, लेकिन संबंधित विभाग अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं कर पाए हैं। एक्सपर्ट्स का मानना है कि कंपनियों का टारगेट अब टीनेजर्स हैं, जिन्हें छोटी उम्र से ही इसकी लत लगाकर लंबे समय तक उपभोक्ता बनाए रखा जा सकता है। अभिभावकों की चिंता इस बात को लेकर है कि सख्ती के बावजूद ई-सिगरेट जैसे उत्पाद स्कूलों तक पहुंच रहे हैं। बच्चों की पहुंच से दूर रखने के लिए जहां एक ओर स्कूलों को सतर्कता बरतनी होगी, वहीं दूसरी ओर स्थानीय प्रशासन और पुलिस को भी इस दिशा में सख्त कदम उठाने की जरूरत है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों की राय में इसके लिए समाज, प्रशासन और परिवार को मिलकर पहल करनी होगी, ताकि आने वाली पीढ़ी को इस खतरनाक लत से बचाया जा सके। अगर समय रहते कार्रवाई नहीं की गई तो यह आदत बच्चों के भविष्य को गहरे संकट में डाल सकती है।

अलवर में लघु उद्योग भारती का स्थापना दिवस, महिलाओं को मिला रोजगार प्रशिक्षण केंद्र

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा अलवर

अलवर में शुक्रवार को लघु उद्योग भारती के 31वें स्थापना दिवस पर चैंबर भवन, मूंगस्का (पुराना दिल्ली रोड) में विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत जम्मू-कश्मीर के पहलगांव में हुए हालिया हादसे के शोक में दो मिनट के मौन से की गई। इस अवसर पर राष्ट्रीय संगठन मंत्री प्रकाशचंद और राजस्थान सरकार के वन मंत्री संजय शर्मा विशेष रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम में महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए 'सक्षम भारत कौशल विकास केंद्र' की शुरुआत की गई। केंद्र का उद्घाटन महिलाओं के लिए रोजगार केंद्र एवं सिलाई मशीन कक्ष के रूप में किया गया, जहां उन्हें सिलाई प्रशिक्षण देकर स्वावलंबी बनाने का कार्य किया जाएगा। फिलहाल केंद्र में 15 सिलाई मशीनें स्थापित की गई हैं। महासचिव शशांक झालानी ने बताया कि यह योजना भविष्य में और अधिक महिलाओं को जोड़ने की दिशा में विस्तारित की जाएगी, जिससे ग्रामीण और शहरी क्षेत्र की महिलाएं भी इसका लाभ उठा सकेंगी। स्थापना दिवस कार्यक्रम के तहत समाज सेवा को भी महत्व दिया गया। इसी क्रम में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 50 यूनिट रक्त संग्रहित होने की संभावना जताई गई है। आयोजन समिति ने बताया कि इस शिविर में युवाओं और संस्था के सदस्यों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया, जिससे रक्त की आवश्यकता के समय पर मदद मिल सके। इस अवसर पर वक्ताओं ने कहा कि लघु उद्योग भारती न केवल छोटे उद्यमों को प्रोत्साहन देती है, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व को भी बराबर महत्व देती है। उन्होंने बताया कि संस्था का उद्देश्य केवल उद्योग क्षेत्र तक सीमित नहीं है, बल्कि समाज के हर वर्ग के उत्थान और सहभागिता को प्राथमिकता देना भी उसकी कार्ययोजना का हिस्सा है। कार्यक्रम में अन्य अतिथियों ने भी अपने विचार रखे और संस्था के कार्यों की सराहना की। अंत में यह घोषणा की गई कि भविष्य में भी इसी प्रकार के सामाजिक और विकासात्मक कार्यक्रम आयोजित किए जाते रहेंगे, ताकि स्थानीय समुदाय को सशक्त बनाने की दिशा में ठोस प्रयास किए जा सकें।

बारह साल बाद मुस्कान को मिला परिवार, आरती बालिका गृह ने संवारा भविष्य

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा अलवर

बारह साल पहले अपने परिवार से बिछड़ी मुस्कान आखिरकार अपने घर लौट आई है। वर्ष 2013 में मात्र सात वर्ष की उम्र में मुस्कान भिवाड़ी क्षेत्र से एक अनजान व्यक्ति द्वारा चाइल्डलाइन को सौंपी गई थी। उस समय उसकी मां का देहांत हो चुका था और वह अपने परिजनों से पूरी तरह कट चुकी थी। बाल कल्याण समिति (ष्टङ्ख्ष्ट) ने मुस्कान को आरती बालिका गृह अलवर में भेजा, जहां उसका पालन-पोषण और भविष्य संवारने का जिम्मा उठाया गया। बालिका गृह के संचालक चेतराम सैनी के अनुसार, मुस्कान शुरू से ही पढ़ाई में होनहार रही है। उसने दसवीं कक्षा में 91.33 प्रतिशत अंक प्राप्त किए और हाल ही में जीवविज्ञान विषय से बारहवीं की परीक्षा दी है। मुस्कान का सपना डॉक्टर बनने का है और वह नीट परीक्षा की तैयारी भी कर रही थी। उसकी मेहनत और प्रतिभा ने उसे चार बार स्टेट लेवल प्रतियोगिता परीक्षा में पहला स्थान दिलाया, जो राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, उच्च न्यायालय जयपुर द्वारा आयोजित की गई थी। मुस्कान की उपलब्धियों को हाईकोर्ट द्वारा प्रकाशित एक पुस्तक में भी शामिल किया गया है। बालिका गृह ने मुस्कान के परिवार को खोजने का प्रयास लगातार जारी रखा। हाल ही में जब वीडियो कॉल के जरिए मुस्कान की एक वृद्धा से बात करवाई गई, तो उसने भावुक होते हुए उन्हें अपनी नानी के रूप में पहचान लिया। मुस्कान पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले की रहने वाली है। इस पहचान के बाद उसकी नानी हसीना और मौसा हारून शेख अलवर आकर मुस्कान को अपने साथ ले गए। हारून शेख ने आरती बालिका गृह की पूरी टीम का आभार जताते हुए कहा कि उन्होंने मुस्कान को ना केवल सुरक्षित रखा, बल्कि उसका भविष्य भी संवारा। अब परिवार उसकी आगे की पढ़ाई का जिम्मा उठाएगा और उसे डॉक्टर बनाने के सपने को पूरा करने में हरसंभव मदद करेगा। मुस्कान के पिता हबीब उर रहमान अपनी बेटी की तलाश करते हुए मानसिक रूप से अस्वस्थ हो चुके हैं। मुस्कान कहती है कि उसे अपने बचपन की ज्यादा बातें याद नहीं हैं, लेकिन नानी को पहचानना उसके लिए एक बेहद भावुक और यादगार क्षण था। बारह साल के लंबे इंतजार के बाद मुस्कान को उसका परिवार मिला, और उसके सपनों को नई उड़ान मिली है।

अंतर्राष्ट्रीय मानव अधिकार सुरक्षा फाउंडेशन की बैठक आयोजित

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा लक्ष्मणगढ़

जी आई एस कैंपस कठूमर में अंतर्राष्ट्रीय मानव अधिकार सुरक्षा फाउंडेशन की बैठक राष्ट्रीय अध्यक्ष गिरिराज प्रसाद गुप्ता की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक का मुख्य उद्देश्य भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, महिला शोषण और अन्याय के खिलाफ आवाज उठाकर न्याय दिलाना था। इस संदर्भ में ग्राम गारु के एफआईआर 28/25 के एक प्रकरण की चर्चा हुई, जिसमें 17 मार्च 2025 को डीवाईएसपी से कठूमर में मुलाकात की गई थी। हालांकि, कोई ठोस कार्यवाही नहीं हुई थी। जब प्रदेश स्तरीय टीम 25 अप्रैल 2025 को पुनः डीवाईएसपी के पास पहुंची, तो उनका जवाब संतोषजनक नहीं था। डीवाईएसपी ने कहा कि वे अनुसंधान कर रहे हैं, लेकिन कोई स्पष्ट कार्रवाई नहीं की गई। इसके विरोध में बैठक में एक प्रस्ताव पारित किया गया, जिसमें निर्णय लिया गया कि इस अन्याय के खिलाफ कार्रवाई के लिए आईजी और मुख्यमंत्री को शिकायत भेजी जाएगी। इस बैठक में राष्ट्रीय अध्यक्ष गिरिराज प्रसाद गुप्ता के साथ संवाद अध्यक्ष अजीत सिंह सैनी, वरिष्ठ प्रभारी पी. डी. सैनी, कोटपूतली बहरोड के जिला अध्यक्ष संतोष कुमार सैनी, एडवोकेट मुकेश सैनी, भरतपुर के अभय कुमार शास्त्री, जिला अलवर कार्यकारी अध्यक्ष चेतन कुमार शर्मा, राजेंद्र प्रसाद शर्मा करौली जिला अध्यक्ष, देवीसहाय, कठूमर तहसील अध्यक्ष शिवचरण अवस्थी, गोपाल कृष्ण शुक्ल, अरविंद शर्मा, नरेश जी, हरि ओम, नेमीचंद, सुरेंद्र सिंह समेत अन्य लोग उपस्थित रहे।

जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक में चिकित्सा योजनाओं की गहन समीक्षा, मिशन आकाश में बड़ी प्रगति

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा अलवर

जिला कलक्टर डॉ. आर्तिका शुक्ला ने कलक्ट्रेट सभागार में जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक लेकर विभिन्न स्वास्थ्य योजनाओं की समीक्षा की और चिकित्सा अधिकारियों को अहम दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने मां योजना के अंतर्गत मई माह में एक करोड़ रुपये से अधिक के पैकेज बुक करने का लक्ष्य तय करते हुए चिकित्सा संस्थानों को योजनाओं से प्राप्त आय का उपयोग मरीजों के हित में करने के निर्देश दिए। कलक्टर ने मिशन आकाश की प्रगति की सराहना करते हुए बताया कि जिले में अब तक छह वर्ष तक के 1,86,656 बच्चों और 17,307 गर्भवती महिलाओं की स्क्रीनिंग पूर्ण की जा चुकी है। स्क्रीनिंग में एनीमिक, अतिकुपोषित और कुपोषित पाए गए मरीजों का उपचार जारी है। उन्होंने निर्देश दिया कि ऐसे सभी मरीजों को फॉलोअप कार्ड वितरित किए जाएं और उचित परामर्श के साथ लगातार फॉलोअप किया जाए। हीटवेव और मौसमी बीमारियों को देखते हुए कलक्टर ने सभी चिकित्सा संस्थानों को ग्रीष्मकालीन व्यवस्थाएं पुख्ता करने के निर्देश दिए। अस्पतालों में कुलर, पंखे, शीतल पेयजल जैसी सुविधाएं सुनिश्चित करने को कहा गया है, ताकि मरीजों को गर्मी में राहत मिल सके। मुख्यमंत्री निःशुल्क दवा योजना और मुख्यमंत्री निःशुल्क जांच योजना की भी समीक्षा की गई। उन्होंने कहा कि इन योजनाओं की निरंतर प्रगति सुनिश्चित की जाए और लाभार्थियों को समय पर दवा व जांच की सुविधा मिले। राष्ट्रीय गुणवत्ता आश्वासन कार्यक्रम (एनक्वाश) के तहत चिकित्सा संस्थानों का राज्य मूल्यांकन करवाकर नामांकन कराने के निर्देश दिए गए। टीबी मुक्त अभियान के तहत अब तक 115 ग्राम पंचायतों को टीबी मुक्त किया जा चुका है। कलक्टर ने शेष ग्राम पंचायतों को भी शीघ्र टीबी मुक्त बनाने के लिए लगातार कार्य करने के निर्देश दिए। साथ ही एनसीडी, टीकाकरण, एएनसी पंजीकरण, संस्थागत प्रसव, तंबाकू नियंत्रण और परिवार नियोजन जैसे कार्यक्रमों की प्रगति पर भी चर्चा की गई और लक्ष्यानुसार काम करने के निर्देश जारी हुए। कलक्टर ने कहा कि प्रत्येक ग्राम पंचायत में एक पोषण सखी/दीदी तैयार की जानी चाहिए जो उचित पोषण पर महिलाओं को जागरूक कर सके। इसके लिए उन्हें विशेष प्रशिक्षण दिलाने की बात कही गई। बैठक में सीएमएचओ डॉ. योगेन्द्र शर्मा सहित सभी बीसीएमएचओ और संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

हरसोली में आयुर्वेद उपचार का विशाल निशुल्क शिविर का आयोजन

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा खैरथल

आयुर्वेद विभाग की ओर से ग्राम पंचायत हरसोली व संतदास सेवा समिति के सहयोग से 26 अप्रैल शनिवार से 5 मई तक विशाल निशुल्क शल्य चिकित्सा शिविर आयोजित किया जाएगा। सरपंच ओमेश कुमार ने बताया कि हरसोली स्थित संतदास मंदिर परिसर में आयोजित होने वाले इस शिविर में अर्श, बवासीर, भगंदर,गुदा नासुर फिशर, गुदाभ्रंश, गुदा से रक्त स्राव,जलन , दर्द आदि रोगों का क्षारसूत्र चिकित्सा विशेषज्ञ डॉ यादराम गुर्जर एवं उनकी टीम द्वारा उपचार किया जाएगा। उन्होंने बताया कि रोगी को अपने साथ आधार कार्ड कापी, एक सफेद चादर, कटोरी, गिलास, प्लेट लाना होगा। रहने खाने-पीने और औषधियां आदि सभी निशुल्क है। विभाग के अतिरिक्त निदेशक डॉ बत्तीलाल बैरवा व उपनिदेशक डॉ कर्ण सिंह दहिया ने बताया कि शिविर के उद्घाटन समारोह में जिला प्रमुख बलबीर छिल्लर, जिला कलेक्टर किशोर कुमार, पुलिस अधीक्षक मनीष कुमार व जिला मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ अरविन्द गेट अतिथि होंगे। जबकि संतदास सेवा समिति अध्यक्ष पूर्ण सिंह दादा, भामाशाह रामचरण मोदी, जीतराम नंबरदार सहित आयोजन टीम के लोग मौजूद रहेंगे।

विश्व मलेरिया दिवस पर संगोष्ठी का हुआ आयोजन

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा कोटकासिम

विश्व मलेरिया दिवस पर शुक्रवार को ब्लॉक स्तर पर खंड मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय में संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें नगर पालिका के विभिन्न विभागों से कर्मचारी व अधिकारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में रामशरण यादव, ब्लॉक प्रोग्राम ऑफिसर लालचंद, सीनियर लैब टेक्नीशियन विमल शर्मा द्वारा बीएचएस मलेरिया नियंत्रण, उसके एंटी लार्वा एक्टिविटी एवं बचाव के बारे में जानकारी दी दी गई। कार्यक्रम में प्रत्येक रविवार को एंटी लारवा एक्टिविटी करने के लिए बताया गया। इस दौरान जगदंबा पब्लिक स्कूल से शिक्षक रवि सैनी, चिकित्सा स्वास्थ्य विभाग से शशि यादव, प्रवीण यादव सहित अन्य कर्मचारी मौजूद रहे।

सैन समाज कोटकासिम द्वारा संत शिरोमणी सैन महाराज की जयंती मनाई

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा कोटकासिम

संत शिरोमणी सैन महाराज की जयंती के अवसर पर सैन समाज कोटकासिम द्वारा सेन जयंती धूमधाम से मनाई गई। इस अवसर पर समाज के सभी सदस्य एकत्रित हुए और सेन महाराज की जीवनी से अवगत कराया गया। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से कृष्ण सेन (रिटायर्ड प्रिंसिपल), प्रेम कुमार, मुंशी राम, धर्मेंद्र सेन, बाबूलाल सेन, योगेश सेन, राजवीर सेन, मास्टर शिवचरण सेन, ओमप्रकाश सुरेला, सत्यनारायण सेन, मास्टर निरंजन सेन और अन्य समाज के सदस्य उपस्थित रहे। सभी ने मिलकर सेन जी महाराज के योगदान और शिक्षाओं को याद किया। समाज के सभी सदस्यों ने इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए आभार व्यक्त किया और आने वाले समय में इसी तरह के आयोजनों को बढ़ाने का संकल्प लिया।

कासिमपुर में आज होगा विशाल देशी घी के भंडारे व रागनी कम्पटीशन का आयोजन

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा कोटकासिम

कोटकासिम क्षेत्र के गांव कासिमपुर में 26 अप्रैल शनिवार को शिव परिवार की मूर्ति स्थापना एवं प्राण पतिष्ठा के अवसर पर विशाल देशी घी के भंडारे एवं रागनी कम्पटीशन का आयोजन किया जायेगा। बाबा बद्रीनाथ महाराज ने बताया की 26 अप्रैल शनिवार को प्रात हवन यज्ञ के साथ शिव परिवार की मूर्ति स्थापना एवं प्राण पतिष्ठा के बाद विशाल देशी घी के भंडारे सहित रागनी कम्पटीशन का आयोजन किया जायेगा। रागनी कम्पटीशन मे जयवीर भाटी, सुरेन्द्र भाटी, राहुल बालियान, मन्नू तंवर, संध्या चौधरी, छाया चौधरी, भारती चौधरी द्वारा सास्कृति कार्यक्रमो की प्रस्तुति दी जायेगी।

किथूर फायरिंग और कार लूट मामले में दो आरोपी गिरफ्तार

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा अलवर

सदर थाना क्षेत्र के किथूर गांव के पास 26 फरवरी को हुई फायरिंग और कार लूट की कोशिश के मामले में पुलिस को बड़ी सफलता हाथ लगी है। पुलिस ने इस प्रकरण में दो आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। सहायक पुलिस उप निरीक्षक बंसीलाल ने जानकारी देते हुए बताया कि पीड़ित चेतन यादव ने रिपोर्ट दर्ज कराई थी कि वह 26 फरवरी को अपनी कार सड़क किनारे खड़ी कर लघुशंका के लिए रुका था। इसी दौरान कुछ अज्ञात बदमाश वहां पहुंचे और उस पर अचानक फायरिंग कर दी। आरोपियों का उद्देश्य चेतन यादव की कार लूटने का था, लेकिन घटनास्थल पर शोर शराबा और भीड़ जुट जाने के कारण वे अपने मंसूबों में कामयाब नहीं हो सके और मौके से फरार हो गए। इस हमले में चेतन यादव को गोली लगी थी, जिससे वह घायल हो गया। घटना के बाद पुलिस ने मामले की गंभीरता को देखते हुए तुरंत जांच शुरू की और त्वरित कार्रवाई करते हुए दो आरोपियों को दबोच लिया। गिरफ्तार किए गए आरोपियों की पहचान महेंद्रगढ़ निवासी दीपक महेंद्रगढ़िया और रेवाड़ी निवासी अर्जी उर्फ फर्जी के रूप में हुई है। पुलिस अधिकारियों के अनुसार, दोनों आरोपियों को मेडिकल जांच के बाद न्यायालय में पेश किया जाएगा, जहां से उन्हें पीसी रिमांड पर लिया जाएगा ताकि उनसे पूछताछ कर वारदात की पूरी सच्चाई सामने लाई जा सके। पुलिस यह जानने का प्रयास कर रही है कि इस वारदात में और कौन-कौन शामिल था और क्या इन आरोपियों का किसी संगठित गिरोह से संबंध है। फिलहाल पुलिस अन्य संभावित आरोपियों की तलाश में जुटी हुई है और आसपास के सीसीटीवी फुटेज खंगाले जा रहे हैं ताकि अपराधियों की गतिविधियों का पूरा ब्यौरा मिल सके। पुलिस को उम्मीद है कि जल्द ही पूरे गिरोह का पर्दाफाश कर लिया जाएगा।

जिला कलेक्टर किशोर कुमार की अध्यक्षता में महत्वपूर्ण बैठक, हीट वेव से बचाव व विकास कार्यों पर हुआ मंथन

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा खैरथल-तिजारा

जिला सचिवालय सभागार में जिला कलेक्टर किशोर कुमार की अध्यक्षता में आधारभूत सुविधाओं एवं हीट वेव के संबंध में बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में आगामी गर्मियों को ध्यान में रखते हुए जनहित से जुड़े मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की गई। बैठक में जिला कलेक्टर ने अत्यधिक गर्मी और संभावित हीट वेव के मद्देनज़र भीषण गर्मी के चलते किसी भी क्षेत्र में बिजली या पानी की किल्लत न हो, इसके लिए अग्रिम योजना बनाकर क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाए। हीट वेव के चलते स्वास्थ्य विभाग सहित संबंधित विभागों को आवश्यक तैयारियां पूर्ण करने और दोपहर के समय में विशेष सतर्कता बरतने के निर्देश दिए गए। उन्होंने पीएम सूर्य घर योजना के प्रचार प्रसार को और बढ़ाने के निर्देश दिए ताकि इस योजना का लाभ आमजन को मिल सके। उन्होंने अधीक्षण अभियंता को निर्देश दिए की फॉल्ट या बिजली नहीं आने की शिकायत पर तुरंत कार्रवाई कर आमजन को राहत प्रदान करें तथा कंट्रोल रूम सुचारू रूप से चालू रहे। जिस पर अधीक्षण अभियंता ने बताया कि वृत स्तर पर नियंत्रण कक्ष (कंट्रोल रूम) 24 घंटे कार्यरत है जिसके मोबाईल नंबर 9413360524 है, कोई भी आमजन अपनी शिकायत इस नंबर पर दर्ज करवा सकता है। जिला कलेक्टर ने चिकित्सा विभाग को भी हीट वेव के संबंध में अस्पतालों में पंखे, कूलर, एसी, ओआरएस सहित अन्य व्यवस्थाओं को सुदृढ़ करने के निर्देश दिए। उन्होंने अधीक्षण अभियंता जलदाय विभाग को जिले में पानी की सुचारू सप्लाई रखने के निर्देश दिए ताकि आमजन को पानी की किल्लत न हो तथा पाइपलाइन से पानी उपलब्ध नहीं करने की स्थिति में टैंकरों के माध्यम से उसे स्थान पर पेयजल आपूर्ति करने के निर्देश दिए। अधीक्षण अभियंता धर्मवीर यादव ने बताया कि प्रभावी मोनेटरिंग एवं पेयजल सम्बन्धी शिकायतो के त्वरित निस्तारण हेतु जिला स्तरीय नियंत्रण कक्ष (कन्ट्रोल रूम) कार्यालय अधिक्षण अभियन्ता, जन स्वास्थय अभियान्त्रिकी विभाग, वृत खैरथल में स्थापित किया गया है। जिसके दूरभाष नं. 01460-298735 है। आम नागरिक दूरभाष नंबर पर अपनी शिकायत दर्ज कर सकते हैं तथा व्हाट्सएप नंबर 7374917525 पर भी लिखित शिकायत दर्ज करवा सकते हैं जिसका संबंधित अधिकारियों द्वारा निश्चित समय अवधि में समाधान किया जाएगा। इसके साथ ही "रास्ता खोलो अभियान" की प्रगति पर भी समीक्षा की गई। उन्होंने निर्देश दिए कि जिन रास्तों पर अतिक्रमण या बाधाएं हैं, उन्हें शीघ्र हटाया जाए ताकि आमजन को सुगम आवागमन की सुविधा मिल सके। अधीक्षण अभियंता जेपी बैरवा ने बताया कि जीएसएस देवता एवं सरहेटा के रास्तों पर अतिक्रमण है जिस पर जिला कलेक्टर में स्थानीय उपखंड अधिकारी एवं तहसीलदार को जीएसएस रास्ते पर हुए अतिक्रमण को हटाने के निर्देश दिए। बैठक में शहरी वार्ड परिसीमन एवं पंचायत पुनर्गठन के संदर्भ में प्राप्त आपत्तियों पर भी चर्चा की गई। कलेक्टर ने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि प्रत्येक आपत्ति का गंभीरता से परीक्षण कर समयबद्ध निराकरण सुनिश्चित करें।

झोलाछाप डॉक्टरों पर होगी सख्त कार्रवाई

क्षेत्र में हुई घटनाओं को गंभीरता से लेते हुए जिला कलेक्टर ने सीएमएचओ को निर्देश दिए कि झोलाछाप डॉक्टरों पर कठोर कार्रवाई की जाए और आमजन को सुरक्षित चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध करवाई जाएं।

संपर्क पोर्टल पर लंबित राजस्व प्रकरणों की समीक्षा करते हुए उन्होंने निर्देश दिए कि संबंधित अधिकारी नियमित रूप से प्रकरणों का निस्तारण करें। साथ ही बजट घोषणाओं के अंतर्गत भूमि आवंटन की प्रगति की भी समीक्षा की गई और संबंधित विभागों को कार्य में गति लाने के निर्देश दिए गए। उन्होंने शहरी प्रधानमंत्री आवास योजना की समीक्षा कर पात्र लाभार्थी को लाभान्वित करने के निर्देश दिए।

बैठक के दौरान अतिरिक्त जिला कलेक्टर शिवपाल जाट, उपखंड अधिकारी टपूकड़ा लखन सिंह गुर्जर, अधीक्षण अभियंता जलदाय विभाग धर्मवीर यादव, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी अरविंद गेट, अधीक्षण अभियंता बिजली विभाग जेपी बैरवा, नगर परिषद आयुक्त मुकेश शर्मा, सहायक अभियंता बिजली विभाग दिनेश भड़ाना, तहसीलदार खैरथल विजय बैरवा, सहायक प्रशासनिक अधिकारी जगदीश गुप्ता सहित वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से उपखंड स्तरीय अधिकारी मौजूद रहे।

विराट कवि सम्मेलन में देश भक्ति की भावना हुई जाग्रत

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा खैरथल

काव्य कॉर्नर फाउंडेशन की और से शुक्रवार को सायं 8 बजे से कृष्णा वाटिका, खैरथल में एक भव्य कवि सम्मेलन 'एक शाम राष्ट्र के नाम' का आयोजन किया गया !संस्था की संस्थापिका डॉ. पूजा सिंह गंगानिया की उपस्थिति में यह आयोजन किया गया ।जिसमें मुख्य अतिथि जिला प्रमुख अलवर बलबीर छिल्लर, विशिष्ट अतिथि खैरथल नगर पालिका के पूर्व चेयरमैन नगर पालिका खैरथल अशोक डाटा व भाजपा मंडल अध्यक्ष मनीष शर्मा रहे । कवि सम्मेलन 'एक शाम राष्ट्र के नाम' का जिला प्रमुख बलबीर छिललर ने दीप प्रजवलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया!मंच संचालन कर रहे सदाराम सदा ने आमंत्रित कवियों का परिचय कराते हुए देश की ऑन बान शान को सलाम है सुनाया! माँ शारदा की वंदना प्रवेन्द्र पंडित ने माँ शारदा की वंदना सुनाकर भक्ति रंग में रंग दिया वही कवि के के नाथ ने हृदय में बसा एक नाम कहूंगा ज़ब तक रहेंगी मेरी अंतिम सांस जय श्री राम कहता रहूंगा खूब तालिया बटोरी!वही उत्तर प्रदेश के टूंडला से आये महान कवि लटूरी लठ ने अपने व्यंगय अंदाज में वीर रस की कविता सुनाकर महफ़िल जमा दी! कार्यक्रम में कवयित्री डॉ.पूजा सिंह गंगानिया नोयडा से,गजलकार विवेक बादल बाजपुरी रुद्रपुर उत्तराखंड से, मेहताब चौधरी अलवर से,ओज के कवि सदाराम सदा मालाखेडा से, हास्य कवि डॉ. विपुल कुमार भवालिया अलवर से,ओज के कवि जे.डी. राणा अलवर से,गजलकार के.के नाथ मुण्डावर से,देव वासु खैरथल,लवली मुखीजा खैरथल से अपनी अनुपम प्रस्तुतियां दी ।

पुलिस ने गांजा तस्कर को किया गिरफ्तार 2.78 किलोग्राम गांजा और बाइक को किया जप्त

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा कोटकासिम

DST प्रभारी सद्दीक खां एएसआई द्वारा थाना कोटकासिम के थानाधिकारी नंदलाल जांगिड़ को गौपनीय सूचना दी गई कि एक व्यक्ति अपनी मोटर साईकिल के बैग में अवैध मादक पदार्थ गांजा लेकर हरसोली फाटक से रवाना होकर करवड होते हुए कलगांव की तरफ जा रहा है। इस सूचना पर थानाधिकारी नंदलाल जांगिड़ ने त्वरित कार्रवाई करते हुए गठित टीम के साथ बीबीरानी से करवड वाली सड़क पर करवड मोड़ के पास नाकाबंदी शुरू की। पुलिस ने करीब 3.30 बजे संदिग्ध मोटर साईकिल सवार को रोका, जिसने मोटर साईकिल के पीछे एक सफेद प्लास्टिक कट्टा बांध रखा था। जब उसकी जांच की गई तो मोटर साईकिल के बैग में 2.78 किलोग्राम अवैध गांजा पाया गया, और प्लास्टिक कट्टे में लौंग (पेड पत्ती/चारा) रखा था। पुलिस टीम ने त्वरित कार्रवाई करते हुए आरोपी धर्मपाल पुत्र श्री खैरातीलाल नट, उम्र 58 वर्ष, निवासी कलगांव थाना तिजारा जिला खैरथल को गिरफ्तार कर लिया। आरोपी के कब्जे से 2 किलो 780 ग्राम गांजा और परिवहन में प्रयुक्त मोटर साईकिल को जब्त किया गया। आरोपी के खिलाफ धारा 8/20 NDPS ACT के तहत प्रकरण संख्या 117/2025 दर्ज कर लिया गया है।

लघु उद्योगों के विकास और संगठन का विस्तार ही हमारा मुख्य उद्देश्यः महेश चंचलानी

लघु उद्योग भारती का स्थापना दिवस मनाया

संगठन के कार्यों की दी जानकारी, एमएसएमई के विकास पर हुई चर्चा

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा खैरथल

लघु उद्योग भारती का स्थापना दिवस समारोह शुक्रवार को इस्माइलपुर रोड स्थित एक निजी होटल में आयोजित कर शहर के इस्माइलपुर रोड पर स्थित श्री परशुराम सर्किल पर वृक्षारोपण किया गया ह्व लघु उद्योग भारती खैरथल के सचिव देवेंद्र शर्मा ने बताया कि बुधवार को लघु उद्योग भारती के आयोजित स्थापना दिवस समारोह में मुख्य अतिथि खैरथल तिजारा जिला कलेक्टर किशोर कुमार, विशिष्ट अतिथि खैरथल के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक रतनलाल भार्गव एवं जिला उद्योग अधिकारी भिवाड़ी अभिनंदन सैनी ने समारोह स्थल दीप प्रज्वलन और संगठन मंत्र के साथ कार्यक्रम की शुरुआत की गई। कार्यक्रम के दौरान लघु उद्योग भारती खैरथल अध्यक्ष महेश चंचलानी ने संगठन की स्थापना,उद्देश्य एवं उपलब्धियो का विवरण प्रस्तुत किया और कहा कि लघु उद्योगों के विकास और संगठन का विस्तार ही हमारा मुख्य उद्देश्य है। उन्होंने सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। इस दौरान कार्यक्रम में खैरथल के औद्योगिक विकास पर चर्चा की गई एवं खैरथल के लिए प्रमुख आवश्यक मांगो के लिए मुख्यमंत्री महोदय के नाम ज्ञापन जिला कलेक्टर सौंपा गया। जिनमें प्रमुख रूप से जिला उद्योग केंद्र,रीको कार्यालय एवं ईएसआईसी डिस्पेंसरी, रोड़वेज बस डिपो तथा खैरथल में उपखण्ड कार्यालय खोलने की मांग की गई ह्व इस अवसर पर समाजसेवी नवल किशोर झालानी, प्रमुख उद्योगपति महेश चंचलानी, धर्मदास बच्चानी, रामसिंह शर्मा,अनमोल गुप्ता, देवेंद्र कुमार शर्मा, नितेश डाटा, प्रमोद सिंघानिया, दीपक बच्चानी, नारायणदास निहलानी, राज यादव राज टेक इंडिया, हिमांशु शर्मा सहित काफी संख्या में उद्यमी उपस्थित रहे कार्यक्रम के अंत में सभी अतिथियों एवं उद्यमियों एवं लघु उद्योग भारती के सदस्यों ने शहर के परशुराम सर्किल पर वृक्षारोपण किया।

खानपुर डागरान के राजकीय विद्यालय के मुख्य गेट का किया उद्घाटन

प्रधानाचार्य ने सेवानिवृत्ति से पूर्व कराया विद्यालय के मुख्य गेट का निर्माण

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा कोटकासिम

शुक्रवार को क्षेत्र के गांव खानपुर डागरान के राजकीय विद्यालय में मुख्य गेट का उद्घाटन कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार क्षेत्र के गांव खानपुर डागरान के राजकीय विद्यालय में कार्यरत प्रधानाचार्य राजबीर यादव 30 अप्रैल को सेवानिवृत्त होने वाले है। सेवानिवृत्त होने से पहले प्रधानाचार्य द्वारा विद्यालय के मुख्य गेट का निर्माण कराया गया। जिसका उद्घाटन शुक्रवार को किया गया। प्रधानाचार्य के इस नेक कार्य के लिए विद्यालय परिवार एवं ग्रामीणो द्वारा उनका आभार व्यक्त किया गया। इस दौरान एसीबीओ जीवन सिंह, आरपी हरिराम, कर्णसिंह, पूर्व सरपंच धनीराम, कृष्ण, लक्खीराम, भूपेश, दलीप व्याख्यता, पूर्व पंच विशम्बर दयाल, दयानन्द अध्यापक, शुभराम अध्यापक, विक्रम, राजेन्द्र अध्यापक, चन्द्रभान नम्बरदार सहित काफी संख्या में ग्रामीण मौजूद रहे।

मीणा समाज सुधार महापंचायत की बैठक में कुरीतियों पर रोक का निर्णय

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा माचाड़ी

आदिवासी मीणा समाज सुधार महापंचायत की जिला अलवर कोर कमेटी की विशेष बैठक गुरुवार को नंगेश्वर धाम, माचाड़ी रैणी में आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता मनफूल पटेल और जोहरी पटेल ने की। इस अवसर पर एडवोकेट पीडी मीणा ने बताया कि बैठक में समाज में व्याप्त कुरीतियों और फिजूलखर्ची को रोकने के लिए 5 फरवरी को महुआ-समलेटी और 16 मार्च को डाबला में आयोजित महापंचायतों में पारित नियमों की पालना पर विस्तार से चर्चा की गई। बैठक में निर्णय लिया गया कि इन नियमों को लागू करने की जिम्मेदारी स्थानीय पंच-पटेलों को सौंपी जाएगी, और ब्लॉक व जिला स्तर पर कोर कमेटी द्वारा निगरानी की जाएगी। नियमों की पालना की समीक्षा के दौरान सभी ब्लॉकों से उल्लंघन करने वाले गांवों और व्यक्तियों की सूची, पंच-पटेलों की कार्रवाई और समस्याओं की जानकारी मांगी गई। जिला कोर कमेटी ने ब्लॉक कमेटियों को 30 अप्रैल तक उल्लंघनकर्ताओं की सूची तैयार करने के निर्देश दिए। बैठक में यह भी निर्णय लिया गया कि आदिवासी पंचायत के अधिकार क्षेत्र में सामाजिक रूढ़ियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। इस बैठक में मालाखेड़ा, राजगढ़, थानागाजी, लक्ष्मणगढ़, रैणी, कठूमर और बसवा सहित कई गांवों के सदस्य शामिल हुए।

चिंतन

आतंकवाद के खिलाफ हो वैश्विक एक्शन का ऐलान

आतंकवाद के खिलाफ वैश्विक स्तर पर एकजुट होकर लड़ने की जरूरत है, केवल सामूहिक निंदा से बात नहीं बनेगी। पहलगाम में जिस बर्बरता से टार्गेटेड आतंकी हमला हुआ है और बेकसूर सैलानियों को सिर में गोली मारकर मौत के घाट उतारा गया है, वह बिना सुनियोजित साजिश व ट्रेनिंग संभव ही नहीं है। हमलावर आतंकवादी फौजी तरीके से प्रशिक्षित थे और अत्याधुनिक हथियारों से लैस थे। प्रारंभिक जांच में पहलगाम आतंकी हमले की साजिश के तार पाकिस्तान से जुड़ते दिख रहे हैं, अतीत में अनेक आतंकी हमलों में पाकिस्तान का हाथ रहा है। भारत ने विश्व के सामने आतंकवाद के प्रायोजक पाकिस्तान की संलिप्तता के सबूत अनेक बार दिए हैं। संयुक्त राष्ट्र, अमेरिका व यूरोप ने अनेक पाक आतंकी को ग्लोबल टेररिस्ट घोषित कर रखा है, वे आज भी पाक में हैं। फ्रांस स्थित एफएटीएफ (फाइनेंशियल एक्शन टास्क फोर्स) ने टेरर फंडिंग को लेकर पाकिस्तान को कई बार ब्लैकलिस्ट किया है व ग्रे लिस्ट में डाला है। इसलिए दुनिया के सामने साफ है कि दुनिया में कौन देश आतंकवाद को पाल-पोस रहा है, कौन भारत के खिलाफ आतंकवाद कर रहा है? संयुक्त राष्ट्र ने देर से ही सही पर यथार्थ कहा है कि विश्व को पहलगाम जैसे आतंकवाद की सार्वजनिक रूप से निंदा करनी चाहिए और नागरिकों को निशाना बनाना अस्वीकार्य है। लेकिन बड़ा सवाल है कि संयुक्त राष्ट्र ने आतंकवाद के वैश्विक रूप को स्वीकार करने में ही बहुत देर की, यहां तक कि इसे परिभाषित तक नहीं कर सका है। संयुक्त राष्ट्र ने तब तक आतंकवाद को ग्लोबल खतरा नहीं माना जब तक कि अमेरिका में 9/11 नहीं हो गया व यूरोप अनेक बार लहूलुहान नहीं हो गया। संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंतोनियो गुतारेस ने कहा है कि 'भारत और पाकिस्तान के बीच की स्थिति पर 'बहुत बारीकी से और बहुत चिंता के साथ' नजर रख रहे हैं। इस तरह के बयान से साफ है कि आतंकवाद पर यूएन के रुख में अभी भी स्पष्टता नहीं है। वह पाकिस्तान की गतिविधियों को करीब से नहीं देख रहा है। असल में संयुक्त राष्ट्र अगर आतंकवाद के वैश्विक खतरे के प्रति सजग है, तो इस वैश्विक संस्था को चाहिए कि वह दहशतगर्द में लिप्त देश को आतंकवादी देश घोषित करे। इजराइल ने हमास के आतंकवाद को झेला और दुनिया ने देखा कि किस तरह से हमास के आतंकियों ने बेकसूर इजराइलियों की हत्या की, ठीक पहलगाम में आतंकी हमले की तरह। उस वक्त भी संयुक्त राष्ट्र ने एक वैश्विक संस्था के नाते आतंकवाद के खिलाफ एकजुट होकर लड़ने का सार्वजनिक आह्वान नहीं किया। इजराइल ईरान प्रायोजित आतंकवाद हमास, हिजबुल्ला और हूती के हमलों का सामना लंबे समय से कर रहा है। विश्व में इस्लामिक स्टेट, अलकायदा, अल शबाब, हमास, हूती, हिजबुल्ला, तालिबान, टीटीपी, हिज्बुल, लश्कर, जैश जैसे सैकड़ों आतंकी गुट हैं, जिनके बारे में व्यापक जानकारी संयुक्त राष्ट्र के सामने है, लेकिन इन टेरर गुटों के खात्मे के लिए यूएन की तरफ से कभी भी सामूहिक आह्वान देखने को नहीं मिला है। यह वक्त आंसू बहाने या सहानुभूति जताने का नहीं है, आतंकवाद व आतंकी गुटों के खिलाफ वैश्विक एक्शन का है। इसमें संयुक्त राष्ट्र को अगुवाई करना चाहिए। अमेरिका, यूरोप, चीन, रूस जैसे ताकतवर देशों को यूएन की छतरी के नीचे आतंकवाद के खात्मे के लिए एक मंच पर आना चाहिए। भारत आतंकवाद के खिलाफ मुश्तैदी से लड़ रहा है, पहलगाम हमले के गुनहगारों व साजिशकर्ताओं को नहीं बख्शेगा।

प्रतिक्रिया

अरविंद जयतिलक

सिंधु जल संधि पर भारत का कड़ा रुख

गौर करें तो 1960 के सिंधु जल समझौते के तहत भारत अपने हिस्से का पूरा पानी इस्तेमाल नहीं कर पा रहा है। भारत जब भी अपने हिस्से का जल इस्तेमाल करने की कोशिश करता है, पाकिस्तान रुकावट पैदा करने की कोशिश करता है। याद होगा वर्ष 2015 में पाकिस्तान ने भारत की किशनगंगा और पन बिजली परियोजनाओं को लेकर कड़ी आपत्ति जतायी थी और आपत्तियों को मध्यस्तता अदालत में ले जाने का प्रस्ताव किया था। अब भारत का स्पष्ट रुख है कि पाकिस्तान जब तक आतंकवाद को प्रश्रय देने से बाज नहीं आता है तब तक उसे भारत सिंधु जल समझौते के स्थगित होने का दर्द सहना पड़ेगा।

जम्मू-कश्मीर के पहलगाम हमले के तुरंत बाद भारत ने पाकिस्तान पर शिकंजा कसते हुए 1960 की सिंधु जल संधि को तुरंत प्रभाव से स्थगित कर दिया है। भारत का यह कड़ा रुख इसलिए भी आवश्यक था कि आतंकवाद को प्रश्रय देने के मामले में पाकिस्तान अपने रुख से बाज आने को तैयार नहीं है। वैसे भी गौर करें तो 1960 के सिंधु जल समझौते के तहत भारत अपने हिस्से का पूरा पानी इस्तेमाल नहीं कर पा रहा है। भारत जब भी अपने हिस्से का जल इस्तेमाल करने की कोशिश करता है, पाकिस्तान रुकावट पैदा करने की कोशिश करता है। याद होगा वर्ष 2015 में पाकिस्तान ने भारत की किशनगंगा और पन बिजली परियोजनाओं को लेकर कड़ी आपत्ति जतायी थी और आपत्तियों को मध्यस्तता अदालत में ले जाने का प्रस्ताव किया था। अब भारत का स्पष्ट रुख है कि पाकिस्तान जब तक आतंकवाद को प्रश्रय देने से बाज नहीं आता है तब तक उसे भारत सिंधु जल समझौते के स्थगित होने का दर्द सहना पड़ेगा।

उल्लेखनीय है कि सिंधु जल समझौते के मुताबिक सतलुज, ब्यास और रावी नदी का पानी भारत को मिला है जबकि चेनाव, झेलम और सिंधु नदी का पानी पाकिस्तान के हिस्से में है। इन नदियों के कुल 16.8 करोड़ एकड़-फुट पानी में से भारत को उसके लिए आवंटित तीनों नदियों से 3.3 करोड़ एकड़-फुट पानी मिलता है, जो कुल जल का 20 प्रतिशत है। भारत अपने हिस्से का करीब 93-94 प्रतिशत पानी उपयोग करता है और शेष पानी बहकर पाकिस्तान में चला जाता है। भारत अपने हिस्से के जल का इस्तेमाल करने के लिए पंजाब के शाहपुर कांडी बांध परियोजना, सतलुज-ब्यास की दूसरी लिंक परियोजना और जम्मू-कश्मीर में प्रस्तावित उज्ज बांध परियोजना को जल्द पूरा करने की कोशिश में है। अगर ये तीन परियोजनाएं पूरी हो जाती हैं तो भारत अपने हिस्से के जल का पूरा उपयोग करने लगेगा और पाकिस्तान को अतिरिक्त जल मिलना मुश्किल हो जाएगा। सिंधु दुनिया की सबसे बड़ी नदियों में से है और इसकी लंबाई तकरीबन 3000 किलोमीटर से भी अधिक है। पाकिस्तान ने सिंचाई एवं अन्य कार्यों में जल के उपयोग के लिए इस पर कई बांध बना रखे हैं जिससे बड़े पैमाने पर बिजली का उत्पादन होता है। पाकिस्तान की 2.6 करोड़ एकड़ कृषि भूमि की सिंचाई इन नदियों के जल पर ही निर्भर है। सिंधु जल संधि सद्भावना पर आधारित है। यह जल संधि आधुनिक विश्व के इतिहास का सबसे उदार जल बंटवारा संधि है और यह भारत के उदार रवैए के कारण ही संभव हुआ। जानना जरूरी है कि विश्व बैंक की मध्यस्थता से ही 19 सितंबर 1960 को भारत और पाकिस्तान के बीच सिंधु जल संधि को आकार दिया गया। सिंधु जल संधि समझने के लिए दो बातों पर विशेष ध्यान देना होगा। एक, यह कि सिंधु नदियों की व्यवस्था राजनीतिक विभाजन की दृष्टि से नहीं बनायी गयी थी। इसीलिए भौगोलिक दृष्टि से विभाजन के उपरांत पाकिस्तान को 18 मिलियन एकड़ भूमि सिंचाई योग्य मिली और भारत को 5 मिलियन एकड़ सिंचाई वाली भूमि उपलब्ध हुई। तब सिंधु नदी क्षेत्र में भारत की 20 मिलियन जनसंख्या रहती थी जबकि पाकिस्तान की इस प्रकार की आबादी 22 मिलियन थी। दूसरा, यह कि इस सिंधु नदी क्षेत्र में कुल

सात नदियां सम्मिलित थी जिसमें से सिंधु स्वयं पश्चिम में थी तथा काबुल एवं उसकी पांच सहायक नदियां-झेलम, चिनाब, रावी, सतलुज और व्यास पूर्व में स्थित थी। इनमें से काबुल को छोड़ सिंधु, झेलम और चिनाब मुख्य रूप से पाकिस्तान में बहती हैं तथा ये सिंधु क्षेत्र में लगभग 80 फीसद पानी को बहा ले जाती हैं। दूसरी ओर रावी व सतलुज मुख्य रूप से तथा ब्यास पूर्ण रूप से भारत में बहती हैं। संधि के मुताबिक भारत को इन छह नदियों का 80 फीसद जल पाकिस्तान को देना पड़ता है जबकि भारत के हिस्से में सिर्फ 19.48 फीसद पानी आता है। उल्लेखनीय है कि पंजाब के राजनीतिक विभाजन के कारण नहरी पानी विवाद सतह पर उभरा। यह विवाद 1 अप्रैल, 1948 को तब उभरा जब भारत के पंजाब प्रांत को सरकार ने पानी की रकम अदायगी न करने के कारण पाकिस्तान जाने वाला पानी रोक दिया। परंतु दोनों सरकारों ने इसे कानूनी मुद्दा न बनाते हुए द्विपक्षीय स्तर पर 4 मई, 1948 को हुए समझौते के अंतर्गत हल कर लिया। लेकिन कुछ समय बाद फिर विवाद उत्पन्न हो गया। पाकिस्तान ने आरोप लगाया कि भारत उसे पानी की उचित मात्रा नहीं दे रहा है। दूसरी ओर भारत ने आरोप लगाया कि पाकिस्तान अपने पंजाब प्रांत के विकास हेतु अपने साधनों के द्वारा वैकल्पिक स्त्रोत नहीं तलाश रहा है। यहां जानना जरूरी है कि ये नहरें आर्थिक दृष्टिकोण से उस समय बनायी गयी थी जब भारत के विभाजन का विचार किसी की सोच में नहीं था। लेकिन भारत विभाजन के उपरांत नहरों के पानी का असंतुलित विभाजन उभरकर सामने आ गया। ध्यान देना होगा कि पंजाब की पांचों नदियों में से सतलुज और रावी दोनों देशों के मध्य से बहती हैं। झेलम और चिनाब पाकिस्तान के मध्य से और व्यास पूर्णतया भारत में बहती है। किंतु भारत विभाजन के उपरांत भारत के नियंत्रण में वे तीनों मुख्यालय आ गए जिनसे दोनों देशों की नहरों को पानी की आपूर्ति की जाती थी। पाकिस्तान के पंजाब और सिंध प्रांत सिंचाई के लिए इन नहरों पर आश्रित हैं।

विभाजन के उपरांत पाकिस्तान के मन में आशंका उपजी कि भारत जब चाहे तब पानी बंद करके उसे भूखों मार सकता है। लिहाजा उसने विभाजन के बाद नहरी पानी को लेकर विवाद शुरू कर दिया। इसी संदर्भ में अमेरिका के एक विशिष्ट विशेषज्ञ डेविड लिलियेन्थल ने 1951 में भारत का दौरा करके बताया कि सिंधु नदी जल का 20 फीसद से भी कम भाग प्रयोग में लाया गया है तथा इस नदी के संग्रह क्षेत्र में से गुजरता हुआ छह नदियों का यह पानी बिना प्रयोग किए ही अरब सागर में गिर जाता है। लिहाजा उन्होंने दोनों देशों के बीच बढ़ते तनाव को देखते हुए दोनों देशों को सलाह दी कि वे इस समस्या को राजनीतिक स्तर से हटाकर तकनीकी एवं व्यापारिक स्तर पर सुलझाने का प्रयास करें। इसके लिए उसने विश्व बैंक से मदद लेने की सिफारिश की। इस संदर्भ में सितंबर 1951 में विश्व बैंक के अध्यक्ष यूजीन ब्लेक ने मध्यस्थता करना स्वीकार कर लिया लेकिन पाकिस्तान ने कुछ आपत्तियां जतायी। बावजूद इसके यूजीन ब्लेक और उसके बाद मिस्टर इल्कि के सहयोग से वर्षों तक बातचीत चलने के उपरांत 19 सितंबर, 1960 को भारत और पाकिस्तान के बीच जल के सवाल पर एक समझौता हो गया। इस समझौते को सिंधु जल संधि नाम दिया गया। इस समझौते पर भारत के प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरु और पाकिस्तानी राष्ट्रपति अयूब खान ने हस्ताक्षर किए। 12 जनवरी 1961 को इस संधि की शर्तें लागू कर दी गयी और इस प्रकार दोनों देशों के बीच विवाद का अंत हो गया। लेकिन इस योजना के अनुसार भारत को केवल इस क्षेत्र में बहने वाले पानी का कुल 20 फीसद ही प्राप्त हुआ जो इसकी सिंचाई योग्य 26 मिलियन एकड़ भूमि के लिए पर्याप्त नहीं है। इस समझौते से भारत को नुकसान हो रहा है।

(लेखक राजनीतिक समीक्षक हैं, ये उनके अपने विचार हैं।

लेख पर अपनी प्रतिक्रिया edit@haribhoomi.com पर दे सकते हैं।

जल समझौता

मुनीष भाटिया

सिंधु जल पर विराम, पाक प्रायोजित आतंक पर प्रहार

पहलगाम के आतंकवादी हमले में पाकिस्तान के हाथ होने के मद्देनजर भारत ने सिंधु जल समझौते को स्थगित करने का निर्णय लिया। यह हमला, जिसमें पाकिस्तान स्थित आतंकवादी संगठनों द्वारा भारतीय सुरक्षा बलों पर हमला किया गया था, भारत-पाकिस्तान संबंधों में तनाव को और बढ़ा दिया है। भारत ने पर्यटकों पर हमले को पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित आतंकवाद का एक और प्रयास माना और इसके परिणामस्वरूप, सिंधु जल समझौते के तहत पाकिस्तान को मिलने वाले जल संसाधनों पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता महसूस की। इस निर्णय से भारत ने पाकिस्तान को यह संदेश दिया कि आतंकवाद और हिंसा के माध्यम से शांति की कोई उम्मीद नहीं की जा सकती। भारतीय सरकार ने यह स्पष्ट किया कि यदि पाकिस्तान ने अपनी नीतियों में बदलाव नहीं किया और शांति की दिशा में ठोस कदम नहीं उठाए, तो भारत को अपने जल संसाधनों के उपयोग में बदलाव करने का पूरा अधिकार है। सिंधु जल संधि भारत और पाकिस्तान के बीच 1960 में हुई एक ऐतिहासिक जल बंटवारा संधि है, जिसे विश्व बैंक की मध्यस्थता में भारत के प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू और पाकिस्तान के राष्ट्रपति अयूब खान ने हस्ताक्षरित किया था। यह संधि सिन्धु नदी प्रणाली की छह नदियों सिन्धु, झेलम, चिनाब, रावी, व्यास और सतलुज के जल बंटवारे से संबंधित है। संधि के अनुसार, भारत को पूर्वी नदियों (रावी, व्यास, सतलज) के जल पर पूर्ण अधिकार मिला, जबकि पाकिस्तान को पश्चिमी नदियों (सिंधु, झेलम, चिनाब) का प्रमुख उपयोग करने का अधिकार दिया गया। सिंधु जल संधि के तहत, छह प्रमुख नदियों सिन्धु, झेलम, चिनाब, रावी, व्यास, और सतलुज के जल का बंटवारा किया गया।

संधि के अनुसार, भारत को पूर्वी नदियां (रावी, व्यास, और सतलुज) मिलीं, जो कुल जल का 62% हिस्सा हैं। इसके विपरीत, पाकिस्तान को पश्चिमी नदियाँ (सिंधु, झेलम, और चिनाब) मिलीं, जिनका कुल जल बंटवारा 38 फीसदी था। भारत को इन पश्चिमी नदियों के जल का सीमित उपयोग करने की अनुमति थी, विशेष रूप से पनबिजली परियोजनाओं और सिंचाई के लिए। यह बंटवारा दोनों देशों के बीच जल उपयोग के विवादों को शांतिपूर्ण तरीके से हल करने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम था, और यह संधि अब तक एक सफल और स्थायी जल समझौते के रूप में मानी जाती है। संधि में जल विवादों के समाधान के लिए एक स्थायी आयोग और अंतरराष्ट्रीय मध्यस्थता की व्यवस्था की गई है। सिंधु जल संधि का उल्लंघन द्विपक्षीय तनाव बढ़ा सकता है और राजनीतिक विवाद उत्पन्न कर सकता है। यदि कोई पक्ष संधि के नियमों का उल्लंघन करता है, तो दूसरे देश की जल आपूर्ति, कृषि और पनबिजली उत्पादन पर गंभीर असर पड़ सकता है, विशेषकर पाकिस्तान जैसे देश के लिए जो सिंधु नदी प्रणाली पर अत्यधिक निर्भर है। इससे अंतरराष्ट्रीय विवाद और आरोप-प्रत्यारोप बढ़ सकते हैं, और युद्ध जैसी स्थिति की धमकी तो पाकिस्तान दे ही रहा है। जब पाकिस्तान बार-बार आतंकवादी घटनाओं को अंजाम देता है, तब यह सवाल उठता है कि भारत क्यों सिंधु जल संधि जैसे समझौतों का पालन करता रहे। भारत का संयम उसकी परिपक्वता, लोकतांत्रिक मूल्यों और वैश्विक प्रतिष्ठा का प्रतीक है, लेकिन यह भी सच है कि पाकिस्तान को शांति की जिम्मेदारी समान रूप से निभानी होगी। भारत के पास सिंधु जल संधि के प्रावधानों की समीक्षा करने का विकल्प है, और वह पश्चिमी नदियों के जल का पूर्ण और वैध उपयोग कर सकता है, जिससे पाकिस्तान पर दबाव डाला जा सकता है। भारत की छवि केवल उसके शांतिपूर्ण रवैये से नहीं, बल्कि उसके संप्रभु हितों की रक्षा करने की क्षमता से बनती है। समय आ गया है कि भारत इस संधि की समीक्षा करते हुए यह सुनिश्चित करे कि शांति की जिम्मेदारी दोनों देशों पर समान रूप से हो, सिर्फ भारत पर नहीं। यदि भारत पश्चिमी नदियों का जल संचय करना चाहता है, तो उसे बड़े बांधों और जलाशयों का निर्माण करना होगा। इसके अलावा, पानी के वितरण के लिए नहर प्रणालियों और सुरंगों का नेटवर्क बनाना होगा। जल प्रबंधन के दौरान पर्यावरणीय प्रभावों का भी ध्यान रखना होगा। हालांकि, भारत के पास जल के लिए प्राकृतिक संसाधन हैं, लेकिन जल प्रबंधन की स्मार्ट प्रौद्योगिकियों और नदी प्रणालियों का संचालन आवश्यक होगा। इस प्रकार, भारत को जल का संतुलित और कुशल उपयोग करना होगा ताकि न केवल पानी का संचय किया जा सके, बल्कि भविष्य में जल संकट की स्थिति से भी बचाव हो सके।

(लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

संघर्ष से आती है जीवंतता

संकलित

दर्शन

साधना संसार में है, जंगल में तो साधना का सवाल ही नहीं है। साधना यहां है, जहां प्रतिपल कांटे हैं। कांटों के बीच जिस दिन तुम चलना सीख लो और कांटों के बीच तो चलो और कांटे चुभें न, बस उसी दिन समझ लेना कि अब तुम योग्य हो गए। जंगल जाने की जरूरत भी क्या है। यहीं भीड़ में जंगल हो गया है, अगर तुम्हारे भीतर प्रौढ़ता आ जाए, तो प्रज्ञा का जन्म हो। प्रज्ञा का जन्म संघर्षण से होता है। प्रतिपल जीवन की चुनौतियों को स्वीकार करने से होता है। हारने, गिरने, उठने से होता है। हजार बार गाली दी जाएगी, तुम क्रोधित हो जाओगे। हजार बार के अनुभव से तुम्हें समझ में आ जाएगा कि अपने को जलाना व्यर्थ है। गाली कोई दूसरा दे रहा है, दंड अपने को देना व्यर्थ है। एक दिन तो ऐसा आएगा कि कोई दूसरा गाली देगा और तुम्हारे भीतर क्रोध न आएगा। उसी दिन तुम्हारे भीतर एक कांटा फूल बन गया। उस दिन तुम्हें जो शांति मिलेगी, कोई जंगल नहीं दे सकता। जंगल की शांति मुर्दा है। अगर यहां गालियों के बीच तुम शांत हो गए, तो तुम्हारी शांति में एक जीवंतता होगी। जंगल की शांति में सन्नाटा है, क्योंकि वहां कोई है ही नहीं। वह नकारात्मक है। संसार में अगर तुम शांत हो जाओ तो सकारात्मक है। जंगल की शांति मरने जैसी है, संसार की शांति बड़ी जीवंत है। परमात्मा को पाना है, तो भागना मत। भगोड़ों से परमात्मा का कभी कोई संबंध नहीं जुड़ता। कायरों से संबंध जुड़ भी कैसे सकता है? चुनौती स्वीकार करने वाला साहस चाहिए। माना कि साहस में गिरना भी होता है, चोट भी खानी होती है, लेकिन वही एकमात्र मार्ग है।

महिला के शुभ कदम

संकलित

प्रेरणा

एक आदमी ने दुकानदार से पूछाः केले और सेवफल क्या भाव लगाऐ है? दुकानदारः केले 20 रु. दर्जन और सेव 100 रु. किलो। उसी समय एक गरीब सी औरत दुकान में आयी और बोली मुझे एक किलो सेव और एक दर्जन केले चाहिए, क्या भाव है? भैया दुकानदारः केले 5 रु दर्जन और सेब 25 रु किलो। औरत ने कहाः जल्दी से दे दीजिए। दुकान में पहले से मौजूद ग्राहक ने खा जाने वाली निगाहों से घूरकर दुकानदार को देखा, इससे पहले कि वो कुछ कहता, दुकानदार ने ग्राहक को इशारा करते हुए थोड़ा सा इंतजार करने को कहा। औरत खुशी खुशी खरीदारी करके दुकान से निकलते हुए बड़बड़ाई हे भगवान तेरा लाख लाख शुक्र है, मेरे बच्चे फलों को खाकर बहुत खुश होंगे। औरत के जाने के बाद, दुकानदार ने पहले से मौजूद ग्राहक की तरफ देखते हुए कहाः ईश्वर गवाह है, भाई साहब मैंने आपको कोई धोखा देने की कोशिश नहीं की। यह विधवा महिला है, जो चार अनाथ बच्चों की मां है। किसी से भी किसी तरह की मदद लेने को तैयार नहीं है। मैंने कई बार कोशिश की है और हर बार नाकामी मिली है। तब मुझे यही तरीकीब सूझी है कि जब कभी ये आए तो, मै उसे कम से कम दाम लगाकर चीज़े देदूँ। मैं यह चाहता हूँ कि उसका भरम बना रहे और उसे लगे कि वह किसी की मोहताज नहीं है। इस तरह भगवान के बन्दो की पूजा कर लेता हूँ। थोड़ा रूक कर दुकानदार बोलाः यह औरत हफ्ते में एक बार आती है। भगवान गवाह है, जिस दिन यह आ जाती है उस दिन मेरी बिक्री बढ़ जाती है और उस दिन परमात्मा मुझपर मेहरबान होजाता है।

अंतर्मन

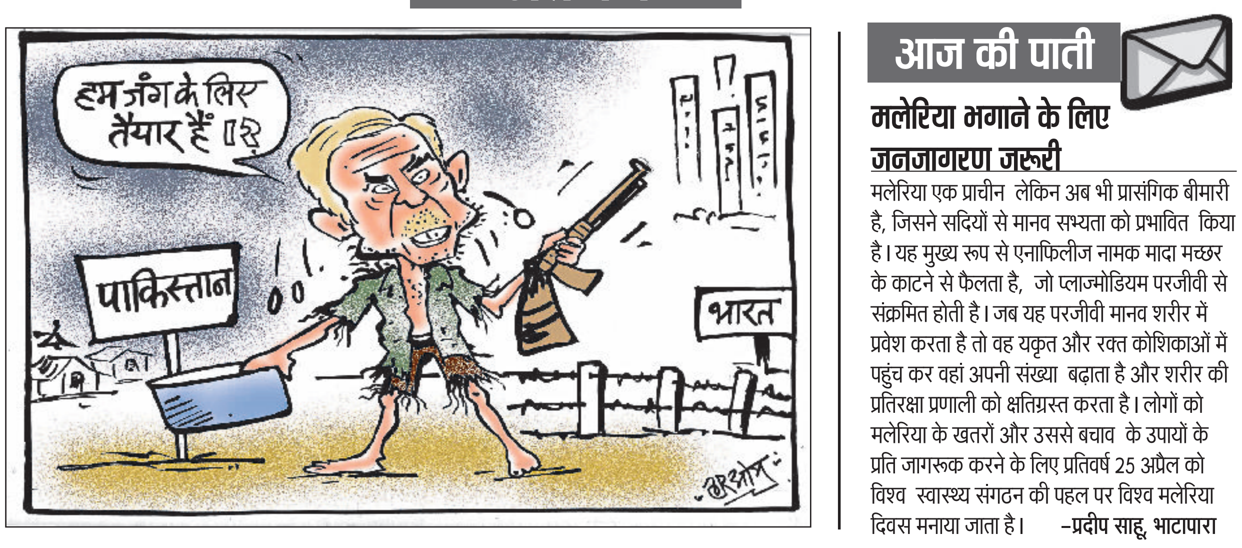

आज की पाती

मलेरिया भगाने के लिए जनजागरण जरूरी

मलेरिया एक प्राचीन लेकिन अब भी प्रासंगिक बीमारी है, जिसने सदियों से मानव सभ्यता को प्रभावित किया है। यह मुख्य रूप से एनाफिलीज नामक मादा मच्छर के काटने से फैलता है, जो प्लाज्मोडियम परजीवी से संक्रमित होती है। जब यह परजीवी मानव शरीर में प्रवेश करता है तो वह यकृत और रक्त कोशिकाओं में पहुंच कर वहां अपनी संख्या बढ़ाता है और शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को क्षतिग्रस्त करता है। लोगों को मलेरिया के खतरों और उससे बचाव के उपायों के प्रति जागरूक करने के लिए प्रतिवर्ष 25 अप्रैल को विश्व स्वास्थ्य संगठन की पहल पर विश्व मलेरिया दिवस मनाया जाता है। **–प्रदीप साहू, भाटापारा**

ट्रेंड

के. कस्तूरीरंगन को नमन

वैज्ञानिक व शिक्षाविद् डॉ. के. कस्तूरीरंगन जी के निधन से बहुत दुःख हुआ। बहुमुखी प्रतिभा के धनी कस्तूरीरंगन ने इसरो के प्रमुख के रूप में भारत के अंतरिक्ष मिशन को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया और शिक्षा, कानून और नीति निर्माण के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया।

-अमित शाह, केंद्रीय गृहमंत्री

छात्र-छात्राओं को बधाई

10वीं एवं 12वीं कक्षा की परीक्षाओं में मेरिट सूची में स्थान प्राप्त करने वाले सभी मेधावी छात्र-छात्राओं को हार्दिक बधाई! आप सभी ने अपने अथक परिश्रम, अनुशासन और दृढ निश्चय से यह सफलता प्राप्त की है।

-योगी आदित्यनाथ, सीएम, उप्र

सर्वदलीय बैठक

शर्मनाक लेकिन अपेक्षित, पहलगाम आतंकी हमले पर सर्वदलीय बैठक में शिवसेना (उबाठा) का एक भी सांसद नहीं आया। जब देश को सुरक्षा पर एक आवाज की जरूरत है, तो रोजाना माइक पर चिल्लाने वाले अचानक चुप हो जाते हैं।

- मिलिंद देवड़ा, सांसद, शिवसेना

हमलों से स्तब्ध

पहलगाम में निर्दोष लोगों पर हुए हमलों से स्तब्ध और बहुत दुखी हूँ। प्रभावित परिवार एक अकल्पनीय पीड़ा से गुज़र रहे होंगे - भारत और दुनिया इस अंधेरे समय में उनके साथ खड़ी है।

-सचिन तेंदुलकर, क्रिकेटर

करंट अफेयर

तुर्किये गैलीपोली दिवस में शामिल हुई राजकुमारी

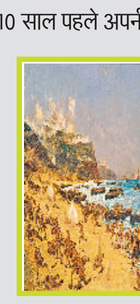

ब्रिटेन की राजकुमारी ऐन, न्यूजीलैंड के प्रधानमंत्री क्रिस्टोफर लक्सन और ऑस्ट्रेलिया की गवर्नर–जनरल सामंथा जॉय मोस्टिन ने 110 साल पहले अपनी जान गंवाने वाले ऑस्ट्रेलियाई और न्यूजीलैंड के सैनिकों को प्रथम विश्व युद्ध के युद्धक्षेत्रों के निकट तुर्किये के गैलीपोली प्रायद्वीप में श्रद्धांजलि दी। यह सभा एक समुद्र तट के निकट हुई, जहां ऑस्ट्रेलियाई और न्यूजीलैंड सेना कोर या 'एंजैक' के कर्मी 25 अप्रैल, 1915 को भोर में पहली बार गैलीपोली में उतरे थे। न्यूजीलैंड के प्रधानमंत्री लक्सन ने युद्ध की मानवीय कीमत और भविष्य में संघर्ष को रोकने के महत्व पर बात की। लक्सन ने कहा, ''एंजैक सैनिक आधी दुनिया पार करके अपने भाइयों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर यहां तट पर आए थे। कुछ घर से दूर रोमांच की उम्मीद में आए थे लेकिन उन्हें रोमांच नहीं बल्कि खौफ का सामना करना पड़ा।'' उन्होंने कहा, ''अगर हम इस अभियान का असली सबक भूल जाते हैं, तो यह उन लोगों के प्रति अन्याय होगा जिनकी वीरता को हम याद करते हैं। हमें यह सुनिश्चित करने के लिए हर संभव कोशिश करनी चाहिए कि ऐसा कुछ फिर से न हो।'' यह अभियान ओटोमन साम्राज्य को परास्त करने के ब्रिटिश नेतृत्व वाले प्रयास का हिस्सा था, जो अंततः विफल हो गया था।

ऑफ बीट

वायु प्रदूषण कीड़ों के लिए भी जीवन कठिन बना रहा

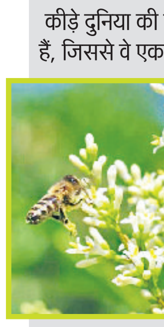

कीड़े दुनिया की तीन–चौथाई फसल किस्मों को परागित करने में मदद करते हैं, जिससे वे एक कीमती संसाधन बन जाते हैं। लेकिन, हम कीड़ों का जीवन कठिन बना रहे हैं क्योंकि वे जलवायु परिवर्तन, बसावट के अवसरों में कमी और कीटनाशकों के उपयोग के खिलाफ लड़ाई का सामना कर रहे हैं, जिससे दुनिया भर में कीड़ों की आबादी में तेजी से गिरावट आ रही है। अब, हम वायु प्रदूषण के खतरों को भी इस सूची में जोड़ सकते हैं। जब कीड़े दो सामान्य वायु प्रदूषकों के संपर्क में आए, तो परागण करने वाले कीड़ों का फूलों पर आना 90 प्रतिशत तक कम हो गया। जहां हमने ओजोन या डीजल से निकले धुएं को छोड़ा, परागण करने वाले कीड़ों की संख्या में 70 प्रतिशत की कमी आई और समग्र परागण सफलता दर में 31 प्रतिशत तक की कमी आई। कई कीड़े अपनी गंध क्षमता के जरिये फूलों का पता लगाते हैं। जब वे पराग का सेवन करते हैं, तो वे तुरंत फूल की सुगंध को उसके शर्करा प्रतिफल के साथ जोड़ देते हैं। नतीजतन, जब उन्हें बाद में वही खुशबू मिलती है, तो वे किसी अन्य स्वादिष्ट व्यंजन की तलाश में उसे खोजना शुरू कर देते हैं। इस प्रकार, फूल दोहरे उद्देश्य की पूर्ति करते हैं।

गोली मारकर कार सवार को लूटने का प्रयास करने वाले 2 बदमाश गिरफ्तार

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा अलवर

अलवर सदर थाना पुलिस ने फरवरी माह में अलवर-भिवाड़ी मेगा हाइवे स्थित पापड़ी टोल टैक्स के समीप कार सवार चेतन यादव पर फायरिंग कर लूट का प्रयास करने वाले दो बदमाशों को गिरफ्तार किया है। इस वारदात में चौकाने वाली बात यह सामने आई कि बदमाशों ने जिस कार में फायरिंग की, उसी कार में रेवाड़ी के गौरव यादव का अपहरण कर उसे बंधक बना रखा था। थानाधिकारी रमेश सैनी के मुताबिक, 23 फरवरी को बदमाशों ने रेवाड़ी रेलवे स्टेशन के पास हथियार के बल पर गौरव यादव का अपहरण किया और उसे कार में बंधक बना लिया। बाद में उन्होंने गौरव के एटीएम से पैसे निकालने के बाद उसे अलवर ले आए। 24 फरवरी को बदमाशों ने कोटकासिम में फायरिंग कर दहशत फैलाई और 25 फरवरी को महुआ क्षेत्र में लूट का प्रयास किया, जिसमें एक व्यक्ति घायल हुआ। 26 फरवरी को बदमाशों ने पापड़ी टोल टैक्स के पास कार सवार चेतन यादव को लूटने की कोशिश की और उस पर फायरिंग की। गोली चेतन के दाहिने हाथ में लगी, लेकिन वह गाड़ी स्टार्ट कर मौके से भाग निकला। बदमाशों ने गौरव को छोड़कर लूटपाट की और उसे रेवाड़ी छोड़ दिया। इस दौरान उन्होंने गौरव की अंगूठी, चेन और एटीएम भी लूट लिया था। पुलिस ने दो आरोपियों अंकित उर्फ महेंद्रगढ़िया और अरजी उर्फ हरजी को गिरफ्तार किया है। अंकित, जो गिरोह का सरगना था, विभिन्न जगहों पर किराए के कमरे में रहता था और वारदात के बाद स्थान बदल लेता था। पुलिस अब अन्य आरोपी अंशू जांगिड़ की तलाश में है। आरोपियों की शिनाख्त परेड जल्द कराई जाएगी।

घरेलू गैस सिलेंडर से भरे ट्रक को पीछे से मारी टक्कर

ट्रक का बिगड़ा संतुलन, ट्रक चढ़ा डिवाईडर पर, बड़ा हादसा होने से टला

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा कोटपूतली

दिल्ली-जयपुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर शुक्रवार को गोरधनपुरा चौकी और कंवरपुरा के बीच एक बड़ा हादसा होते-होते टल गया। घरेलू गैस सिलेंडर से भरे एक ट्रक को तेज रफ्तार से आ रहे दूसरे ट्रक ने पीछे से टक्कर मार दी। जयपुर से कोटपूतली की ओर आ रहा ट्रक जैसे ही चौकी से लगभग 500 मीटर की दूरी पर पहुंचा, एक अन्य ट्रक ने जोरदार टक्कर मारी। इस टक्कर के कारण गैस सिलेंडर से भरे ट्रक का संतुलन बिगड़ गया और वह डिवाईडर पर चढ़ गया। गनीमत रही कि ट्रक पलटा नहीं और कोई विस्फोट नहीं हुआ, जिससे एक बड़ा हादसा टल गया। घटना के बाद तुरंत कोटपूतली थाना पुलिस मौके पर पहुंची और स्थिति को नियंत्रण में लिया। पुलिस ने ट्रकों को हटवाकर यातायात को सामान्य किया और मामले की जांच शुरू कर दी है।

विश्व मलेरिया दिवस मनाया, बीसीएमओ ने आमजन को किया जागरूक

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा कोटपूतली

ब्लॉक कोटपूतली में शुक्रवार 25 अप्रैल को बीसीएमओ डॉ. पूरण चन्द गुर्जर के नेतृत्व में विश्व मलेरिया दिवस मनाया गया। इस अवसर पर बीसीएमओ डॉ. गुर्जर ने मलेरिया के प्रति जागरूकता फैलाने का आह्वान किया और कहा कि मलेरिया एक गंभीर बीमारी है, जिसका समय पर उपचार आवश्यक है। यह दिन मलेरिया की पहचान, रोकथाम और उपचार के महत्व को रेखांकित करता है। मलेरिया एक मच्छर जनित रोग है, जो प्लासमोडियम नामक परजीवी से फैलता है। यह परजीवी संक्रमित मादा एनोफिलीज मच्छर के काटने से शरीर में प्रवेश करता है और लीवर तथा रक्त कोशिकाओं को प्रभावित करता है। मलेरिया से बचाव के लिए मच्छरदानी का उपयोग, मच्छर भगाने वाली क्रीम का प्रयोग और स्वच्छता बनाए रखना जरूरी है। डॉ. गुर्जर ने कहा कि मलेरिया की रोकथाम के लिए भारत सरकार ने नेशनल वेक्टर बॉर्न डिजीज कंट्रोल प्रोग्राम की शुरुआत की है, जिसका उद्देश्य मलेरिया और डेंगू जैसी बीमारियों पर नियंत्रण पाना है। सरकार मलेरिया के इलाज और मच्छर नियंत्रण के लिए निशुल्क जांच और दवाओं की सुविधा उपलब्ध करवा रही है। उन्होंने बताया कि मलेरिया के लक्षणों में तेज बुखार, सिर दर्द, कंपकंपी, शरीर में दर्द, मिचली और उल्टी शामिल हैं। ऐसे लक्षण दिखने पर तुरंत स्वास्थ्य केंद्र में जाकर जांच और इलाज करवाना चाहिए। इसके अलावा, डॉ. गुर्जर ने सुझाव दिया कि लोग अपने घरों में पानी जमा न होने दें, गमलों में पानी सुखा दें, और पुराने टायरों को हटा दें ताकि मच्छरों के प्रजनन स्थान को समाप्त किया जा सके। उन्होंने लोगों से मच्छरों से बचने के उपायों को अपनाने और मलेरिया की रोकथाम में सहयोग देने की अपील की।

मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा से पूर्व निकाली कलश यात्रा

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा कोटपूतली

निकटवर्ती ग्राम नारेहड़ा के गौशाला रोड़ स्थित जोहड़ वाला मोहल्ले में माँ काली और भैरूजी की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा समारोह आयोजित किया गया। इस धार्मिक अनुष्ठान से पूर्व महिलाओं ने मंगल कलश लेकर गाजे-बाजे के साथ गांव के मुख्य मार्गों से यात्रा शुरू की और मंदिर तक पहुंची। पं. विकास जोशी और सुनील जोशी ने विधिपूर्वक कलश और गणेश पूजन करवाया। इसके बाद मूर्तियों को नगर भ्रमण कराया गया। मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा की प्रक्रिया विधि विधान और हवन पूजा के साथ सम्पन्न हुई। समारोह के दौरान पंगत प्रसादी और भजन कीर्तन का भी आयोजन किया गया, जिससे वातावरण भक्ति भाव से सराबोर हो गया। इस अवसर पर युवराज, राजू महाराज, विनोद, रोहिताश, सुरेश, हनुमान, उदय सिंह, सुनीता सहित कई ग्रामीण मौजूद रहे।

युवक का अपहरण कर की मारपीट

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा बानसूर

कस्बे में दिनदहाड़े दर्जन भर बदमाशों ने एक युवक का अपहरण कर मारपीट करने का मामला सामने आया है। घटना के बाद पुलिस थाने में मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी गई है। जानकारी के अनुसार, हरसौरा थाना क्षेत्र के गांव नरूका बसई निवासी हेम सिंह गुर्जर को गुरुवार शाम को कस्बे के अलवर बाईपास पर तीन गाड़ियों में सवार होकर आए बदमाशों ने गाड़ी में जबरन डालकर अपहरण कर लिया। आरोपियों ने हेम सिंह को एक गाड़ी से दूसरी गाड़ी में डालते हुए नीमराणा तक ले गए। वहां उन्होंने युवक के साथ बेरहमी से मारपीट की, जिससे उसके शरीर पर चोट के निशान पाए गए। युवक ने बताया कि अपहरणकर्ताओं ने उससे फिरौती की मांग की और उसकी जेब से 50 हजार रुपये निकाल लिए। बदमाशों ने एक लाख रुपये की फिरौती की मांग करते हुए युवक के पिता से संपर्क किया और उसे जान से मारने की धमकी दी। पीड़ित के पिता ने पुलिस कंट्रोल रूम में इस बारे में सूचना दी। अंततः, बदमाशों की एक कार खराब हो गई, जिसके बाद उन्होंने युवक को छोड़ दिया। पुलिस ने कार को कब्जे में ले लिया है और मामले की जांच जारी है।

खाद्य सुरक्षा अधिकारियों की टीम ने मिलावटी दूध बनाने पर की कार्यवाही

1100 लीटर दूध, 65 किलो मिल्क पाउडर, 40 किलो वनस्पति व 10 किलो सिंथेटिक पेस्ट को करवाया नष्ट

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा कोटपूतली

खाद्य सुरक्षा अधिकारियों की एक टीम ने ग्राम नांगड़ीवास में मिलावटी दूध बनाने की सूचना पर छापेमारी की और कड़ी कार्यवाही की। इस कार्रवाई में 1100 लीटर दूध, 65 किलो मिल्क पाउडर, 40 किलो वनस्पति और 10 किलो सिंथेटिक पेस्ट नष्ट करवाया गया। टीम ने सैम्पल लेकर जयपुर प्रयोगशाला में भेजे हैं और जांच रिपोर्ट आने पर एफएसएसए एक्ट के तहत सख्त कार्रवाई की जाएगी। खाद्य सुरक्षा अधिकारी नेहा शर्मा के अनुसार, नांगड़ीवास स्थित वासुदेव डेयरी में मिलावटी सामग्री पाई गई। डेयरी प्लांट के मालिक अनिल गुर्जर ने स्वीकार किया कि वह स्वयं इस प्लांट के मालिक हैं। निरीक्षण के दौरान प्लांट में 40 किलो मिल्क पाउडर, 25 किलो वनस्पति, 10 किलो पेस्ट, 15 मिक्सी और गैस के सिलेंडर मिले, जिनका इस्तेमाल मिलावटी दूध बनाने में किया जा रहा था। इसके अतिरिक्त, काव्या दूध डेयरी का भी निरीक्षण किया गया, जहां 20 किलो मिल्क पाउडर और 15 किलो वनस्पति बरामद हुई। इससे करीब 100 लीटर मिलावटी दूध तैयार किया जा रहा था। दोनों डेयरियों से सैंपल लेकर जांच के लिए भेजे गए हैं। सीएमएचओ डॉ. आशीष सिंह शेखावत ने बताया कि मिलावटी दूध में जहरीले रसायन जैसे डिटरजेंट, सिंथेटिक पाउडर और वनस्पति तेल मिलाए जाते हैं, जो स्वास्थ्य के लिए अत्यधिक हानिकारक हैं। इससे लीवर, किडनी फेलियर, पेट की बीमारियां और कैंसर जैसे गंभीर रोग हो सकते हैं। उन्होंने आमजन से अपील की है कि ऐसे मामलों की सूचना तुरंत विभाग को दें। स्वास्थ्य विभाग की टीम ने भी संकेत दिए हैं कि इस नेटवर्क से जुड़ी और कड़ियाँ सामने आ सकती हैं, और भविष्य में इस मामले में और खुलासे हो सकते हैं। अब यह समय है कि ऐसे मिलावट करने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाए और कड़ी सजा दी जाए।

अलवर में मई माह में आयोजित होगी 'सांसद संपर्क संवाद यात्रा'

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा अलवर

अलवर संसदीय क्षेत्र की ग्राम पंचायतों में मई महीने में 'सांसद संपर्क संवाद यात्रा' कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। इस यात्रा का नेतृत्व केंद्रीय पर्यावरण एवं वन मंत्री और अलवर सांसद भूपेंद्र यादव करेंगे। यह कार्यक्रम 3, 4, 9 और 10 मई को विभिन्न ग्राम पंचायतों में आयोजित होगा, जिसमें वे आमजन से सीधा संवाद करेंगे और उनकी समस्याएं सुनकर समाधान की दिशा में कार्य करेंगे। यात्रा के दौरान सांसद भूपेंद्र यादव आमजन को केंद्र और राज्य सरकार की ओर से संचालित योजनाओं, बजट घोषणाओं और मुख्यमंत्री द्वारा की गई घोषणाओं की जानकारी देंगे। साथ ही ग्रामीणों की शिकायतों और स्थानीय मुद्दों पर भी संवाद करते हुए उन्हें निस्तारित करने की पहल की जाएगी। जिला कलक्टर डॉ. आर्तिका शुक्ला ने बताया कि 3 मई को रामगढ़ विधानसभा क्षेत्र के ग्राम पंचायत चिडवई, ईदपुर, मालपुर, निजाम नगर व तिलवाड़ के लिए कार्यक्रम मालपुर में होगा, जबकि सैंथली, ललावंडी, मूनपुर व खानपुर कलां के लिए कार्यक्रम ललावंडी ग्राम पंचायत में आयोजित होगा। 4 मई को बहरोड़ विधानसभा क्षेत्र में सांसद यात्रा उंटोली, खोहरी, कोहराना व महाराजावास के लिए ग्राम पंचायत उंटोली में तथा बिचपुरी, दोसोद, माजरी कलां व रोडवाल के लिए ग्राम पंचायत बिचपुरी में आयोजित की जाएगी। इसके बाद 9 मई को राजगढ़-लक्ष्मणगढ़ विधानसभा के तहत बिलेटा, छिलोड़ी, राजपुरा छोटा के लिए कार्यक्रम ग्राम पंचायत छिलोड़ी (नवलपुरा, मोरादकलां) में और बैरेर, कानेटी व पिनान के लिए ग्राम पंचायत पिनान में होगा। अंतिम चरण में 10 मई को किशनगढ़बास विधानसभा क्षेत्र में सांसद यात्रा का आयोजन बघाना, बिलाहेड़ी, कान्हड़का व जकोपुर के लिए ग्राम पंचायत बिलाहेड़ी में तथा बघेरी कलां, माछरोली, मीरका व खेड़ा के लिए ग्राम पंचायत माछरोली में होगा। इस संवाद यात्रा के जरिए सांसद ग्रामीण अंचल में सीधे पहुंच बनाकर जनसमस्याओं की जानकारी लेंगे और योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन की समीक्षा करेंगे। इससे शासन और जनता के बीच संवाद को मजबूती मिलेगी और ग्रामीण विकास कार्यों को गति मिल सकेगी।

अधिकारी अपने दायित्वों का जिम्मेदारी से निर्वहन करते हुये बजट घोषणाओं का क्रियान्वयन समयबद्ध करें: जिला कलक्टर

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा कोटपूतली

जिला कलेक्ट्रेट सभागार में शुक्रवार को जिला कलक्टर कल्पना अग्रवाल की अध्यक्षता में राजस्व अधिकारियों की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में बजट घोषणाओं की क्रियान्विति, राजस्व से संबंधित कार्यों, तथा विभिन्न प्रशासनिक मुद्दों पर गहन चर्चा की गई। जिला कलक्टर ने अधिकारियों से अपेक्षाएँ जताते हुए सभी कार्यों को समयबद्ध और पारदर्शी तरीके से निपटाने के निर्देश दिए। जिला कलक्टर ने कहा कि सभी अधिकारी बजट घोषणाओं के क्रियान्वयन में तेजी लाते हुए विभागीय समन्वय के माध्यम से भूमि आवंटन, डीपीआर और टेंडर प्रक्रिया को शीघ्र पूरा करें, ताकि विकास कार्यों का लाभ आमजन को समय पर मिल सके। साथ ही, समस्त राजकीय कार्यों की पत्रावली ई-फाईल के माध्यम से की जाए और संपर्क पोर्टल पर प्रकरणों का समयबद्ध और गुणवत्तापूर्वक निस्तारण किया जाए। ई-फाईल और संपर्क पोर्टल के माध्यम से कार्यों के निस्तारण पर जोर देते हुए जिला कलक्टर ने निर्देश दिया कि अधिकारी ऑफलाइन पत्रावली का उपयोग न करें और पत्राचार को शीघ्र निपटाने के लिए एवरेज डिस्पोजल टाइम में सुधार लाए। उन्होंने अधिकारियों को रात्रि चौपाल और जनसुनवाई के दौरान आमजन के मुद्दों के त्वरित समाधान के निर्देश दिए। गर्मी के मौसम में निर्बाध पेयजल आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए अधिकारियों को निर्देशित करते हुए, जिला कलक्टर ने भामाशाहों से सहयोग लेकर बेजुबान पशु-पक्षियों के लिए परिंडे लगाने और खेलियों में पानी की आपूर्ति सुनिश्चित करने की बात कही। इसके अलावा, म्यूटेशन मामलों में सख्ती दिखाते हुए ऑटो फॉरवर्ड प्रकरणों की पुनः जांच करने और पटवारियों को अनुशासनात्मक कार्यवाही के तहत पाबंद करने की बात कही, ताकि आमजन को किसी भी प्रकार की परेशानी का सामना न करना पड़े। उन्होंने कहा कि अधिकारियों को आई-गोट मिशन कर्मयोगी के तहत स्वयं और अपने अधीनस्थों को महत्वपूर्ण कोर्स का अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया जाए, ताकि उनके कौशल का विकास हो सके। साथ ही, रास्ता खोलो अभियान के तहत दस्तावेजीकरण का कार्य पूरा करने की बात भी उन्होंने की। बैठक में अन्य मुद्दों पर भी चर्चा की गई, जिसमें भूमि अवाप्ति, गैर खातेदारी प्रकरण, अवैध खनन की मॉनिटरिंग, राजस्व वसूली, और न्यायालयों में लंबित प्रकरणों की समीक्षा की गई। जिला कलक्टर ने सभी तहसीलदारों को निर्देशित किया कि वे एलआर सेक्शन के साथ समन्वय कर लंबित प्रकरणों का निस्तारण करें और पोर्टल पर जानकारी अपडेट करें। बैठक में एसडीएम कोटपूतली बृजेश कुमार, नीमराना महेंद्र सिंह, विराटनगर अमिता मान, बानसूर अनुराग हरित, बहरोड़ रामकिशोर मीणा, और पावटा एसडीएम कपिल कुमार सहित संबंधित तहसीलदार उपस्थित रहे।

केंद्रीय मंत्री भूपेन्द्र यादव 27 अप्रैल को अलवर में लेंगे विभिन्न कार्यक्रमों में भाग

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा अलवर

केंद्रीय पर्यावरण एवं वन मंत्री तथा अलवर सांसद भूपेन्द्र यादव 27 अप्रैल को अपने संसदीय क्षेत्र अलवर में विभिन्न सार्वजनिक कार्यक्रमों में भाग लेंगे। उनका यह दौरा क्षेत्रवासियों के साथ संवाद, विकास कार्यों के लोकार्पण और सांस्कृतिक सरोकारों से जुड़ा हुआ रहेगा। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार भूपेन्द्र यादव सुबह 11 बजे अलवर शहर में आयोजित 'मन की बात' कार्यक्रम में हिस्सा लेंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा प्रसारित मासिक रेडियो कार्यक्रम को लेकर स्थानीय स्तर पर आयोजित इस आयोजन में आमजन के साथ संवाद स्थापित किया जाएगा। इसके बाद दोपहर 12 बजे वे नगंली सर्किल स्थित स्वामी विवेकानंद स्मारक पर पहुंचेंगे, जहां विवेकानंद ई-लाइब्रेरी का उद्घाटन करेंगे। यह पुस्तकालय युवाओं के लिए अध्ययन और शोध का एक नया माध्यम साबित होगा। इसके पश्चात दोपहर 12.45 बजे प्रताप ऑडिटोरियम में आयोजित नागरिक अभिनंदन एवं डिजिटल पुस्तकालयों के वर्चुअल लोकार्पण समारोह में केंद्रीय मंत्री शिरकत करेंगे। इस अवसर पर क्षेत्र में विभिन्न स्थानों पर स्थापित डिजिटल लाइब्रेरी परियोजनाओं का वर्चुअल माध्यम से लोकार्पण किया जाएगा

सैन महाराज की 725 वीं जयंती समारोह का आयोजन

महिलाओं ने निकाली विशाल कलश यात्रा, उत्कृष्ठ कार्य करने वालों एवं वृध्दजनों का किया सम्मान

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा कोटपूतली

कस्बे के पूतली कट स्थित श्री सैन मंदिर में शुक्रवार को संत शिरोमणि श्री सैन महाराज की 725 वीं जयंती समारोह धूमधाम से मनाई गई। इस आयोजन का आयोजन श्री सैन मंदिर विकास प्रबंधक एवं समाज उत्थान समिति द्वारा किया गया। कार्यक्रम में 251 महिलाओं द्वारा कस्बे के भगवान श्री परशुराम मंदिर से श्री सैन मंदिर तक विशाल कलश यात्रा निकाली गई, जो देखने लायक थी। समारोह में वरिष्ठ भाजपा नेता शंकर लाल कसाना, उप प्रधान प्रतिनिधि एड. राजेन्द्र रहीसा, श्री नारायणी सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष सुनील गहलोत, क्रय-विक्रय सहकारी समिति के अध्यक्ष हंसराज कसाना, यादव समाज के अध्यक्ष गिरधारी लाल गुरूजी, जिला अभिभाषक संघ के सदस्य एड. उदय सिंह तंवर, एड. शिवकुमार शर्मा सहित अन्य प्रमुख हस्तियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का मंच संचालन एड. विकास जांगल ने किया। इस मौके पर वक्ताओं ने शिक्षा के महत्व को उजागर करते हुए सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करने का आह्वान किया। साथ ही, सैन महाराज की जीवनगाथा पर भी विस्तार से चर्चा की। अतिथियों ने उत्कृष्ठ कार्य करने वाले व्यक्तियों और वृद्धजनों का सम्मान किया। कार्यक्रम के अंत में हनुमान एण्ड पार्टी द्वारा सैन महाराज के भजनों की प्रस्तुति दी गई। अतिथियों का माला, साफा पहनाकर और प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। इसके साथ ही, सैन महाराज की पूजा अर्चना की गई और भामाशाहों का सम्मान भी किया गया। कार्यक्रम में समाज उत्थान पर विचार-विमर्श करते हुए आय-व्यय का प्रतिवेदन भी प्रस्तुत किया गया। इस दौरान नेतराम सैन, रामकिशन सैन, वेदप्रकाश सैन, नानक चंद कोटपूतली, राधेश्याम सैन, पूर्व प्रधान छीतरमल सैन समेत बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।

भीटेडा अस्पताल को ट्रस्ट की सौगात, मरीजों के लिए एसी की सुविधा

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा बहरोड़

भीटेडा गांव स्थित राजकीय प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में मरीजों को गर्मी से राहत देने के लिए संतोष देवी चैरिटेबल ट्रस्ट, जखराना द्वारा अस्पताल वार्ड में एसी भेंट किया गया। ट्रस्ट के इस सहयोग से मरीजों और अस्पताल स्टाफ को भीषण गर्मी में बड़ी राहत मिलेगी। इस अवसर पर ट्रस्ट सचिव डॉ. शानू यादव ने कहा कि आमजन की स्वास्थ्य सुविधाओं को बेहतर बनाने के लिए वह निरंतर प्रयासरत हैं। भीटेडा अस्पताल में गर्मी के कारण मरीजों को काफी परेशानी हो रही थी, जिसको देखते हुए ट्रस्ट द्वारा वार्ड में एसी लगवाया गया है। उन्होंने बताया कि संतोष देवी चैरिटेबल ट्रस्ट लगातार शिक्षा, स्वास्थ्य और पर्यावरण के क्षेत्र में कार्य कर रहा है और समाजहित में ऐसे कार्य आगे भी जारी रहेंगे। डॉ. यादव ने यह भी कहा कि चिकित्सा क्षेत्र में सुधार की दिशा में यह सिर्फ एक शुरुआत है। ग्रामीण इलाकों में स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत करना उनकी प्राथमिकता है और इस दिशा में ट्रस्ट की ओर से आगे भी ठोस कदम उठाए जाएंगे। इस मौके पर गांव के गणमान्य लोग भी मौजूद रहे। कार्यक्रम में राजवीर सिंह, सुनील यादव (नर्सिंग ऑफिसर), सुलोचना यादव, ममता यादव, दिलीप यादव, राजेंद्र यादव, बनवारी, रतन यादव, राजवीर (उप सरपंच), दयाराम (पंच), रामसिंह (पंच), रणवीर मास्टर जी सहित कई ग्रामीण और अस्पताल स्टाफ के सदस्य उपस्थित रहे। गांव के लोगों ने ट्रस्ट के इस योगदान की सराहना की और उम्मीद जताई कि ऐसे जनकल्याणकारी कार्यों से ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूती मिलेगी।

मौजपुर को नगर पालिका से हटाए जाने पर अनिश्चितकालीन धरना शुरू

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा लक्ष्मणगढ़

हाल ही में हुए नगर पालिका परिसीमन के तहत मौजपुर गांव को लक्ष्मणगढ़ नगर पालिका क्षेत्र से बाहर कर दिया गया है, जिसके विरोध में गांववासियों ने शुक्रवार से अनिश्चितकालीन धरना प्रदर्शन शुरू कर दिया है। इससे पहले गांव में आमसभा आयोजित कर विरोध दर्ज कराया गया था और प्रशासन को ज्ञापन भी सौंपा गया था। धरने में शामिल संघर्ष समिति के सदस्य रघुवर दयाल सैनी ने बताया कि मौजपुर पिछले चार वर्षों से नगर पालिका लक्ष्मणगढ़ के अंतर्गत आता था, जिससे यहां की बुनियादी सुविधाओं में सुधार आया था। उन्होंने आरोप लगाया कि कुछ राजनैतिक स्वार्थों के चलते गांव को नगर पालिका से बाहर कर दिया गया है। इससे गांव में सफाई, पानी, सड़क और रोशनी जैसी सभी व्यवस्थाएं चरमरा गई हैं। उन्होंने कहा कि मौजपुर के भविष्य के लिए उसका नगर पालिका क्षेत्र में बने रहना अत्यंत आवश्यक है। ग्रामवासियों ने इस मुद्दे को लेकर कोर्ट में याचिका भी दाखिल की है, परंतु जब तक न्याय नहीं मिलता, तब तक गांववाले शांत नहीं बैठेंगे। ग्रामीणों की मांग है कि सरकार तुरंत हस्तक्षेप कर मौजपुर को पुनः लक्ष्मणगढ़ नगर पालिका में शामिल करे, ताकि विकास कार्यों में किसी प्रकार की बाधा न आए। धरने में बागसिंह, हारुण खान, सोनू वर्मा, नूरुद्दीन खान, अली खान, सतीश वर्मा, नानक, सोमू वर्मा, बनवारी वर्मा, मोहित जैन, मांगीलाल सैनी, तरुण कटारा, अमित कटारा, विश्वास शर्मा, मुकेश योगी, प्रियांशु भारद्वाज सहित दर्जनों ग्रामीण शामिल रहे। सभी का कहना है कि जब तक मांगें नहीं मानी जाती, तब तक धरना जारी रहेगा। गांव के लोगों का मानना है कि विकास के लिए शहरी निकाय से जुड़ा रहना जरूरी है, और अब जब चार साल बाद कुछ व्यवस्थाएं पटरी पर आने लगी थीं, तब इस तरह हटाया जाना न्यायसंगत नहीं है। अब आंदोलन की कमान ग्रामीणों ने अपने हाथ में ले ली है और चेतावनी दी है कि यदि सरकार ने शीघ्र सुनवाई नहीं की, तो आंदोलन को और व्यापक रूप दिया जाएगा। धरना स्थल पर ग्रामीणों की भारी भीड़ और गुस्सा देखने को मिला। प्रदर्शनकारियों ने शांतिपूर्ण लेकिन ठोस तरीके से अपनी मांगें दोहराईं और कहा कि वे अपने अधिकारों के लिए अंत तक लड़ाई लड़ेंगे।

‘मैं देशद्रोही नहीं, देशभक्त हूं...’ पाकिस्तान के नदीम को न्योता देने पर भाला फेंक खिलाड़ी नीरज झेल रहे नफरत और अपमान

एजेंसी ⏭ नई दिल्ली

भारत के भालाफेंक चैंपियन नीरज चोपड़ा ने शुक्रवार को कहा कि पाकिस्तान के भालाफेंक खिलाड़ी अरशद नदीम को बेंगलुरु में अगले महीने होने वाले नीरज चोपड़ा क्लासिक में भाग लेने का न्योता देने पर उन्हें ‘नफरत और अपमान’ झेलना पड़ रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि पहलगाम आतंकवादी हमले के बाद ओलंपिक चैंपियन नदीम का यहां खेलने के सवाल ही पैदा नहीं होता।

टोक्यो ओलंपिक में स्वर्ण और पेरिस ओलंपिक में रजत पदक जीतने वाले चोपड़ा ने कहा कि वह यह देखकर दुखी हैं कि सोशल मीडिया पोस्ट में उनकी देशभक्ति पर सवाल उठाए जा रहे हैं और उनके परिवार को भी अपशब्द कहे जा रहे हैं। चोपड़ा ने नदीम को 24 मई को बेंगलुरु में होने वाले पहले नीरज चोपड़ा क्लासिक में भाग लेने के लिए बुलाया था। नदीम ने व्यस्तता का हवाला देकर न्योता ठुकरा दिया था।

देशप्रेम पर उठा सवाल

चोपड़ा ने सोशल मीडिया पर लंबी पोस्ट में लिखा, ‘नीरज चोपड़ा क्लासिक में भाग लेने के लिए अरशद नदीम को मेरे निमंत्रण पर काफी बातें हो रही है और ज्यादातर घृणा और अपमानजनक हैं। उन्होंने मेरे परिवार को भी नहीं छोड़ा। मैं

दो दिन पहले भेजा था निमंत्रण

चोपड़ा ने कहा कि निमंत्रण पहलगाम पर आतंकवादी हमले से दो दिन पहले सोमवार को भेजा गया। पहलगाम हमले में 26 लोगों की मौत हो गई जिसमें अधिकांश पर्यटक थे। चोपड़ा ने कहा, ‘मैने अरशद को जो न्योता भेजा, वह एक खिलाड़ी से दूसरे खिलाड़ी को था। इससे ज्यादा या कम कुछ नहीं। नीरज चोपड़ा क्लासिक का मकसद भारत से सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों को सामने लाना और हमारे देश में विश्व स्तरीय खेल प्रतियोगिता का आयोजन करना है। सभी खिलाड़ियों को पहलगाम में आतंकवादी हमले से दो दिन पहले सोमवार को न्योते भेजे गए।

मेरा देश और उसके हित हमेशा सर्वोपरि

नीरज ने लिखा, ‘पिछले 48 घंटे में जो हुआ, उसके बाद एनसी क्लासिक में अरशद के खेलने का सवाल ही नहीं था। मेरे देश और उसके हित हमेशा सर्वोपरि है। मेरी संवेदनाएं और प्रार्थनाएं उन लोगों के साथ है जिन्होंने अपनों को खोया है। पूरे देश के साथ मैं भी दुखी और खफा हूं। मुझे यकीन है कि हमारे देश का जवाब एक राष्ट्र के रूप में हमारी शक्ति दिखा देगा और इंसाफ होगा। मैं इतने साल से गर्व से अपने देश का प्रतिनिधित्व कर रहा हूं और मेरी ईमानदारी पर सवाल उठने से मैं दुखी हूं। मुझे दुख है कि मुझे उन लोगों के सामने सफाई देनी पड़ रही है जो मुझे और मेरे परिवार को अकारण निशाना बना रहे हैं।’

खास खबर

सेमीफाइनल में जगह बनाने के लिए पंजाब-गोवा में जंग आज

भुवनेश्वर। पिछले मैच में शानदार जीत से आत्मविश्वास से लबरेज पंजाब एफसी की टीम शनिवार को यहां सुपर कप क्वार्टरफाइनल में मजबूत एफसी गोवा को हराकर इसी लय को जारी रखने की उम्मीद करेगी। पंजाब ने ओडिशा एफसी को 3-0 से जबकि एफसी गोवा ने आई लीग टीम गोकुलम केरला एफसी को इसी अंतर से हराकर क्वार्टरफाइनल में जगह बनाई थी। पंजाब एफसी के मुख्य कोच पनागियोटिस डिलम्पेरिस ने कहा, ‘हमने ओडिशा के खिलाफ मैच में जोखिम लिया और उन्हें गोल में तब्दील किया। ओडिशा ने भी कई मौके बनाये और मैं चाहूंगा कि गोवा के खिलाफ कल के मैच में हम इनका दोहराव नहीं होने दें।’ इंडियन सुपर लीग सत्र में

हेजलवुड के पास दबाव झेलने की क्षमता

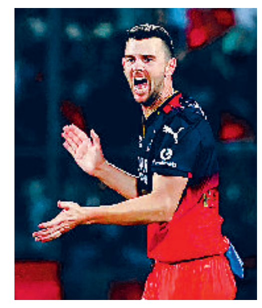

बेंगलुरु। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के मुख्य कोच एंडी फ्लावर ने आईपीएल मैच में यहां राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ टीम की 11 रन की जीत में अहम भूमिका निभाने वाले तेज गेंदबाज जोश हेजलवुड की तारीफ की। कहा कि यह विश्व स्तरीय गेंदबाज खेल के किसी भी प्रारूप में दबाव झेल सकता है और उसे पता कि किसी विशेष समय पर कौन सी गेंद फेंकनी है। आखिरी ओवरों में हेजलवुड की शानदार गेंदबाजी से आरसीबी की टीम मौजूदा सत्र में अपने घरेलू मैदान पर चार मैचों में पहली जीत के साथ अंक तालिका में तीसरे स्थान पर पहुंच गई।

मैड्रिड ओपन : उलटफेर का शिकार होने से बची इगा स्वियाटेक और गाफ

मैड्रिड। पिछले महीने मियामी में फिलीपीन की अलेक्जेंड्रा इयाला के हाथों क्वार्टर फाइनल हारने वाली दूसरी रैंकिंग वाली इगा स्वियाटेक एक बार फिर उलटफेर का शिकार होने से बची और इस 19 वर्षीय प्रतिद्वंद्वी को 4-6, 6-4, 6-2 से हराकर मैड्रिड ओपन टेनिस के दूसरे दौर में पहुंच गई। गत चैंपियन स्वियाटेक की नजरें इस सत्र में पहले फाइनल में पहुंचने पर लगी हैं।

रफेल नडाल अकादमी की प्रशिक्षु इयाला ने मियामी में स्वियातेक को सीधे सेटों में हराया था। वहीं कोको गाफ ने खराब शुरुआत से उबरते हुए डायना यस्त्रेम्स्का को 0-6, 6-2, 7-5 से हराया। अब उनका सामना अमेरिका की ही अन ली से होगा जिन्होंने लैला फर्नांडिज को 6-4, 3-6, 6-4 से मात दी। सातवीं रैंकिंग वाली मीरा आंद्रीवा ने मैरी बूजकोवा को 6-3, 6-4 से हराया जबकि ब्राजील की बिया हडाड मेइया ने बर्नार्ड पेरा को 2-6, 6-3, 6-1 से मात दी। पुरुष वर्ग में दुनिया के पूर्व नंबर चार खिलाड़ी केइ निशिकोरि ने अलेक्जेंडर वुकिच को 6-4, 3-6, 6-3 से हराकर टूर पर 450वीं जीत दर्ज की।

आईपीएल पाइंट टेबल

टीम	मैच	जीते	हारे	अंक
गुजरात	8	6	2	12
दिल्ली	8	6	2	12
बेंगलुरु	9	6	3	12
मुंबई	9	5	4	10
पंजाब	8	5	3	10
लखनऊ	9	5	4	10
कोलकाता	8	3	5	6
हैदराबाद	9	3	6	6
राजस्थान	9	2	7	4
चेन्नई	9	2	7	4

ऑरेंज कैप

साई सुदर्शन
417 रन
गुजरात

पर्पल कैप

प्रसिद्ध कृष्णा
16 विकेट
गुजरात

आईपीएल: ईशान ने 44, मेंडिस ने नाबाद 32 रन बनाए, हर्षल को 4 विकेट

सुपरकिंग्स पर सनराइजर्स की पांच विकेट की जीत में चमके हर्षल पटेल

भाषा ⏭ चेन्नई

हर्षल पटेल की तूफानी गेंदबाजी के बाद बल्लेबाजों के उम्दा प्रदर्शन से सनराइजर्स हैदराबाद ने इंडियन प्रीमियर लीग में शुक्रवार को यहां अंक तालिका की दो सबसे निचली टीमों की जंग में चेन्नई सुपरकिंग्स को पांच विकेट से हराकर प्ले ऑफ में जगह बनाने की उम्मीद बरकरार रखी। इस हार के बाद सुपरकिंग्स की प्ले ऑफ में जगह बनाने की उम्मीद लगभग खत्म हो गई है। सनराइजर्स की टीम नौ मैच में छह अंक से आठवें जबकि सुपरकिंग्स की टीम इतने ही मैच में चार अंक से 10वें और अंतिम स्थान पर है। सुपरकिंग्स के 155 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए सनराइजर्स ने इशान किशन (44), कामिंदु मेंडिस (नाबाद 32) और नितीश कुमार रेड्डी (नाबाद 19) की पारियों से 18.4 ओवर में पांच विकेट पर 155 रन बनाकर जीत दर्ज की। मेंडिस और नितीश ने छठे विकेट के लिए 49 रन की अटूट साझेदारी करके टीम को लक्ष्य तक पहुंचाया। सनराइजर्स की सुपरकिंग्स के खिलाफ चेन्नई में यह पहली जीत है। सुपरकिंग्स ने मौजूदा सत्र में अपने घरेलू मैदान पर अब तक चारों मैच गंवाए हैं। हर्षल (28 रन पर चार विकेट), कप्तान पैट कमिंस (21 रन पर दो विकेट) और जयदेव उनादकट (21 रन पर दो विकेट) की धारदार गेंदबाजी के सामने सुपरकिंग्स ने नियमित अंतराल पर विकेट गंवाए और टीम 19.5 ओवर में 154 रन पर सिमट गई। सुपरकिंग्स की ओर से डेवाल्ड ब्रेविस ने 25 गेंद में चार छक्कों और एक चौके से सर्वाधिक 42 रन बनाए। युवा सलामी बल्लेबाज आयुष म्हात्रे ने 19 गेंद में छह चौकों से 30 रन की पारी खेली। इन दोनों के अलावा दीपक हुड्डा (22) और रविंद्र जडेजा (21) ही 20 रन के आंकड़े को पार कर पाए। लक्ष्य का पीछा करने उतरे सनराइजर्स ने पारी की दूसरी ही गेंद पर अभिषेक शर्मा (00) का विकेट गंवा दिया जिन्होंने खलील अहमद की गेंद पर आयुष को कैच थमाया। ट्रेविस हेड (19) ने खलील पर चौके से खाता खोला और फिर अंशुल कंबोज पर दो चौके मारे। इशान किशन ने कंबोज पर चौका जड़ने के बाद खलील पर लगातार दो चौके मारे।

कोलकाता की बाधा बनेंगे पूर्व कप्तान अय्यर, किंग्स को प्लेआफ में पहुंचाने का लक्ष्य

कोलकाता। एक सत्र पहले कोलकाता नाइट राइडर्स को खिताब दिलाने वाले श्रेयस अय्यर अब प्लेआफ क्वालीफिकेशन की उसकी राह में सबसे बड़ी बाधा होंगे। श्रेयस की कप्तानी में पंजाब किंग्स आईपीएल के अहम मैच में शनिवार को ईडन गार्डंस पर मेजबान के खिलाफ उतरेगी। बारह महीने पहले अय्यर की कप्तानी में केकेआर ने एक दशक में पहला आईपीएल खिताब जीता था। शनिवार को वह विरोधी टीम की जर्सी पहनेंगे और आत्मविश्वास से ओतप्रोत पंजाब को प्लेआफ में पहुंचाने की दिशा में अगला कदम बढ़ाने के इरादे से उतरेंगे। केकेआर ने अय्यर को रिलीज करके सभी को हैरत में डाल दिया था लेकिन पंजाब किंग्स की कप्तानी अय्यर को रास आ रही है। दिल्ली कैपिटल्स के अपने मेंटोर रिकी पोंटिंग के साथ मिलकर अय्यर ने पंजाब को आठ में से पांच मैच जिताकर अंकतालिका में पांचवें स्थान पर पहुंचा दिया। इस साझेदारी ने अय्यर को आत्मविश्वास के साथ कप्तानी की छूट भी दी जिसके दम पर वह अब तक तीन अर्धशतक समेत 263 रन बना चुके हैं।

खबर संक्षेप

पॉल संचालन परिषद में आईसीए प्रतिनिधि

मुंबई। मुंबई और हिमाचल प्रदेश के पूर्व क्रिकेटर पॉल वलथाटी को टी20 मुंबई लीग की संचालन परिषद में भारतीय क्रिकेटर संघ का प्रतिनिधि चुना गया है। टी20 मुंबई लीग अगले महीने 26 मई से आठ जून तक होगी जिसमें आठ टीमें भाग लेंगी। इससे पहले यह लीग 2018 और 2019 में खेली गई थी। भारतीय कप्तान रोहित शर्मा इसके ब्रांड दूत हैं जिसके लिये 2800 से अधिक खिलाड़ियों ने पंजीयन किया है।

हेजलवुड डब्लूटीसी में बोलैंड से अधिक दावेदार

दुबई। भारत के पूर्व क्रिकेटर और कोच रवि शास्त्री ने कहा कि जून में लॉर्ड्स मैदान पर खेले जाने वाले विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल में ऑस्ट्रेलिया को स्कॉट बोलैंड की जगह अनुभवी तेज गेंदबाज जोश हेजलवुड को चुनना चाहिए।

क्योंकि दिग्गज ग्लेन मैकग्रा की तरह गेंदबाजी करने वाला यह लंबे कद का खिलाड़ी इंग्लैंड की परिस्थितियों का बेहतर तरीके से उपयोग कर पाएगा। टीम में तेज गेंदबाजी विभाग में कप्तान पैट कमिंस और मिचेल स्टार्क की जगह लगभग पक्की है। ये दोनों अगर फिट रहे तो तीसरे तेज गेंदबाज के नाम के लिए चर्चा हो सकती है।

पूर्व कप्तान निदा ने राष्ट्रीय टीम से नाम वापस लिया

कराची। पाकिस्तान की महिला टीम की अनुभवी खिलाड़ी निदा डार ने मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के कारण राष्ट्रीय चयन से नाम वापस ले लिया। पाकिस्तान क्रिकेट में अपनी तरह की इस पहली घटना में राष्ट्रीय महिला टीम की पूर्व कप्तान 39 वर्षीय निदा ने लिखा, ‘पिछले कुछ महीनों में मेरे आसपास व्यक्तिगत और पेशेवर रूप से बहुत कुछ हुआ है, जिसने मेरे मानसिक स्वास्थ्य पर असर डाला है। मैंने ऐसे में खुद पर ध्यान देने के लिए क्रिकेट से ब्रेक लेने का फैसला किया है। मैं सभी से इस दौरान मेरी निजता का सम्मान करने की अनुरोध करती हूं।’

मलेशिया का फैसला

पाकिस्तान को अजलान शाह कप से किया बाहर, बाकी था भुगतान

एजेंसी ⏭ कराची

मलेशिया हॉकी महासंघ ने जोहर हॉकी संघ को 10,349 अमेरिकी डॉलर के बकाए का भुगतान नहीं करने के कारण पाकिस्तान को वार्षिक अजलान शाह कप के लिए आमंत्रित नहीं किया है।

पाकिस्तान हॉकी महासंघ के एक सूत्र ने कहा कि जोहर संघ ने पीएचएफ को आधिकारिक पत्र भेजा है जिसमें अक्टूबर 2023 में टीम के साथ मलेशिया गए पीएचएफ अधिकारियों और उनके परिवारों के आवास, यात्रा और अन्य खर्चों के लिए भुगतान की जाने वाली राशि के बारे में सख्त लहजे में बताया गया है। पाकिस्तान की टीम जोहर हॉकी कप खेलने के लिए मलेशिया गई थी और पीएचएफ के कुछ अधिकारी और उनके परिवार भी टीम के साथ गए थे। एक सूत्र ने बताया, ‘टीम के ठहरने और अन्य खर्चों का वहन आयोजकों को उठाना था, लेकिन पीएचएफ के अधिकारियों को बता दिया गया था कि उन्हें अपने सभी खर्च खुद ही उठाने होंगे।

ये अधिकारी भी उसी आलीशान होटल में रुके थे जहां टीमें ठहरी हुई थीं। इसमें पीएचएफ के पूर्व अध्यक्ष भी शामिल थे।’ जोहर संघ ने पहले ही इस मुद्दे को मलेशिया महासंघ के समक्ष उठाया है और धमकी दी है कि अगर बकाया राशि का भुगतान नहीं किया गया तो वे इस मामले को अंतरराष्ट्रीय हॉकी महासंघ के समक्ष ले जाएंगे।

आर्थिक तंगी से जूझ रहा पीएचएफ

सूत्र ने कहा, ‘पीएचएफ के मौजूदा अध्यक्ष और उनकी टीम इस मामले को लेकर परेशानी में है, क्योंकि महासंघ पहले से ही आर्थिक तंगी से जूझ रहा है और उन्हें पीएचएफ के पूर्व अधिकारियों द्वारा किए गए इन खर्चों के बारे में जानकारी नहीं थी।’ सुल्तान अजलान शाह कप का आयोजन 22 से 29 नवंबर तक इपोह में होना है।

आस्ट्रेलिया दौराः आकलन करने में मिलेगी मदद

पर्थ। भारतीय महिला हॉकी टीम के मुख्य कोच हरेंद्र सिंह ने शुक्रवार को कहा कि शनिवार से शुरू हो रहे आस्ट्रेलिया दौरे से टीम को खुद का आकलन करने में मदद मिलेगी और इस दौरे पर भविष्य को ध्यान में रखकर विभिन्न संयोजन आजमाए जाएंगे। सलीमा टेटे की कप्तानी वाली भारतीय टीम 26 और 27 अप्रैल को यहां आस्ट्रेलिया ए से और एक, तीन तथा चार मई को आस्ट्रेलिया की सीनियर टीम से खेलेगी।भारत और आस्ट्रेलिया के बीच अब तक खेले गए 16 मैचों में से दस आस्ट्रेलिया ने जीते जबकि तीन ड्रॉ रहे हैं।

खुशी और टीकम की एशियन चैंपियनशिप में शानदार जीत

एजेंसी ⏭ अम्मान

खुशी चंद और टीकम सिंह यहां एशियाई अंडर-15 और अंडर-17 चैंपियनशिप के सेमीफाइनल में जगह पक्की करने वाले भारतीय मुक्केबाजों में शामिल हैं।

अबू धाबी में 2024 एशियाई स्कूल लड़कों और लड़कियों की मुक्केबाजी चैंपियनशिप की कांस्य पदक विजेता खुशी (46 किग्रा) ने क्वार्टर फाइनल के एकतरफा मुकाबले में वियतनाम की गुयेन थी होंग येन को शिकस्त दी। टीकम (52 किग्रा) ने अपने अंतिम-आठ मुकाबले में फिलिस्तीन के ओथमान डायब को हराया। पुरुषों के वर्ग में अंबेकर मेताई (48 किग्रा), उद्यम सिंह (54 किग्रा) और राहुल गारिया (57 किग्रा) ने अपने-अपने वजन वर्ग में 5-0 की प्रभावशाली जीत दर्ज की। अमन देव (50 किग्रा) ने जॉर्डन के ओसामा अल-खालदी को करीबी मुकाबले में 3-2 से मात दी। जिया (48 किग्रा) ने वियतनाम की थी रू ना दिन्ह को 5-0 जबकि जन्नत ने यूक्रेन की अनहेलिना रुमियांत्सेवा को 4-1 से हराया।

कॅरियर का अंत मजबूती के साथ करना चाहती हूं

बेंगलुरु। अमेरिका की दो बार की ओलंपिक चैंपियन दलीलाह मुहम्मद ने कहा कि उन्होंने अपने संन्यास की योजना को टाल दिया है क्योंकि वह अपने कॅरियर का अंत कमजोर महसूस करते हुए नहीं करना चाहती थीं। इस साल के अंत में 400 मीटर बाधा दौड़ में अपने पांच विश्व चैंपियनशिप पदकों की संख्या में इजाफा करने का प्रयास करेंगी। यह 35 वर्षीय ट्रैक एवं फील्ड स्टार रविवार को टीसीएस विश्व 10के (10 किमी) दौड़ के 17वें सत्र के लिए एक दूत के रूप में बेंगलुरु में हैं। उन्होंने 12 अप्रैल को बोत्सवाना ग्रां प्री में सत्र का अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया जिससे यह साबित हो गया कि वह अब भी कड़ी टक्कर देने में सक्षम हैं।

27-31 मई तक कोरिया में होगी एशियाई एथलेटिक्स चैंपियनशिप

भारत की 59 सदस्यीय टीम देगी चुनौती, नीरज हटे

एजेंसी ⏭ नई दिल्ली

भारत ने दक्षिण कोरिया में होने वाली आगामी एशियाई एथलेटिक्स चैंपियनशिप के लिए शुक्रवार को 59 सदस्यीय टीम की घोषणा की। स्टार भाला फेंक खिलाड़ी नीरज चोपड़ा उम्मीद के मुताबिक इस प्रतियोगिता में शामिल नहीं होंगे जबकि कोच्चि में हाल ही में संपन्न फेडरेशन कप में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले लगभग सभी खिलाड़ियों को टीम में जगह मिली है। दोहरे ओलंपिक पदक विजेता चोपड़ा का इस प्रतियोगिता में शामिल नहीं होना उम्मीद के मुताबिक ही है क्योंकि इस सत्र में उनका ध्यान डायमंड लीग प्रतियोगिताओं और सितंबर में होने वाली विश्व चैंपियनशिप पर होगा। इसके अलावा एनसी क्लासिक पर भी उनकी नजरें रहेंगी जिसकी मेजबानी वह 24 मई को बेंगलुरु में कर रहे हैं। चोपड़ा ने भुवनेश्वर में 2017 टूर्नामेंट के बाद से इस प्रतिष्ठित महाद्वीपीय प्रतियोगिता में हिस्सा नहीं लिया है जहां उन्होंने स्वर्ण पदक जीता था।

चैंपियन खिलाड़ी बाहर

महाद्वीपीय चैंपियनशिप के पिछले सत्र में स्वर्ण पदक जीतने वाले राष्ट्रीय रिकॉर्डधारक गोला फेंक खिलाड़ी तेजिंदरपाल सिंह तूर को फेडरेशन कप में निराशाजनक दूसरे स्थान पर रहने के बाद टीम में जगह नहीं मिली है। पोल वॉल्ट खिलाड़ी देव कुमार मीणा अपने राष्ट्रीय रिकॉर्ड में सुधार करने के बावजूद टीम में जगह नहीं बना पाए क्योंकि उनका प्रयास भारतीय एथलेटिक्स महासंघ द्वारा निर्धारित एशियाई चैंपियनशिप पात्रता स्तर से कम था।

दिग्गजों को दल में मिली जगह

अविनाश साबले (पुरुषों की 3000 मीटर स्टीपलचेज), पारुल चौधरी (महिलाओं की 3000 मीटर स्टीपलचेज) और गुलवीर सिंह (5000 मीटर और 10000 मीटर) जैसे शीर्ष खिलाड़ियों को टीम में शामिल किया गया है। गुमी में 27-31 मई तक होने वाली एशियाई चैंपियनशिप के लिए टीम में धावक अनिमेष कुजूर भी शामिल हैं जिन्होंने 200 मीटर में नया राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाया। त्रिकूद खिलाड़ी प्रवीण चित्रावेल को भी टीम में जगह मिली है जिन्होंने फेडरेशन कप के दौरान अपने राष्ट्रीय रिकॉर्ड की बराबरी की थी। महिलाओं की भाला फेंक स्पर्धा में राष्ट्रीय रिकॉर्ड धारक अन्नू रानी ने मार्च में मुंबई में इंडियन ओपन थ्रो प्रतियोगिता के दौरान 58.82 मीटर के प्रयास के आधार पर टीम में जगह बनाई।

जोधपुर में हिरण की हत्या, गोली मारकर शिकारी फरार

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा जोधपुर

जोधपुर में शिकारी ने हिरण को गोली मार दी। लोगों की आहट सुनकर शिकारी मौके से फरार हो गया, लेकिन गंभीर रूप से घायल हिरण ने कुछ देर बाद दम तोड़ दिया। घटना की जानकारी मिलते ही वन्यजीव प्रेमी आक्रोशित हो गए। स्थानीय लोगों ने आरोपी के खिलाफ कठोर कार्रवाई की मांग की है। मामला, लूणी थाना क्षेत्र गुरुवार रात का बताया जा है। खेजड़ली रेस्क्यू सेंटर के घेवर राम ने बताया- शुक्रवार सुबह ग्रामीणों से सूचना मिलते ही वन विभाग और पुलिस को जानकारी दी गई। मौके पर पहुंची टीम ने हिरण के शव को रेस्क्यू सेंटर भिजवाया, जहां तीन डॉक्टरों की टीम ने पोस्टमॉर्टम में गोली से मौत की पुष्टि की। पुलिस को आशंका है कि शिकारी स्थानीय हो सकते हैं। हिरण की बॉडी मिलने के तरीके से अनुमान है कि शिकार की नीयत से गोली मारी गई। वन्यजीव प्रेमियों ने आरोपियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग की है। पुलिस ने लोगों को आश्वासन दिया है कि जल्द ही आरोपी को गिरफ्तार कर लिया जाएगा। फिलहाल पुलिस आसपास के इलाके में पूछताछ कर रही है।

पहलगाम अटैक पर स्टेटस लगाया, सरकारी टीचर गिरफ्तार

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा बाड़मेर

बाड़मेर में शुक्रवार को सरकारी स्कूल के एक टीचर ने वॉट्सऐप पर स्टेटस लगाया और पहलगाम आतंकी हमले को प्रोपेगेंडा बताया। टीचर ने हमले के मृतकों की लिस्ट डालते हुए लिखा- अगर धर्म पूछकर मारा होता तो शायद आज सैयद आदिल हुसैन शाह जिंदा होता। इस देश की मीडिया झूठ फैलाने में लगी हुई है। इससे एक बात तो तय है कि पुलवामा की तरह यह अटैक भी एक प्रोपेगेंडा का भाग होगा टीचर के लगाए स्टेटस का स्क्रीन शॉट सोशल मीडिया पर तेजी से शेयर होने लगा। दरअसल, जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल को हुए आतंकी हमले में 27 निर्देश लोगों की मौत हो गई थी। सरकारी टीचर जसवंत डाभी ने 24 अप्रैल को शर्मनाक और आपत्तिजनक टिप्पणी करते हुए वॉट्सऐप स्टेटस लगाया। स्टेटस के सोशल मीडिया पर सर्कुलेट होते ही 25 अप्रैल को पुलिस एक्शन में आई। बाड़मेर पुलिस ने ट्वीट के जरिए जानकारी देते हुए लिखा- टीचर जसवंत दाभी को गिरफ्तार कर लिया है। गुड़ामालानी थानाधिकारी देवीचंद ढाका ने बताया- टीचर से पूछताछ जारी है। टीचर जसवंत डाभी बाड़मेर जिले के गुड़ामालानी इलाके के पायला कला ब्लॉक के प्राइमरी स्कूल दीपाजी की ढाणी में कार्यरत है। इस तरह के स्टेटस के बाद लोगों ने सोशल मीडिया सहित अन्य प्लेटफार्म पर टीचर पर कार्रवाई की मांग की। पायला कलां ब्लॉक के चीफ ब्लॉक एजुकेशन ऑफिसर ईश्वर जाखड़ ने बताया- हमारी जानकारी में आने के बाद हमने पंचायत एलीमेंट्री एजुकेशन ऑफिसर करनाराम को जांच करने और रिपोर्ट सौंपने के निर्देश दिए हैं।

भारतमाला एक्सप्रेसवे पर ट्रक में घुसी स्कॉर्पियो, दंपती की मौत

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा तिंवरी

ड्राइवर को नींद की झपकी आने से भारतमाला एक्सप्रेसवे पर खड़े ट्रक में स्कॉर्पियो घुस गई। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि स्कॉर्पियो के परखच्चे उड़ गए और कार में सवार पति-पत्नी की मौके पर ही मौत हो गई। जबकि दो बेटे समेत चार लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। हादसा जोधपुर के तिंवरी तहसील में चंडालिया गांव के पास शुक्रवार शाम करीब 7 बजे हुआ। ओसियां थानाधिकारी राजेन्द्र चौधरी ने बताया कि भागवा (जालोर) निवासी परिवार जसोल माजीसा मंदिर से दर्शन कर ढेलाणा (लोहावट, जोधपुर) जा रहा था। इस दौरान हादसा हो गया। प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि हादसा स्कॉर्पियो ड्राइवर को नींद की झपकी आने की वजह से हुआ। कार पूरी रफ्तार में थी और नींद की झपकी के चलते वह संतुलन खो बैठा, जिससे वाहन सीधे खड़े ट्रक में जा घुसा। घायलों और मृतकों की पहचान भागवा (जालोर) निवासी परिवार के रूप में हुई है। मृतक दंपती की पहचान मूलसिंह राजपूत(30) और उनकी पत्नी दरिया कंवर (27) के रूप में हुई है। हादसे में उनके बेटे अभिजीत सिंह (5), जितेन्द्र सिंह (9), भाई अजयपाल सिंह (24) और एक अन्य सदस्य तनु गंभीर रूप से घायल हुए हैं। हादसे की सूचना मिलते ही पुलिस और प्रशासन की टीम मौके पर पहुंची। मृतकों के शवों को ओसियां उप जिला अस्पताल की मॉर्च्युरी में रखा गया, वहीं गंभीर रूप से घायलों को जोधपुर के एमडीएम अस्पताल में रेफर किया गया है। वहीं दुर्घटनाग्रस्त वाहनों को हटवाकर जांच शुरू कर दी गई है।

तालाब में डूबने से 2 भाइयों सहित 3 की मौत, तीनों मृतक एक ही परिवार के

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा धौलपुर

धौलपुर में तालाब में डूबने से दो भाइयों सहित तीन बच्चों की मौत हो गई। बच्चे गर्मी से बचने के लिए तालाब में नहाने के लिए गए थे। हादसा शुक्रवार दोपहर एक बजे सरमथुरा थाना क्षेत्र में हुआ। मृतक एक ही परिवार के थे। सरमथुरा थाना प्रभारी कृपाल सिंह ने बताया कि धौलपुर-करौली नेशनल हाईवे पर छोटा तालाब (पोखर) बना हुआ है। तालाब में नहाने के लिए सेडपाडा सरमथुरा के रहने वाले एक ही परिवार के तीन बच्चे गए हुए थे। वहीं, पास में कुछ और लोग भी मौके पर मौजूद थे। इसी दौरान तीनों बच्चे अरुण (12) पुत्र मनीष, प्रांशु (10) पुत्र केशव और हिमांशु (8) पुत्र केशव गहरे पानी में चले गए। बच्चों को पानी में डूबता देख स्थानीय लोगों ने उनके घर जाकर सूचना दी। इसके बाद स्थानीय लोगों ने तीनों बच्चों को बाहर निकाल लिया। तालाब के पानी से बच्चों को बाहर निकालने के बाद सरमथुरा अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।

झालावाड़ में हत्या पर बवाल के बाद इंटरनेट सेवा शनिवार तक बंद, मृतक के परिवार को 40 लाख और संविदा पर नौकरी

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा झालवाड़

राजस्थान के झालवाड़ में शुक्रवार (25 अप्रैल) को बड़ा बवाल हुआ. झालावाड़ में सड़क पर हुए झगड़े के बाद 20 वर्षीय एक स्थानीय वीडियोग्राफर की कुछ अज्ञात लोगों ने शादी समारोह में कथित तौर पर गोली मारकर हत्या कर दी, जिसके शहर में बवाल मच गया. हत्या के खिलाफ और मुआवजे की मांग को लेकर 1000 से ज्यादा ग्रामीण सड़क पर उतर आए और सड़कों को जाम कर दिया. इतना ही नहीं गुस्साई भीड़ ने कई दुकानों में आग लगा दी. बढ़ते बवाल को देखते हुए प्रशासन ने यहां इंटरनेट सेवा निलंबित कर दी है. ग्रामीणों की मांग थी कि मृतक के परिजनों को एक करोड़ रुपए मुआवजा तथा परिजनों को सरकारी नौकरी और आरोपियों को घरों पर बुलडोजर चलाया जाए, लेकिन जिला कलेक्टर एवं जनप्रतिनिधियों द्वारा की गई समझाइश के पश्चात मृतक की पत्नी एवं भाई को संविदा पर नौकरी देने तथा नियमानुसार 5 लाख रुपए सरकारी सहायता दिलवाने और 35 लाख रुपए सहायता राशि विधायक द्वारा दिलवाये जाने की बात पर ग्रामीणों ने जाम खोल दिया और मृतक शंभू सिंह के शव को अंतिम संस्कार के लिए ले जाया गया. तनावपूर्ण माहौल को देखते हुए कोटा संभागीय आयुक्त राजेंद्र सिंह शेखावत ने शुक्रवार दोपहर 12 बजे से शनिवार दोपहर 12 बजे तक डग, गंगधार और पेडावा उपखंडों में इंटरनेट सेवाएं निलंबित करने का आदेश दिया. डग निवासी शंभू सिंह पर एक कार (जिसमें दो लोग सवार थे) से गोली चलायी गयी जिससे उनकी मौत हो गई. पुलिस उपाधीक्षक जय प्रकाश अटल ने बताया कि बृहस्पतिवार को सिंह की गाड़ी उनकी गाड़ी से टकराने के बाद कार सवारों से उनका झगड़ा हो गया और वे उनका मेघवाल मोहल्ले तक पीछा करने लगे, जहां वह एक शादी समारोह की वीडियोग्राफी कर रहे थे. घटना के बाद गुस्साई भीड़ ने इलाके में कम से कम छह दुकानों में आग लगा दी और पथराव किया. पथराव में रायपुर के थाना प्रभारी बन्नालाल जाट के सिर में गंभीर चोट आयी जिसके बाद उन्हें झालावाड़ में प्राथमिक उपचार के बाद जयपुर रेफर कर दिया गया. भीड़ के साथ झड़प में करीब आधा दर्जन अन्य पुलिसकर्मी मामूली रूप से घायल हो गए. इसके बाद पुलिस ने रेहान नामक एक व्यक्ति को हिरासत में लिया है और कथित तौर पर अपराध में इस्तेमाल की गई कार को जब्त कर लिया है. इलाके में भारी पुलिस बल तैनात किया गया है.

पाकिस्तानी बहू को वापस भेजने की मांग, युवक की पहली पत्नी ने एसपी से की शिकायत

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा चूरू

चूरू के युवक से शादी करने वाली पाकिस्तानी युवती को भारत से भेजने की मांग उठनी लगी है। युवक की पहली पत्नी ने शुक्रवार को एसपी को ज्ञापन देकर उसे वापस पाकिस्तान भेजने की मांग की है। उसने युवती के भारत में रहने को राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा बताया। पाकिस्तान के लाहौर की रहने वाली मेहविश (33) ने जुलाई 2024 में चूरू के रतननगर के गांव पिथिसर के दो बच्चों के पिता रहमान (35) से शादी की थी। तब से मेहविश पिथिसर में रह रही है। पहलगाम आतंकी हमले के बाद से पाकिस्तान और भारत के बीच तनाव की स्थिति बन गई है। इसी बीच भारत सरकार ने पाकिस्तानी नागरिकों को 48 घंटे के अंदर भारत छोड़ने की एडवाइजरी जारी की है। इसके बाद पीथीसर गांव में रह रही पाकिस्तानी महवीश को भी भारत से वापिस पाकिस्तान भेजने की मांग उठने लगी है। पाकिस्तान की मेहविश और चूरू के पीथीसर गांव के रहमान दोनों साथ रहते हैं। रहमान की पहली पत्नी फरीदा शुक्रवार दोपहर अपने पिता के साथ एसपी ऑफिस पहुंची। उसने एसपी जय यादव से मेहविश को वापस पाकिस्तान भेजने की मांग की है। हनुमानगढ़ के भादरा के वार्ड 15 की फरीदा ने बताया कि उसका निकाह पिथिसर निवासी रहमान के साथ हुआ था। उससे उसके दो बच्चे भी हैं। करीब एक साल पहले ससुराल वाले पाकिस्तान की रहने वाली महिला मेहविश को अवैध तरीके से भारत में ले आए। जिसको अपने साथ रखा है। फरीदा ने आरोप लगाते हुए कहा कि पाकिस्तानी महिला मेहविश के अवैध गतिविधियों में शामिल होने की संभावना है। उसके ससुराल वालों के ताल्लुकात पाकिस्तान के नजदीक बीकानेर, जोधपुर, जैसलमेर, श्रीगंगानगर आदि जगह हैं। जहां मेहविश जाकर भारत के सीमावर्ती इलाकों की सूचना पाकिस्तान को दे सकती है। उसने बताया कि भारत सरकार की गाइड लाइन के अनुसार पाकिस्तानी नागरिकों को 48 घंटे में भारत छोड़ने की बात कही गई है। इसलिए मेहविश को वापस पाकिस्तान भेजा जाए। एसपी जय यादव ने बताया कि सरकार ने उन लोगों के लिए एडवाइजरी जारी की है, जो ट्यूरिस्ट पर भारत आए हैं। मेहविश ने वीजा एक्सटेंशन करवाने के लिए भेजा हुआ है। वहीं, मेहविश ने लॉन्ग टर्म वीजा के लिए वर्ष 2024 में ही सरकार को एप्लाई कर दिया था। इसके बाद भी सरकार की ओर से जो आदेश आएंगे। उनकी पालना करवाई जाएगी। उन्होंने बताया कि ट्यूरिस्ट वीजा पर जिले में आए हुए दो लोगों को वापिस भेज दिया गया है

विवादित पोस्ट करने पर युवक गिरफ्तार, माहौल खराब करने की कोशिश

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा जालोर

बागोड़ा में एक युवक के द्वारा सोशल मीडिया आईडी पर पहलगाम आतंकी हमले को लेकर विवादित पोस्ट करने के मामले में बागोड़ा पुलिस ने सरीफ खां को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू की है। बागोड़ा थानाधिकारी हुकमाराम ने बताया कि पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद बागोड़ा निवासी सरीफ खां ने सोशल इस्टाग्राम आईडी ह्यद्म4-ड्ड्थ463 पर आपत्तिजनक टिप्पणी की। माहौल खराब होने के शक में यूजर की आईडी से मोबाइल लोकेशन खंगाली, लोकेशन ट्रैस होने पर बागोड़ा पुलिस ने आरोपी को दबोच लिया। आरोपी ने इंस्टा आईडी पर लगाए स्टेटस से भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता को खतरे में डालने की कोशिश की और सांप्रदायिक सद्भावना के खिलाफ टिप्पणी कर कानून एवं शांति व्यवस्था बाधित करने का प्रयास किया। जिस पर बागोड़ा थाना क्षेत्र के खोखा निवासी सरीफ खान (19) पुत्र बशीर खान को गिरफ्तार कर लिया गया। आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू की। पुलिस कार्रवाई में टीम में एएसआई धर्माराम, कॉन्स्टेबल भैराराम, नरेश कुमार,उम्मेदसिंह व साइबर सेल से किशन गहलोत मौजूद रहे।

अजमेर में साले ने जीजा का किया मर्डर, हत्या के बाद पास की झोपड़ी में सोता रहा

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा अजमेर

जीजा, सीताराम (30) | साला, मस्तराम (38)

अजमेर में एक साले ने अपने जीजा की हत्या कर दी और पुलिस को गुमराह करने का प्रयास किया। मृतक के मुंह से खून निकल रहा था, लेकिन साले ने पुलिस को बताया कि उसके जीजा नशे की हालत में थे और भूख, प्यास व गर्मी के कारण उनकी मृत्यु हुई है। पुलिस ने मेडिकल बोर्ड से पोस्टमॉर्टम करवाकर शव साले को सौंप दिया। मामले में नया मोड़ तब आया जब पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट सामने आई। रिपोर्ट में खुलासा हुआ कि मृतक के शरीर के बाएं हिस्से में गंभीर चोटें थीं और आंतों में अत्यधिक फ्रैक्चर पाए गए। इन चोटों के कारण ही मौत हुई थी। पुलिस की कड़ी पूछताछ में साले ने जीजा की हत्या स्वीकार की और बताया कि जीजा ने उसे गाली-गलौज की थी। आक्रोश में आकर उसने पहले डंडे से शरीर पर हमला किया और बाद में ईंट से हमला कर हत्या कर दी। हत्या के बाद पास वाली झोपड़ी में सो गया। दरअसल, मामला 13 अप्रैल का है, जब हरिभाऊ उपाध्याय नगर थाना क्षेत्र की एक झोपड़ी में पुलिस को शव मिला था। सब इंस्पेक्टर पारुल यादव ने बताया कि 13 अप्रैल को लोगों को बदबू आने पर झोपड़ी में लाश होने की थाने पर सूचना मिली थी। थाना प्रभारी महावीर प्रसाद जाब्ते के साथ प्रजापति छात्रावास के पीछे पहुंचे थे। जहां पर मध्य प्रदेश निवासी कोडरी सीताराम (30) पुत्र रघुनाथ का शव मिला था। जो मजदूरी का काम करते थे। सब इंस्पेक्टर पारुल यादव ने बताया कि मौके पर मौजूद मृतक का साला मस्तराम ने पुलिस को बताया कि वह अपने जीजा के साथ झोपड़ी में रहकर मजदूरी करता है। उसका जीजा तीन-चार दिन से काम पर नहीं जा रहा था और शराब पी रहा था। साले ने पुलिस को गुमराह करते हुए बताया कि जीजा नशे की हालत में भूख-प्यास व गर्मी से मर गया होगा। बाद में मेडिकल बोर्ड से पोस्टमॉर्टम करवा कर शव साले को सुपुर्द किया और वह शव लेकर मध्य प्रदेश चला गया। सब इंस्पेक्टर पारुल यादव ने बताया कि मेडिकल बोर्ड से शव का पोस्टमॉर्टम करवाया गया था। रिपोर्ट में खुलासा हुआ कि मृतक के बाएं तरफ लगी चोटों के कारण मृत्यु हुई है। आंतों में अत्यधिक फ्रैक्चर मिले हैं। मेडिकल जूरिस्ट की रिपोर्ट के बाद थाना प्रभारी महावीर प्रसाद की रिपोर्ट पर हत्या का मुकदमा दर्ज किया गया। सब इंस्पेक्टर पारुल यादव ने बताया कि मध्य प्रदेश से मृतक के साले को पूछताछ के लिए गुरुवार को अजमेर बुलाया गया। सख्ती से पूछताछ में उसने जीजा का मर्डर करना कबूल किया। साले ने बताया कि जीजा उसे लगातार शराब के नशे में गाली-गलौज करता था।

पहलगाम आतंकी हमले के विरोध में कल चूरू बंद, व्यापारियों से की बंद की अपील

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा चूरू

चूरू के श्रीपंचमुखी बालाजी मंदिर में शुक्रवार को विश्व हिंदू परिषद और बजरंग दल की बैठक हुई। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के विरोध में संगठनों ने शनिवार को चूरू बंद का आह्वान किया है। विश्व हिंदू परिषद के हरीश बजाज ने व्यापारियों से अपने प्रतिष्ठान बंद रखने की अपील की है। बंद के दौरान गढ़ चौराहे पर विरोध प्रदर्शन किया जाएगा। कार्यकर्ता आतंकवाद का पुतला दहन करेंगे। आतंकवाद के खिलाफ नारेबाजी भी की जाएगी। बजाज ने केंद्र सरकार से पहलगाम आतंकी हमले के दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की है। बैठक में गोपीचंद शर्मा, बिनोद ओझा, महेश गौड़, कपिल चंदेल, विनोद राठी और विनोद शर्मा समेत कई कार्यकर्ता मौजूद थे।

बीच-बचाव में घायल हुए युवक की मौत, गोगामेड़ी में 2 महीने पहले दो लोगों में हुआ था झगड़ा, बचाते समय लगी गंभीर चोट

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा श्री गंगानगर

श्रीविजयनगर क्षेत्र के निकटवर्ती गांव गोगामेड़ी में दो माह पूर्व शराब ठेके पर हुए विवाद में गंभीर रूप से घायल हुए रामस्वरूप (निवासी गोगामेड़ी) की शुक्रवार को मौत हो गई। रामस्वरूप की मौत की खबर मिलते ही परिजनों में आक्रोश फैल गया और उन्होंने श्रीविजयनगर के राजकीय चिकित्सालय में शव का पोस्टमार्टम कराने व उसे लेने से इनकार करते हुए धरना शुरू कर दिया। परिजनों का आरोप था कि इस मामले में पुलिस ने जानबूझकर एक आरोपी को अब तक गिरफ्तार नहीं किया है, जबकि घटना के तुरंत बाद पुलिस ने एक अन्य आरोपी को पहले ही हिरासत में ले लिया था। धरने के चलते राजकीय चिकित्सालय परिसर में तनाव का माहौल रहा और एहतियातन पुलिस जाप्ता तैनात किया गया। घटना की जानकारी मिलने पर श्रीविजयनगर थानाधिकारी गोविंदराम बिश्नोई मौके पर पहुंचे और परिजनों व ग्रामीणों से वार्ता की। शाम को की गई समझाइश के दौरान थानाधिकारी ने निष्पक्ष जांच का आश्वासन दिया और दोषियों के विरुद्ध शीघ्र कानूनी कार्रवाई की बात कही। इस आश्वासन के बाद परिजन शांत हुए और शाम को पोस्टमार्टम करवाकर शव परिजनों को सौंप दिया गया। जानकारी के अनुसार, रामस्वरूप की गांव गोगामेड़ी में शराब ठेके के पास दुकान है। फरवरी में ठेके के पास दो व्यक्तियों के बीच विवाद हो गया था। विवाद बढ़ता देख रामस्वरूप बीच-बचाव करने पहुंचा, तभी एक आरोपी ने पक्की ईंट से हमला कर दिया। ईंट का वार रामस्वरूप को लग गया, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे श्रीगंगानगर के अस्पताल में भर्ती करवाया गया, जहां उपचार के बाद उसकी हालत में कुछ सुधार हुआ और परिजन उसे घर ले आए थे।

इन कारणों से फैसला नहीं ले पाते

फैसला छोटा हो या बड़ा। हमारा हर फैसला हमारे जीवन को प्रभावित करता है। फिर चाहे वह कॅरिअर सम्बंधी हो या विवाह सम्बंधी। किस स्कूल में जाना है से लेकर मिली नौकरी, मौजूदा नौकरी से बेहतर है या नहीं। इस तरह के सैकड़ों फैसले हमें करने होते हैं। जो लोग आत्मविश्वास से भरे होते हैं, उन्हें इस तरह के फैसलों में अटकन महसूस नहीं होती। अटकन उन्हें होती है जिनमें आत्मविश्वास की कमी होती है। दरअसल हम अकसर कुछ खोने से या हारने से डरते हैं। हमें हर जगह का लोभ होता है, हर जगह की चाह होती है। जबकि हमें इस तथ्य को स्वीकारना चाहिए कि जीवन के हर मोड़ पर विकल्प होते हैं और उन्हीं में से बेहतर को हमें चुनना होता है। कई बार लिए हुए फैसले के चलते कुछ खोना भी पड़ सकता है। कुछ हारों का सामना भी करना होता है। आखिर जीवन इसी का नाम है। ऐसे में भला कुछ खोने से या हारने से डर कैसा। जरूरी है कि मजबूत इरादा रखें और विकल्पों में बेहतर विकल्प को चुनने में सामर्थ्य बनें।

कमजोर विकास

इस दौड़ भाग भरी जिंदगी में कमजोरी की जगह ही नहीं बनी है। बावजूद इसके सबमें कुछ न कुछ कमजोरियां हैं, खामियां हैं। हम अपनी कमजोरियों से भाग नहीं सकते। जरूरी यह है कि हम उसका सामना करें। अब जरा सोचें कि आपको अपने लिए भावुक या व्यवहारिक पार्टनर में किसी एक को चुनना है तो आप क्या करेंगे? ऐसी स्थिति में अकसर लोग एक ही व्यक्ति में पूरा पैकेज तलाशने की कोशिश करते हैं। लेकिन माफ कीजिएगा! कोई भी व्यक्ति पूर्ण नहीं होता। पूर्णता की हमारी चाहत हमें अकसर कमजोर विकास की ओर धकेल देती है। परिणामस्वरूप हम इस तरह के फैसले लेने में न सिर्फ असमंजस में पड़ जाते हैं बल्कि दूसरे विकल्प को खोने से आहत भी महसूस करते हैं।

खोए हुए के लिए अफसोस

आश्चर्यजनक तथ्य यह है कि जो चीज हमें नहीं मिलती, वही बेहतर लगती है। ...और चूंकि वह चीज नहीं मिली है, उसके लिए अफसोस के गर्त में चले जाते हैं। मिली हुई चीज की कद्र नहीं होती। हकीकत यह है जिंदगी में हुए बदलावों को हम आसानी से स्वीकार नहीं कर पाते। जबकि बदलाव हमेशा सकारात्मक होते हैं। कहा भी जाता है कि परिवर्तन एकमात्र स्थिर है। बाकी सब अस्थिर होता है। बहरहाल जीवन में हुए बदलावों के चलते हम फैसले लेने में हिचक महसूस करने लगते हैं। अपना मूल्यांकन करने लगते हैं। जबकि अपना आलोचक होना नकारात्मकता की निशानी है।

परंपरागत रूप से स्त्रियों का स्वास्थ्य एक उपेक्षित मुद्दा रहा है, विशेषकर भारत में। औरतें एक बहन, मां और पत्नी के तौर पर अपने पारिवारिक सदस्यों की देखभाल करती हैं, लेकिन अब यह स्थिति बदल रही है। अब लोगों में पहले से अधिक जागरुकता है।

महिलाओं के लिए स्वस्थ रहने के टिप्स

आज औरतें भी अपने स्वास्थ्य की समस्याओं के प्रति जागरूक हो चुकी हैं, जोकि बेहद जरूरी भी है। तो चलिये जानें कि महिलाओं को स्वस्थ रहने के लिए किन बातों का ध्यान रखना जरूरी होता है। खुद के स्वास्थ्य को संभालते हुए एक परिवार में औरतों की भूमिका औरतें, पुरुषों के मुकाबले स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों में अधिक लचर रहती हैं। फिर चाहे खुद के स्वास्थ्य का ख्याल रखना हो या अपने परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य का ख्याल रखना हो, या एक नियमित अंतराल पर निरीक्षण के लिए चिकित्सक के पास जाना हो या फिर सही खुराक और दवा उपचार का अनुसरण करना हो। आज के युग में औरतों को अपने घर और बाहर, दोनों जगह कई काम निपटाने होते हैं, जिसके कारण उनके ऊपर अत्यधिक तनाव का बोझ रहता है। हर दिन के तनाव के अलावा, औरतों का शरीर गर्भावस्था, प्रसव और मेनोपॉज जैसे बदलावों से भी होकर गुजरता है। शरीर में आये इन सारे बदलावों की वजह से एक स्त्री का शरीर कमजोर बन जाता है और उसके व्यवहार में भी कई बदलाव आते हैं। ब्रेस्ट कैंसर, सर्विकल कैंसर, ह्रदय रोग और प्रजनन तंत्र संबंधी बीमारियों से भी औरतों को जूझना पड़ सकता है।

महिलाएं और हार्मोन

महिलाएं अपने जीवन में ऐसे अनेक चरणों से होकर गुजरती है, जहां पर वह अपने शरीर में प्राकृतिक तौर पर होने वाले हार्मोनल बदलावों का अनुभव करती हैं। हार्मोनल बदलाव यौवन, गर्भावस्था और मेनोपॉज के दौरान उत्पन्न होते हैं, जिसके कारण महिलाओं में मूड बदलना और अवसाद जैसी मानसिक परेशानियों हो सकती हैं। ऐसे में यह बेहद जरूरी है कि स्त्रियों को उसके जीवन में प्राकृतिक रूप से विभिन्न चरणों में आने वाले हार्मोनल बदलावों के बारे में पहले से ही जानकारी हो, जिससे कि उसे इन चरणों का बेहतर ढंग से सामना करने में मदद मिले।

प्यूबर्टी (यौवन) के चरण

प्यूबर्टी (यौवन) के चरण के दौरान होने वाले हार्मोनल बदलाव धीरे-धीरे उत्पन्न होते हैं, इन बदलावों का महिला के शरीर पर साकार और स्थाई परिणाम नजर आते हैं। जीवन के इस बिंदु पर होने वाले बदलाव ब्रेस्ट का विकास, निजी स्थानों में बालों का विकास और कद का विकास आदि के रूप में नजर आते हैं। मासिक धर्म की प्रक्रिया भी इसी चरम में आरम्भ होती है। शरीर में उत्पन्न होने वाले बदलाव करीब तीन से चार वर्षों की अवधि तक नजर आते हैं और इस दौरान एक कन्या अनेक परिवर्तनशील मनोभावों से होकर गुजरती है। एक कन्या को अपने लगातार बदलते शरीर रूबरू होना पड़ता है, वह खुद के लिंगभेद के बारे में सचेत हो जाती है। साथ ही फर्टिलिटी के उत्पन्न होने की वजह से कन्या मानसिक रूप से बेहद संवेदनशील और चकित हो जाती है। इस चरण में पीयूष ग्रंथि एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, क्योंकि यह शरीर और प्रजनन संबंधी अंगों के विकास के लिए शरीर में हार्मोनों के निर्माण में मदद करती है।

चाय और कॉफी पीने से पीले होते हैं दांत...

एक दमकमती मुस्कुराहट आपकी खूबसूरती को चार चांद लगा देती है। और एक स्वस्थ मुस्कुराहट के लिए जरूरी है, स्वस्थ और चमकते दांत। लेकिन, चाय और कॉफी का सेवन आपके दांतों पर पीलेपन की परत चढ़ा देता है। आइए जानें कैसे आप अपने चाय और कॉफी के शौक के साथ चमचमाते दांत भी पा सकते हैं।

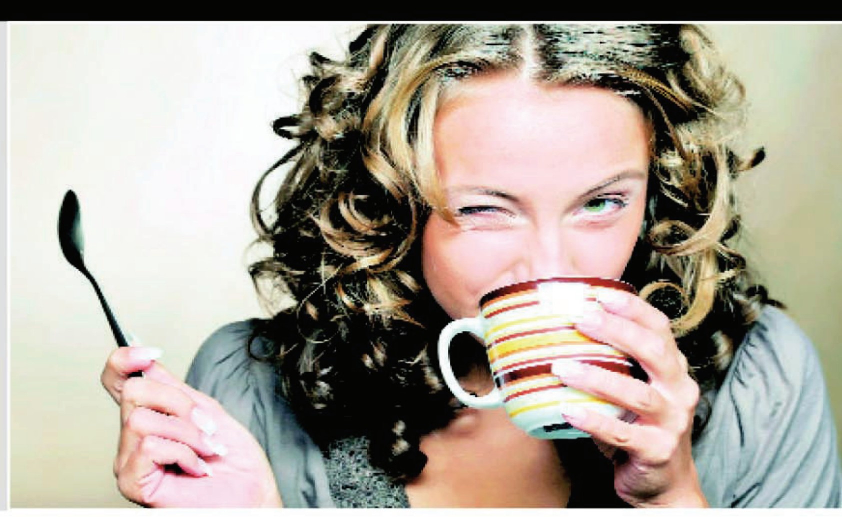

चाय कॉफी के बिना रहना मुश्किल

आप चाय या कॉफी के बिना नहीं रह सकते। सुबह उठने से लेकर रात को सोने तक आप दिन में कई बार चाय और कॉफी का सेवन करते हैं। लेकिन, क्या आप जानते हैं कि जो चाय अथवा कॉफी आप अपनी थकान उतारने के मकसद से लेते हैं, उसका आपके दांतों पर कितना बुरा असर पड़ता है। चाय और कॉफी में टॅन्निक एसिट होता है। यह एसिड गाढ़ा रंग बनाने में उपयोग होता है। यह एसिड दांतों के इनेमल को नुकसान पहुंचाकर दांतों को भूरा रंग दे सकता है।

चाय पीने के बाद करें दांतों को साफ

मुश्किल यह है कि आप चाय और कॉफी का सेवन छोड़ नहीं सकते। इसके बिना शायद आपका काम करना भी मुहाल हो जाये, लेकिन दांतों पर इसका असर कम करने के प्रयास तो किये ही जा सकते हैं। सबसे पहले आप यह कीजिये कि चाय और कॉफी पीने के बाद अपने दांतों को साफ कीजिये। अगर आप आइस कॉफी या टी पीना पसंद करते हैं, तो अच्छा रहेगा कि इनके सेवन के लिए स्ट्रॉ का इस्तेमाल करें। इससे चाय मुंह के अगले दांतों को नहीं छुएगी। हां इससे आपके पिछले दांत तो पीले हो सकते हैं, लेकिन आगे के दांत चमकते रहेंगे। अगर फिर भी आपके दांतों का पीलापन दूर नहीं होता है, तो आप डॉक्टर की मदद ले सकते हैं।

बिना जिम के कैसे रखें खुद को फिट ?

देखा जाए तो सभी का शरीर अच्छा ही होता है। केवल आपको अपने शरीर को जानकार उसे स्वस्थ रखना है। जब मानसिक स्थिरता रहेगी तब शरीर स्वस्थ रहेगा और तभी आप बनेगे फिट। अब फिट बनना आसान हो गया है। हर गली नुक्कड़ पर जिम खुले है। लेकिन शमय की सम्सया रहती है। ऐसे में घर, दफ्तर में भी आप कुछ व्यायाम करके रह सकते है।

व्यायाम

सबसे पहले चलना, फिर जॉगिंग करते हुए सुबह के व्यायाम शुरू करना चाहिए। अगर आपको समय ही नहीं मिलता तो नौकरी पर जाते आते समय ऑटोरिक्सा करने से बेहतर थोड़ा चलना भी लाभकर साबित होता है। किसी भी जगह 1 घंटे के ऊपर ना बैठे। बीच बीच में थोड़ा चलना आवस्यक है। चलने फिरने के अलावा आप योगा भी कही पर भी कर सकते है। कुछ गीने चुने आसन को छोड़ कई ऐसे योग है जो आप घर, सफर, दफ्तर कही पर भी कर सकते है। खास कर के प्राणायाम, अवलोम विलोम इनसे आपको ताजगी महसूस होने लगेगी। जब भी कोई व्यायाम आप करे तो शारीर के उस भाग पर पड़ने वाले दाब को अच्छे से महसूस करे।

खान पान

शारीरिक और मानसिक संतुलन खान पान से शुरू होता है। सब से पहले तो आपको 12 से 15 ग्लास लिक्विड पुरे दिन भर में लेना चाहिए। इसमें पानी, फल का रस, छाछ, ग्रीन टी और सूप जैसे हेल्दी ड्रिंक्स ले सकते है। जो खाना आपको बहुत पसंद है मगर डायट के मुताबिक न हो, उससे आप मोटे हो सकते है। तो वो खाना आप नास्ते में नहीं खा सकते है। जैसे की चावल, आलू की सब्जियां न खाए। इससे आप मोटे हो सकते है। अंकुरित दाने, और फ्रुट्स खाए। मधुमेह हो तो ब्राउन राईस / लापसी, दलीय का इस्तमाल करे।

खुशनुमा स्वभाव बीमारियों को रखें दूर

आए दिन बीमारियां बढ़ रही है। ऐसा कोई इंसान नहीं जिसे किसी बिमारी ने गले नहीं लगाया होगा। पहले जमाने में बहुत कम बीमारियां होती थी। मधुमेह और हायपर टेंशन जैसे बीमारियां तब केवल अमीर लोगो को होती थी। उस समय लोगो की उम्र भी अधिक और तंदरुस्त रहती थी। अब ऐसा क्या हुआ है, जिस कारण लोग हर कोई बीमारियों के चपेट में आ रहा है। जब्कि आज के जमाने में सारी सुविधाए मौजूद है। विभिन्न प्रकार की बीमारियों पर इलाज है। दुनिया चाहे कितनी भी आधुनिक हो जाऐ, लेकिन अगर आपको बीमारियों से दूर रहना है तो स्ट्रेस को दूर रखना होगा। अधिक बड़ी बीमारियों का कारण स्ट्रेस है, जो शरीर और मानसीक रोगों को आमंत्रण देता है।

स्ट्रेस होने का कारण? : सबसे महत्वपूर्ण बात यही है कि जीवन शैली बदल गई है। जीवन में दौड़ भाग बड़ गई है, यह एक बड़ी वजह है अनचाहे तरीके से स्ट्रेस धीरे धीरे बीमारी का रूप लेता है। ये उपाय करके स्ट्रेस कम किया जा सकता है। जो कि फिजियोलॉजी स्ट्रेस से जुड़ा है। स्ट्रेस यानी तनाव जो शरीर और दिमाग दोनों पर बराबर अपनी बिमारियों का जाल डालता है। तनाव से कौन सी बीमारियां होती है?

हायपरटेंशनः तनाव में रक्तचाप पर सीधा असर पड़ता है। रक्तचाप या तो बेहद कम हो सकता है, या फिर अधिक। जिससे दिल का दौरा पड़ना स्वभाविक है। हायपरटेंशन में मशतिष्क पर भी असर होता है और वहा की बेहद नाजुक नसो के फटने से ज्यादा तर खतरा होता है।

मधुमेह (डैबेटिस): जीवन में तनाव इतना बड़ गया है कि इसका असर सबके जीवन पर हो रहा है। परिणाम अधिक मीठे से नहीं बलकी ज्यादा तनाव के कारण मधुमेह बड़ गया है।

महिलाओं पर तनाव का अधिक असरः महिलाएं ज्यादा भावुक और शारीरिक रूप से पुरुषों के मुकाबले कमजोर होती है। इस लिए तनाव का असर महिलाओं पर तुरंत होता है। मेंस्ट्राल और मेनो पोझल से गुजरना पड़ता है। मेंस्ट्राल में मासिक चक्र गड़बड़ा जता है साथ में खून अधिक बहने के आसार होते है। मेनो पोझल में मासिक चक्र बंद होता है और तनाव के चलते कभी 10 से 15 दिन खून का बहाव हो सकता है। पूरी तरह बंद होने पर भी स्ट्रेस के असर इससे शुरू में निर्माण होते है।

स्ट्रेस क्यों बढ़ रहा है?: पहले जमाने में अधिक काम लोग खुद करते थे। उस वक्त तो बहुत काम रहता था क्यों कि सबके बड़े परिवार होते थे। शारीरिक मेहनत ज्यादा होती थी क्योंकि वाहन कम थे, खेतों में अधिक काम होता था। खाना पीना एकदम सादा और सेहत से भरपूर रहता था। लेकिन जैसे जैसे जमाना बदल रहा है, वैसे जीवन शैली में काफी बदलाब आए है। सारी सुविधाए होने के कारण लोगो की शारीरिक गतविधियां कम हो गई है। साथ में अधिक भाग दौड़ के कारण परिवार को वक्त नहीं दे पा रहे। काम का बोझ के चलते तनाव कुछ ज्यादा ही बड़ गया है और आज के जीवन का वह एक अंग बन गया है।

तनाव को दूर कैसे रखे?: अगर दिनचर्या पूरी टाईट है। तो कम से कम एक वक्त परिवार के साथ मिल बैठकर खाना खाऐं। छुट्टी के दिन परिवार के साथ घर का थोड़ा काम करे। गार्डेनिंग एक सबसे मजेदार काम है, इसे भी आप कर सकते है। गुस्सा जब भी आए उसे सर पर ना चढ़ने दे।

मैं आपसे सबसे ज्यादा प्यार करती हूं अप्पा: श्रुति हासन

बालीवुड एक्ट्रेस श्रुति हासन ने अपनी जिंदगी के सबसे खास रिश्ते पर खुलकर बात की है। अपने लेटेस्ट इंस्टाग्राम पोस्ट में उन्होंने बताया कि वह किससे सबसे ज्यादा प्यार करती हैं, और वह कोई और नहीं बल्कि उनके पिता और साउथ फिल्म इंडस्ट्री के दिग्गज अभिनेता-निर्देशक कमल हासन हैं। श्रुति ने इंस्टाग्राम पर दो तस्वीरें शेयर की हैं, जिनमें वह अपने पिता के साथ नजर आ रही हैं। तस्वीरों में कमल हासन ब्राउन पैंट और बेबी पिंक टी-शर्ट पहने कुर्सी पर बैठे हैं, जबकि श्रुति ब्लैक आउटफिट में उनके पैरों के पास जमीन पर बैठी हैं। दोनों कैमरे की ओर देखकर मुस्कुरा रहे हैं। इन प्यारी तस्वीरों के साथ श्रुति ने एक इमोशनल कैप्शन भी लिखा है : 'आप हमेशा मेरी जिंदगी की रोशनी और ताकत का जरिया हो, हंसी का कारण होज्मैं आपसे सबसे ज्यादा प्यार करती हूं अप्पा।' फैंस को यह पोस्ट काफी पसंद आ रही है और सोशल मीडिया पर इसे लेकर कई भावुक प्रतिक्रियाएं सामने आ रही हैं। कई यूजर्स ने पिता-बेटी के इस प्यारे रिश्ते को दिल छू लेने वाला बताया है। श्रुति का पूरा नाम श्रुति राजलक्ष्मी हासन है। उनका जन्म 28 जनवरी 1986 को तमिलनाडु में हुआ था, जो उनके माता-पिता कमल हासन और सारिका की शादी से दो साल पहले हुआ था। बाद में कमल और सारिका ने 1988 में विवाह किया और उनकी दूसरी बेटी अक्षरा हासन का जन्म हुआ। हालांकि 2004 में यह रिश्ता तलाक के साथ खत्म हो गया। श्रुति और कमल हासन के बीच का यह भावनात्मक रिश्ता इंडस्ट्री में मिसाल माना जाता है, और एक बार फिर इस पोस्ट ने यह साबित कर दिया कि पब्लिक फिगर होने के बावजूद भी कुछ रिश्ते बेहद निजी और अनमोल होते हैं। बता दें कि एक्ट्रेस श्रुति हासन अक्सर अपने अभिनय से ज्यादा निजी जिंदगी को लेकर सुर्खियों में रहती हैं। फैंस और पैपराजी अक्सर उनसे शादी और रिलेशनशिप को लेकर सवाल पूछते हैं।

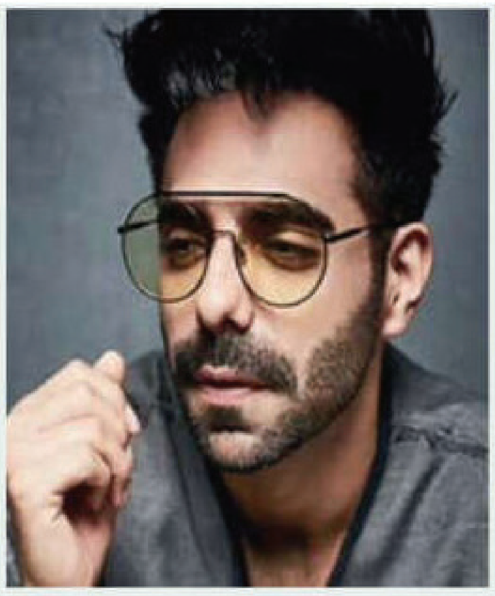

रचनात्मक प्रस्तुति को लेकर सुर्खियों में अपारशक्ति खुराना

अपनी रचनात्मक प्रस्तुति को लेकर अभिनेता, गायक और होस्ट अपारशक्ति खुराना आजकल सुर्खियों में हैं। उन्होंने हाल ही में मशहूर पाकिस्तानी कवि अनवर मसूद की प्रसिद्ध कविता बनैन को अपनी शैली में प्रस्तुत किया। इसका वीडियो सोशल मीडिया पर खूब वायरल हुआ। इस रचनात्मक यात्रा का सबसे भावुक पल तब आया जब यह प्रस्तुति खुद अनवर मक़सूद साहब तक पहुँची। उन्होंने न केवल इस प्रयास को सराहा, बल्कि अपारशक्ति के अभिनय और अदायगी की खुलकर तारीफ भी की। अनवर मक़सूद ने अपारशक्ति के लिए एक विशेष वीडियो संदेश भेजा जिसमें उन्होंने कहा, खुराना साहब, आपने मेरी नज़्म बनैन जो पढ़ी है, वह मैंने सुनी है और मुझे बहुत पसंद आई है। मेरी नज़्म और आपकी अदायगी, दोनों मिलकर एक बहुत खूबसूरत मंज़र पेश करते हैं। मैं आपको इस अदायगी पर मुबारकबाद देता हूँ। ऐसे प्रतिष्ठित साहित्यकार से मिली सराहना से अपारशक्ति भावुक हो उठे और उन्होंने सोशल मीडिया के माध्यम से अपना आभार प्रकट करते हुए लिखा कि यह क्षण उनके लिए अविस्मरणीय है। उन्होंने अनवर साहब की पोती हादिआ आकिब को भी विशेष धन्यवाद दिया, जिनकी मदद से यह वीडियो संदेश उनके पास पहुँचा। अपारशक्ति का यह प्रयास न केवल उनकी बहुआयामी प्रतिभा को दर्शाता है, बल्कि यह भी दिखाता है कि साहित्य और कला की भाषा सीमाओं से परे होती है। इस भावनात्मक संवाद ने भारत और पाकिस्तान के बीच सांस्कृतिक रिश्तों की एक खूबसूरत मिसाल पेश की है। अपारशक्ति की यह प्रस्तुति सिर्फ एक वीडियो नहीं, बल्कि एक सरहद पार साहित्यिक पुल है जो दिलों को जोड़ता है। अब दर्शकों की निगाहें उनके आने वाले प्रोजेक्ट्स पर हैं। वह जल्द ही फिल्म बदतमीज़ गिल में परेश रावल और वाणी कपूर के साथ नजर आएंगे।

निल बटे सन्नाटा: अच्छी कहानी के लिए नामी चेहरे जरूरी नहीं

साल 2015 में आई छोटी सी फिल्म निल बटे सन्नाटा ने बिना बड़े सितारों या भारी प्रमोशन्स के वो कर दिखाया, जो बड़ी-बड़ी फिल्मों के लिए भी मुश्किल होता है। प्रोडक्शन हाउस 'कलर यलो प्रोडक्शन्स' के तहत बनी इस फिल्म ने यह संदेश दिया कि एक अच्छी कहानी के लिए जरूरी नहीं कि नामी चेहरे हों, बस सच्ची भावनाएं और मेहनत से रचा गया सपना होना चाहिए। फिल्म एक सिंगल मदर की कहानी कहती है, जो घरेलू सहायिका होने के बावजूद अपनी बेटी के लिए ऊँचे सपने देखती है। इस किरदार को स्वरा भास्कर ने बेहद संजीदगी से निभाया। उनकी परफॉर्मेंस ने दर्शकों को न सिर्फ भावुक किया, बल्कि सोचने पर भी मजबूर कर दिया कि समाज में किस तरह सपनों को वर्ग, उम्र या हैसियत के आधार पर सीमित कर दिया जाता है।

निल बटे सन्नाटा की सबसे बड़ी खूबी यही थी कि उसने उम्मीद और हौसले की बात की, और दिखाया कि अगर इरादा पक्का हो, तो कोई भी बाधा मायने नहीं रखती। यह फिल्म उस पुरानी सोच को तोड़ती है कि एक सफल फिल्म में पुरुष लीड जरूरी होता है। इस फिल्म में कैमरे के दोनों ओर महिलाएं थीं सामने स्वरा भास्कर, और निर्देशन की कमान थामे अश्विनी अय्यर तिवारी, जिनके लिए यह पहली फिल्म थी। उन्होंने एक ऐसी कहानी कही जो हर उम्र, हर वर्ग और हर जेंडर को छू गई।

नौ साल बीत जाने के बाद भी निल बटे सन्नाटा उतनी ही प्रासंगिक, ताज़ा और प्रेरणादायक लगती है। यह सिर्फ एक फिल्म नहीं, बल्कि एक दृष्टिकोण है एक भरोसा कि परिस्थितियाँ कितनी भी कठिन हों, अगर उम्मीद थामे रखी जाए, तो ज़िंदगी बदली जा सकती है। यह फिल्म उन गिनी-चुनी कहानियों में से एक है जो आपको मुस्कुराना सिखाती है, और यह यकीन दिलाती है कि जहां भी हों, आप आगे बढ़ सकते हैं। सपनों की कोई एक्सपायरी डेट नहीं होती, और यही बात निर्देशक आनंद एल राय और फिल्म निल बटे सन्नाटा ने साबित कर दी।

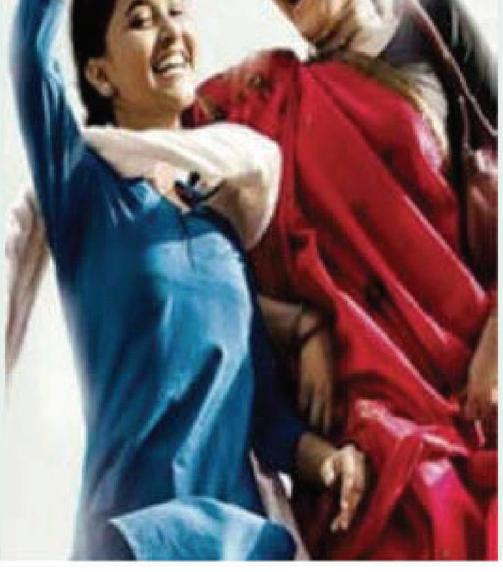

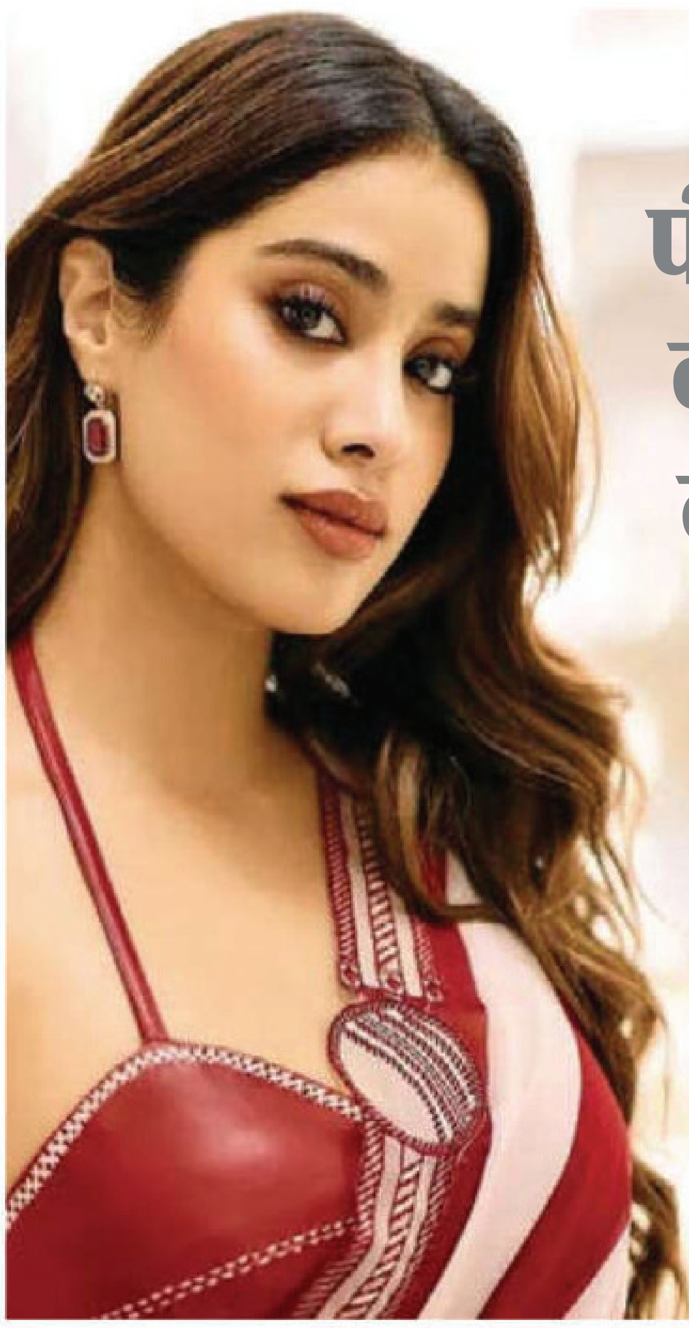

जान्हवी ने पीरियड्स के दर्द को कम आंकने वाले पुरुषों पर साधा निशाना

हाल ही में एक इंटरव्यू में एक्ट्रेस जान्हवी कपूर ने महिलाओं के पीरियड्स के दर्द को कम आंकने वाले पुरुषों पर निशाना साधा। जान्हवी का कहना है कि अगर मर्दों को पीरियड्स होते तो वे एक पल भी इस दर्द को सहन नहीं कर पाते, और शायद तब पूरी दुनिया में युद्ध जैसा माहौल बन जाता।

उन्होंने कहा कि कई बार जब महिलाओं का मूड खराब होता है या वे किसी बात पर बहस करती हैं, तो पुरुष उन्हें यह कहते हैं, क्या यह पीरियड्स का समय है? लेकिन जान्हवी का मानना है कि इस तरह की बातें महिलाओं के दर्द और भावनाओं को अनदेखा करने जैसी हैं। उनका कहना है, अगर आप सच में हमारी भावनाओं को समझते हैं तो आपको थोड़ा रुकना चाहिए, क्योंकि पीरियड्स का दर्द इतना गहरा होता है कि उसे शब्दों में नहीं कहा जा सकता। जान्हवी ने आगे कहा, यह बहुत अजीब और गलत नजरिया है, क्योंकि मैं आपको विश्वास दिलाती हूं, पुरुष इस दर्द और मूड स्विंग को एक मिनट भी सहन नहीं कर पाएंगे। अगर मर्दों को पीरियड्स होते तो शायद पूरी दुनिया में परमाणु युद्ध जैसा माहौल बन जाता।

जान्हवी का यह बयान सोशल मीडिया पर वायरल हो गया है और लोग इसे लेकर खूब चर्चा कर रहे हैं। जान्हवी कपूर की 2024 में तीन फिल्में रिलीज़ हुईं, जिनमें मिस्टर एंड मिसेज माही, उलझन और देवरा पार्ट 1 शामिल हैं। अब एक्ट्रेस अपनी अगली फिल्म सनी संस्कारी की तुलसी कुमारी की शूटिंग में व्यस्त हैं। इसके अलावा, उनकी फिल्म परम सुंदरी 2025 में रिलीज़ होगी। जान्हवी तेलुगू फिल्म पेड्डी में भी नजर आएंगी, जिसमें राम चरण, शिव राजकुमार, दिव्येंदु शर्मा और जगपति बाबू भी होंगे। पेड्डी 27 मार्च 2026 को रिलीज़ होने वाली है।

फिल्म निकिता रॉय की रिलीज डेट का ऐलान

साइकोलॉजिकल थ्रिलर फिल्म निकिता रॉय की रिलीज डेट का ऐलान कर दिया गया है। फिल्म में सोनाक्षी सिन्हा मुख्य भूमिका निभा रही हैं, उनके साथ अर्जुन रामपाल, परेश रावल और सुहैल नय्यर जैसे दमदार कलाकार नजर आएंगे। यह फिल्म 30 मई, 2025 को दुनिया भर के सिनेमाघरों में रिलीज होगी। हाल ही में फिल्म का एक नया पोस्टर भी जारी किया गया है, जिसमें इसकी ऑफिशियल रिलीज डेट का खुलासा किया गया है। निकिता रॉय का निर्देशन कुश एस. सिन्हा ने किया है। फिल्म का जॉनर साइकोलॉजिकल थ्रिलर है, जो ह्यूमन माइंड के ग्रे एरियाज और रहस्यमय परतों को सामने लाने का दावा करती है। फिल्म का निर्माण निकिता पाई फिल्म्स लिमिटेड के बैनर तले हुआ है। इसका नेतृत्व किंजल अशोक घोने ने किया है और इसमें निक्की खेमचंद भगनानी, विक्की भगनानी, अंकुर टकरानी, दिनेश रतिराम गुप्ता और क्रेटोस एंटरटेनमेंट ने सहयोग दिया है। फिल्म की कहानी और स्क्रीनप्ले पवन कृपलानी ने लिखा है, जो थ्रिलर जॉनर के लिए जाने जाते हैं। फिल्म के निर्माता निक्की और विक्की भगनानी ने अपनी उत्सुकता साझा करते हुए कहा, यह फिल्म हमारे दिल के बेहद करीब है। यह उन विषयों को छूती है जो आमतौर पर मेनस्ट्रीम सिनेमा में नहीं दिखते। फिल्म की कहानी, शानदार कास्ट और कुश एस सिन्हा का अलग विजन इसे एक मस्ट-वॉच बनाता है। हमें पूरा भरोसा है कि दर्शक इस तरह के कंटेंट के लिए तैयार हैं। रहस्य, थ्रिल और मनोवैज्ञानिक गहराईयों से भरपूर यह फिल्म 2025 की सबसे रोचक थ्रिलर्स में से एक मानी जा रही है। दर्शकों के बीच इस फिल्म को लेकर उत्साह पहले से ही देखने को मिल रहा है। निकिता रॉय को आनंद मेहता, प्रकाश नंद बिजलानी, शक्ति भटनागर, मेहनाज़ शेख और प्रेम राज जोशी ने को-प्रोड्यूस किया है।

'महाभारत' पर काम शुरू करने जा रहे हैं आमिर खान

हाल ही में एक इंटरव्यू में बालीवुड एक्टर आमिर खान ने खुलासा किया कि वह इस साल से 'महाभारत' पर काम शुरू करने जा रहे हैं। यह फिल्म उनका अब तक का सबसे बड़ा प्रोजेक्ट साबित होने वाला है। उन्होंने बताया कि 'महाभारत' को मल्टीपल पार्ट्स में बनाया जाएगा, ठीक उसी तरह जैसे हॉलीवुड की मशहूर सीरीज 'लॉर्ड ऑफ द रिंग्स' को पेश किया गया था। हालांकि, उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि इस भव्य प्रोजेक्ट की स्क्रिप्टिंग में काफी समय लग सकता है क्योंकि कहानी को संजीदगी और विस्तार के साथ दर्शाना उनका प्राथमिक उद्देश्य है। फिल्म को लेकर आमिर ने यह भी कहा कि वह खुद इस प्रोजेक्ट को डायरेक्ट नहीं करेंगे। उन्होंने इसे एक मल्टी-डायरेक्टर प्रोजेक्ट बताया, जिसका निर्देशन कई फिल्ममेकर मिलकर करेंगे।

इससे यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि फिल्म के हर पार्ट पर एक अलग दृष्टिकोण और विशेषज्ञता के साथ काम किया जाएगा। वहीं, जब उनसे पूछा गया कि क्या वह खुद फिल्म में एक्टिंग करेंगे, तो आमिर ने कहा कि इस बारे में उन्होंने अभी कोई निर्णय नहीं लिया है। उन्होंने कहा कि रोल्स का चयन टीम करेगी और इस बात का फैसला लिया जाएगा कि कौन सा कलाकार किस किरदार के लिए सबसे उपयुक्त होगा। आमिर खान आखिरी बार साल 2022 में फिल्म 'लाल सिंह चड्ढा' में नजर आए थे, जो हॉलीवुड फिल्म 'फॉरेस्ट गम्प' की आधिकारिक रीमेक थी। हालांकि, यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर कुछ खास कमाल नहीं दिखा सकी। अब आमिर फिल्म 'सितारे ज़मीन पर' में दिखाई देंगे, जो साल 2007 में आई सुपरहिट फिल्म 'तारे ज़मीन पर' का सीक्वल है। इस फिल्म का निर्देशन आर.एस. प्रसन्ना कर रहे हैं और इसमें आमिर के साथ दर्शील सफारी और जेनेलिया देशमुख भी मुख्य भूमिकाओं में नजर आएंगे। 'महाभारत' को लेकर दर्शकों में जो उत्सुकता है, वह आमिर के इस नए कदम के बाद और भी बढ़ गई है। बता दें कि आमिर खान पिछले कुछ समय से अपने महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट 'महाभारत' को लेकर चर्चा में हैं। इस पौराणिक गाथा पर आधारित फिल्म को लेकर कई तरह की अटकलें और खबरें पहले से ही सामने आती रही हैं।

ज्वेल थीफ: द हाइस्ट बिगिन्स' को लेकर चर्चा में सैफ अली खान

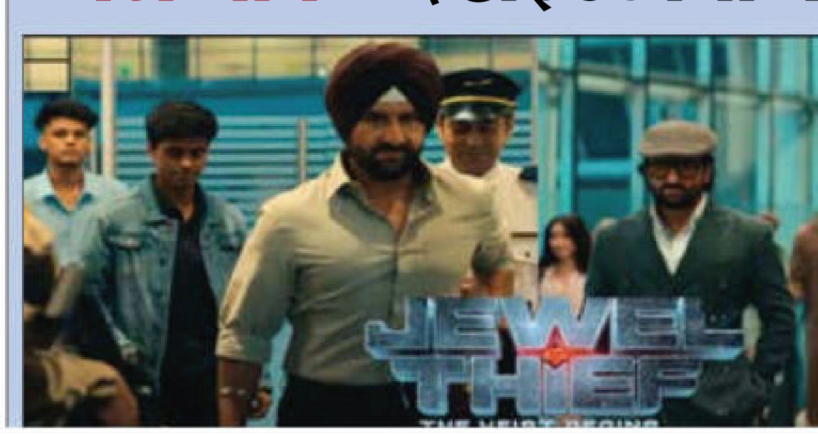

अपनी आगामी फिल्म 'ज्वेल थीफ- द हाइस्ट बिगिन्स' को लेकर अभिनेता सैफ अली खान खासा चर्चा में हैं। सैफ इसके प्रमोशन में पूरी तन्मयता से जुटे हुए हैं। उन्होंने एक और बड़ी फिल्म की शूटिंग शुरू कर दी है, जिसे डायरेक्टर राहुल ढोलकिया निर्देशित कर रहे हैं। सूत्रों के मुताबिक, इस फिल्म की शूटिंग मुंबई के बल्लार्ड एस्टेट स्थित ग्रैंड होटल के पास शुरू हो चुकी है। सैफ आने वाले कुछ हफ्तों में शहर के अलग-अलग हिस्सों में शूटिंग करते नजर आएंगे। उन्होंने प्रतीक गांधी और दीपक डोबरियाल के साथ एक महत्वपूर्ण सीक्वेंस भी फिल्माया है। माना जा रहा है कि 'ज्वेल थीफ' के प्रमोशनल कमिटमेंट्स पूरे करने के बाद, सैफ पूरी तरह इस नए प्रोजेक्ट पर ध्यान केंद्रित करेंगे। हालांकि फिल्म से जुड़ी जानकारियों को गोपनीय रखा गया है, लेकिन इंडस्ट्री में चर्चा है कि सैफ इस फिल्म में भारत के पहले मुख्य चुनाव आयुक्त सुकुमार सेन का किरदार निभा सकते हैं। यह फिल्म भारत के पहले आम चुनाव और उस दौर की ऐतिहासिक घटनाओं को उजागर करेगी, जिसमें सेन की भूमिका केंद्रीय होगी। वहीं, 'ज्वेल थीफ- द हाइस्ट बिगिन्स' की बात करें तो यह एक हाई-स्टेक हीस्ट ड्रामा है, जिसमें सैफ रेहान रॉय की भूमिका में हैं, जिसे जयदीप अहलावत का किरदार राजन औलाख 500 करोड़ रुपये के कीमती अफ्रीकन रेड सन हीरे की चोरी के लिए हायर करता है। फिल्म में कुणाल कपूर इंस्पेक्टर विक्रम पटेल, निकिता दत्ता राजन की पत्नी और रेहान की एक्स-गर्लफ्रेंड फराह के किरदार में हैं। फिल्म में शबाना आजमी, अनुपम खेर, परेश रावल और जैकी श्रॉफ जैसे सशक्त कलाकार भी अहम भूमिकाओं में दिखाई देंगे। फिल्म का निर्देशन कुकी गुलाटी और रॉबी ग्रेवाल ने किया है।

देश उनके साथ खड़ा है, संसद में प्रस्ताव पारित करें, पहलगाम हमले को लेकर सिब्बल की पीएम मोदी को सलाह

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा नई दिल्ली

राज्यसभा सांसद कपिल सिब्बल ने शुक्रवार को पीएम मोदी को सलाह दी कि उन्हें संसद का विशेष सत्र बुलाना चाहिए और एकमत होकर एक प्रस्ताव पारित करना चाहिए, जिसमें पहलगाम आतंकी हमले को लेकर देश की भावनाओं को पूरी दुनिया के सामने प्रदर्शित किया जा सके। कपिल सिब्बल ने कहा कि 'मेरी प्रधानमंत्री को कुछ सुझाव हैं। संसद का विशेष सत्र बुलाया जाए, जिसमें ताजा हालात पर चर्चा हो और सभी से सुझाव लिए जाएं। पूरा देश उनके साथ खड़ा है। एक आतंकी, आतंकी होता है, उसका कोई धर्म नहीं होता। संसद में एक प्रस्ताव एकमत से पारित किया जाना चाहिए, जिसमें देशवासियों की भावनाओं को पूरी दुनिया के सामने प्रदर्शित किया जाए।' राज्यसभा सांसद कपिल सिब्बल ने कहा कि 'हमें सत्तापक्ष और विपक्ष के सांसदों का एक प्रतिनिधिमंडल अफ्रीका, अमेरिका, यूरोप, चीन, जापान, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, रूस और दक्षिण अमेरिकी देशों में भेजने की जरूरत है, ताकि हम दुनियाभर के देशों को स्थिति के बारे में बता सकें। अगर हम ये कदम नहीं उठाएंगे तो हम कूटनीतिक दबाव नहीं डाल पाएंगे।' वरिष्ठ नेता ने कहा कि 'हमें सभी बड़े देशों को बताना होगा कि अगर वे पाकिस्तान के साथ व्यापार करेंगे तो हम उनके साथ व्यापार नहीं करेंगे। संयुक्त राष्ट्र को भी दबाव बनाना चाहिए और सुरक्षा परिषद में भी प्रस्ताव पारित होना चाहिए।' बीती 22 अप्रैल को जम्मू कश्मीर के पहलगाम में पाकिस्तान समर्थित लश्कर ए तैयबा के संगठन टीआरएफ के आतंकियों ने 26 निर्दोष पर्यटकों की गोली मारकर हत्या कर दी थी। इस घटना के बाद भारत सरकार ने सख्त कदम उठाते हुए सिंधु जल समझौता स्थगित कर दिया। साथ ही पाकिस्तान के साथ कूटनीतिक संबंध भी कम कर लिए हैं। भारत ने पाकिस्तान के उच्चायुक्त को एक हफ्ते में देश छोड़ने का निर्देश दिया है। आतंकी हमले के बाद भारतीय सेना भी अलर्ट पर है।

केंद्र ने सुप्रीम कोर्ट में हलफनामा दायर कर वक्फ अधिनियम का बचाव किया, कहा- याचिकाएं झूठी दलीलों पर आधारित

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा नई दिल्ली

केंद्र सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में हलफनामा दायर कर वक्फ (संशोधन) अधिनियम, 2025 की वैधता के खिलाफ याचिकाओं को खारिज करने की मांग की। केंद्र ने कोर्ट से कहा कि तय कानूनी स्थिति, अदालतें वैधानिक प्रावधान पर रोक नहीं लगाएंगी, मामले पर अंतिम रूप से फैसला करेंगी। संवैधानिकता का अनुमान संसद की ओर से बनाए गए कानूनों पर लागू होता है। केंद्र ने कहा कि याचिकाएं इस झूठे आधार के साथ लगाई गई हैं कि संशोधन धार्मिक स्वतंत्रता के मौलिक अधिकारों को छीन लेंगे। सुप्रीम कोर्ट विधायी क्षमता, अनुच्छेद 32 के तहत मौलिक अधिकारों के उल्लंघन के आधार पर कानून की समीक्षा कर सकता है। संसदीय पैनल की ओर से व्यापक, गहन, विश्लेषणात्मक अध्ययन के बाद संशोधन किया गया है। 'निजी और सरकारी संपत्तियों पर अतिक्रमण करने के लिए प्रावधानों का दुरुपयोग किया गया' केंद्र ने सुप्रीम कोर्ट से कहा कि निजी और सरकारी संपत्तियों पर अतिक्रमण करने के लिए प्रावधानों का दुरुपयोग किया गया है। मुगल काल से पहले स्वतंत्रता-पूर्व काल, स्वतंत्रता-पश्चात काल में, कुल वक्फों की संख्या 18,29,163.896 एकड़ थी। चौंकाने वाली बात यह है कि 2013 के बाद वक्फ भूमि में 20,92,072.536 एकड़ की वृद्धि हुई। केंद्र ने सुप्रीम कोर्ट से कहा कि विधायी शासन को प्रतिस्थापित करना, विधायिका द्वारा अधिनियमित किया जाना अस्वीकार्य है। वक्फ (संशोधन) अधिनियम, 2025 वैध है। यह विधायी शक्ति का वैध प्रयोग है। संसद ने अपने अधिकार क्षेत्र में काम करते हुए यह सुनिश्चित किया कि वक्फ जैसे धार्मिक बंदोबस्तों का प्रबंधन किया जाए और उसमें विश्वास बनाए रखा जाए। केंद्र ने सुप्रीम कोर्ट से कहा कि जब वैधता का अनुमान लगाया जाता है तो प्रतिकूल परिणामों के बारे में जाने बिना पूरी तरह से रोक लगा दी जाती है। वक्फ कानून की वैधता को चुनौती देने वाले याचिकाकर्ताओं का प्रयास न्यायिक समीक्षा के मूल सिद्धांतों के खिलाफ है।

पहलगाम आतंकी हमला हमारी खुफिया विफलताः पूर्व सेना प्रमुख

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा नई दिल्ली

थल सेना के पूर्व प्रमुख रिटायर्ड जनरल शंकर रॉय चौधरी का कहना है कि पहलगाम आतंकी हमला एक खुफिया विफलता है और उन्होंने शीर्ष स्तर पर इसकी जवाबदेही तय करने की मांग की। भारतीय सेना के 18वें जनरल रहे शंकर रॉय चौधरी ने कहा कि मुझे शक है कि यह खुफिया विफलता है। किसी को तो

इस लापरवाही का जवाब देना चाहिए। इसकी जवाबदेही तय होनी चाहिए और जो भी दोषी पाए जाएं, उनके खिलाफ कड़ी कार्रवाई होनी चाहिए। पूर्व आर्मी चीफ ने कहा कि पहलगाम हमले में पाकिस्तान और पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आईएसआई की भूमिका है, जिसमें 26 निर्दोष पर्यटकों की आतंकियों ने हत्या कर दी। इस हमले के पीछे आतंकवादी संगठन लश्कर ए तैयबा के प्रोक्सी संगठन द रेजिस्टेंट फ्रंट (टीआरएफ) का हाथ होने का दावा किया जा रहा है। रिटायर्ड जनरल शंकर रॉय चौधरी ने कहा कि 'इतनी संख्या में आतंकवादी सीमापार कैसे आ गए, इसकी जांच होनी चाहिए।' उन्होंने कहा कि पाकिस्तान पर सिर्फ कूटनीतिक दबाव बनाना ही काफी नहीं है बल्कि सैन्य कार्रवाई भी होनी चाहिए। पूर्व सेना प्रमुख शंकर रॉय चौधरी ने कहा कि 'हमें सख्त जवाब देने की जरूरत है। मुझे तो ऐसा ही लगता है। हालांकि हमें अंतरराष्ट्रीय कूटनीति का भी ध्यान रखना चाहिए। अब बस बहुत हुआ।' आतंकियों को स्थानीय मदद मिलने की आशंका पर उन्होंने कहा कि 'मैं दावे से नहीं कह रहा हूं, लेकिन हमें अपने आंख और कान खुले रखने चाहिए। पाकिस्तान और आईएसआई हमेशा सक्रिय रहते हैं। हमारे पास भी अपनी खुफिया एजेंसी है।

स्वतंत्रता सेनानियों पर टिप्पणी करने की किसी को इजाजत नहीं दी जाएगी, सावरकर विवाद पर राहुल को फटकार

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा नई दिल्ली

सुप्रीम कोर्ट से कांग्रेस सांसद राहुल गांधी को बड़ी राहत मिली है। कोर्ट ने इलाहाबाद हाईकोर्ट के उस आदेश पर रोक लगा दी है, जिसमें लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी के खिलाफ उत्तर प्रदेश की एक ट्रायल कोर्ट की ओर से जारी समन को रद्द करने से इनकार कर दिया गया था। राहुल को उनके खिलाफ दायर वीडी सावरकर मानहानि मामले में समन किया गया था। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को कांग्रेस नेता राहुल गांधी को विनायक दामोदर सावरकर पर उनकी गैरजिम्मेदाराना टिप्पणी के लिए फटकार लगाई। कोर्ट ने कहा कि हमें अपने स्वतंत्रता सेनानियों का मजाक नहीं उड़ाना चाहिए। हालांकि, शीर्ष अदालत ने उत्तर प्रदेश में उनकी टिप्पणी के लिए दर्ज मामले में राहुल गांधी के खिलाफ आपराधिक कार्यवाही पर रोक लगा दी। न्यायमूर्ति दीपांकर दत्ता और जस्टिस मनमोहन की पीठ ने राहुल गांधी को भविष्य में इस तरह के कोई भी बयान न देने की चेतावनी भी दी, क्योंकि शीर्ष अदालत इस तरह की टिप्पणियों पर स्वत संज्ञान ले सकती है। पीठ ने कांग्रेस नेता की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता अभिषेक सिंघवी से पूछा कि क्या राहुल गांधी जानते हैं कि महात्मा गांधी भी अंग्रेजों के साथ अपने संवाद में आपका वफादार सेवक जैसे शब्दों का इस्तेमाल करते थे। जब सिंघवी ने तर्क दिया कि राहुल के खिलाफ शत्रुता और सार्वजनिक उत्पात को बढ़ावा देने के आरोप नहीं बनते तो पीठ ने टिप्पणी की, 'आप बहुत आज्ञाकारी हैं, क्या आपके मुवक्किल को पता है कि महात्मा गांधी ने भी वायसराय को संबोधित करते समय 'आपका वफादार सेवक' शब्द का इस्तेमाल किया था? क्या महात्मा गांधी को केवल इसलिए 'अंग्रेजों का सेवक' कहा जा सकता है, क्योंकि उन्होंने वायसराय को 'आपका सेवक' कहकर संबोधित किया था। उन दिनों मैंने भी देखा है, कलकत्ता उच्च न्यायालय के हमारे न्यायाधीश मुख्य न्यायाधीश को 'आपका सेवक' लिखकर संबोधित करते थे।' न्यायमूर्ति दत्ता ने कहा, 'क्या आपके मुवक्किल को पता है कि उनकी दादी (इंदिरा गांधी) जब प्रधानमंत्री थीं, तो उन्होंने भी इन्हीं सज्जन (सावरकर) की प्रशंसा करते हुए एक पत्र भेजा था?' न्यायाधीश ने कहा कि तो स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में गैर-जिम्मेदाराना बयान न दें। आपने कानून के बारे में अच्छी बात कही है, आप इस पर रोक लगाने के हकदार हैं। हम इस पर कुछ नहीं कह रहे हैं। पीठ ने चेतावनी देते हुए कहा कि उनके द्वारा दिए गए किसी भी अन्य बयान पर स्वतः संज्ञान लिया जाएगा। हमारे स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में और कुछ नहीं कहा जा सकता। उन्होंने हमें स्वतंत्रता दिलाई है और हम उनके साथ ऐसा व्यवहार करते हैं? यह सही तरीका नहीं है। इसके बाद शीर्ष अदालत ने उत्तर प्रदेश सरकार और शिकायतकर्ता अधिवक्ता नृपेंद्र पांडे को नोटिस जारी किया और इलाहाबाद उच्च न्यायालय के उस आदेश पर रोक लगा दी, जिसमें राहुल गांधी के खिलाफ निचली अदालत के समन को रद्द करने से इनकार कर दिया गया था। सिंघवी ने अदालत से कोई टिप्पणी न करने का आग्रह किया और कहा कि राहुल गांधी का समूहों के बीच दुश्मनी पैदा करने का कोई इरादा नहीं था। पीठ ने पलटवार करते हुए कहा, 'आप स्वतंत्रता सेनानियों के साथ इस तरह का व्यवहार नहीं करते। जब आपको भारत के इतिहास के बारे में कुछ भी पता नहीं है, तो आपको ऐसी कोई टिप्पणी नहीं करनी चाहिए।' न्यायमूर्ति दत्ता ने आगे कहा कि वह एक राजनीतिक दल के नेता हैं और आप इस तरह की टिप्पणी क्यों करेंगे।

बंधक बनाए गए बीएसएफ जवान के पिता की केंद्र सरकार से गुहार- 'मेरे बेटे को तुरंत वापस लाओ'

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा कोलकाता।

पंजाब के फिरोजपुर सीमा के पास ड्यूटी के दौरान अनजाने में बार्डर पार करने पर पाकिस्तानी रेंजर्स द्वारा हिरासत में लिए गए सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) जवान के पिता ने अपने बेटे की अविलंब रिहाई के लिए केंद्र सरकार से गुहार लगाई है। बंगाल के हुगली जिले के रिसड़ा के रहने वाले बीएसएफ में हेड कांस्टेबल पीके साव को बंधक बनाए जाने की खबर के बाद से परिवार का यहां रो-रो कर बुरा हाल है। उनके पिता भोलानाथ साव ने कहा- सरकार से मेरी अपील है कि किसी भी तरह, उनके बेटे को तुरंत भारत वापस लाया जाना चाहिए। पाकिस्तान में उसके ठिकाने व वर्तमान स्थिति के बारे में भी उन्होंने सरकार से परिवार को अवगत कराने की मांग की। 40 वर्षीय जवान की पत्नी रजनी साव ने भी रोते हुए केंद्र सरकार से अपने पति की शीघ्र व सुरक्षित रिहाई की अपील की। रजनी ने बताया कि उनके पति के एक मित्र ने बुधवार रात उन्हें फोन कर घटना की जानकारी दी थी। उसने बताया था कि मेरे पति को पाकिस्तानी रेंजर्स द्वारा उस समय बंधक बना लिया गया जब वह ड्यूटी पर थे और गलती से सीमा पार कर गए थे। पत्नी के अनुसार, मंगलवार को पहलगाम में आतंकी हमले की घटना के बाद रात में पति से उनकी आखिरी बार बात हुई थी। और बुधवार सुबह करीब 6 बजे पाकिस्तानी रेंजर्स ने उनके पति को हिरासत में ले लिया। रजनी ने कहा कि उनके पति 17 साल से देश सेवा में हैं। उनकी केंद्र सरकार से एक ही विनती है कि किसी भी तरह उनके पति को जल्द व सुरक्षित देश वापस लाया जाए। साव दंपती का एक सात साल का बच्चा है। साव पिछले महीने छुट्टियों में घर आए थे। 31 मार्च को ही वे वापस ड्यूटी पर लौटे थे। बीएसएफ जवान के भाई राजेश्वर साव ने कहा, हमें बताया गया है कि रिहाई के लिए बातचीत चल रही है। केंद्र सरकार और राज्य सरकार सभी प्रयास कर रही हैं। हमें उनकी सुरक्षित वापसी की उम्मीद है। राजेश्वर के अनुसार, यह घटना बुधवार को हुई।उनके दोस्त ने बताया कि वह ड्यूटी पर थे और उनकी तबीयत ठीक नहीं थी, इसलिए उन्होंने आराम करने के लिए सीमा के पास एक पेड़ के नीचे बैठने का सोचा और वह सो गए। उसी समय, पाकिस्तानी रेंजर्स आए, उनके हथियार छीन लिए और उन्हें बंधक बनाकर ले गए।

दुनिया भर के नेताओं ने पीएम से की बात, तुलसी गबार्ड बोलीं- हिंदुओं पर बर्बर इस्लामी आतंकी हमला

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा नई दिल्ली

आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में भारत के साथ दुनिया के तमाम देश खड़े हैं। इस कड़ी में आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर ने फोन किया है। इस दौर उन्होंने पहलगाम आतंकी हमले की कड़ी निंदा की और कहा कि त्रासदी की इस घड़ी में ब्रिटेन भारत के साथ खड़ा है। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर ने प्रधानमंत्री मोदी को निर्दोष लोगों की मौत पर अपनी संवेदना व्यक्त की। वहीं श्रीलंका के राष्ट्रपति अनुरा कुमारा दिसानायके ने आज पीएम मोदी ने बातचीत की है। इसे लेकर सोशल मीडिया साइट एक्स पर एक पोस्ट में उन्होंने लिखा- पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले से गहरा सदमा लगा है जिसमें 26 निर्दोष लोगों की जान चली गई। श्रीलंका की एकजुटता और आतंकवाद के खिलाफ हमारी साझा प्रतिबद्धता को व्यक्त करने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से बात की। हम पीड़ितों के परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त करते हैं। हम इस कठिन समय में भारत के साथ खड़े हैं। पहलगाम आतंकी हमले की भर्त्सना करते हुए अमेरिकी खुफिया विभाग की निदेशक तुलसी गबार्ड ने एक्स पर एक पोस्ट में लिखा- हम पहलगाम में 26 हिंदुओं को निशाना बनाकर किए गए बर्बर इस्लामी आतंकवादी हमले के मद्देनजर भारत के साथ एकजुटता में खड़े हैं। मेरी प्रार्थनाएं और गहरी संवेदनाएं उन लोगों के साथ हैं जिन्होंने अपने प्रियजन खो दिए, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भारत के सभी लोगों के साथ हैं। हम आपके साथ हैं और इस जघन्य हमले के लिए जिम्मेदार लोगों को पकड़ने में आपका समर्थन करते हैं। वहीं आतंकवाद के खिलाफ भारत की लड़ाई के बार में भारत के विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर ने विदेशी राजदूतों के साथ चर्चा की है। इस दौरान राजनयिकों को 'आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई' के बारे में जानकारी दी गई।

पहलगाम के हीरो के परिवार को शिंदे ने दी 5 लाख की मदद

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा पुणे

महाराष्ट्र के उप मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने शुक्रवार को सैयद आदिल हुसैन शाह के परिवार को 5 लाख रुपये की आर्थिक सहायता देने की घोषणा की। सैयद आदिल एक पोनी राइड ऑपरेटर (घोड़े पर सवारी करवाने वाले) थे, जिन्होंने 22 अप्रैल को पहलगाम में हुए आतंकी हमले में पर्यटकों की जान बचाते हुए अपनी जान गंवा दी। शाह अपने परिवार के इकलौते कमाने वाले सदस्य थे। वे दक्षिण कश्मीर के खूबसूरत इलाके पहलगाम में पर्यटकों को घोड़े की सवारी कराकर रोजी कमाते थे, जहां आतंकियों ने 26 लोगों की गोली मारकर हत्या कर दी, जिनमें ज्यादातर पर्यटक थे। रिपोर्ट के मुताबिक, शाह (20 वर्षीय) ने एक पर्यटक को बचाने की कोशिश की, जो उनके घोड़े पर सवार था, और उन्होंने एक आतंकी से बंदूक भी छीनने की कोशिश की। लेकिन इसी दौरान आतंकियों ने उन्हें गोली मार दी।

राकांपा शरद गुट ने भंग की प्रवक्ताओं की समिति, पार्टी में असंतोष की अटकलों के बीच उठाया बड़ा कदम

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा मुंबई

महाराष्ट्र में राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी शरद गुट ने प्रवक्ताओं की समिति को भंग कर दिया है। पार्टी में असंतोष की अटकलों के बीच महाराष्ट्र इकाई के अध्यक्ष जयंत पाटिल ने बड़ा कदम उठाया है। महाविकास अघाड़ी गठबंधन में शामिल एनसीपी शरद गुट का इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया पर प्रतिनिधित्व करने के लिए 22 प्रवक्ता हैं। पार्टी प्रवक्ता ने कहा कि जयंत पाटिल की ओर से प्रवक्ताओं की समिति को भंग करने के बारे में एक पत्र मिला है और इस कदम का कोई कारण नहीं बताया गया है। हो सकता है कि पार्टी इकाई का पुनर्गठन किया जा रहा है। महाराष्ट्र में पिछले साल हुए विधानसभा चुनाव में एनसीपी केवल 10 सीटें ही जीत सकी थी। इसके बाद पार्टी के राज्य नेतृत्व के खिलाफ असंतोष बढ़ने की खबरें आ रही थीं। ऐसा कहा जा रहा है कि शरद पवार के पोते और पार्टी विधायक रोहित पवार के प्रदेश अध्यक्ष जयंत पाटिल के साथ अच्छे संबंध नहीं थे। चर्चा यह भी है कि पाटिल भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेतृत्व वाले गठबंधन में शामिल हो सकते हैं। लेकिन पवार और पाटिल दोनों ने इन अटकलों को खारिज कर दिया है। पिछले महीने पार्टी की कार्यसमिति की बैठक में शरद पवार ने संगठन को मजबूत करने पर जोर दिया था। उन्होंने कहा कि था कि चुनावी हार से निराश नहीं होना चाहिए। शरद पवार ने पार्टी नेताओं से लोगों के बीच नए जोश के साथ काम करने और संगठन को भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करने को कहा। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के बाद एनसीपी-एसपी की यह पहली विस्तारित कार्यसमिति बैठक थी। इस बैठक में बोलने वाले कई नेताओं ने विधानमंडलों में विपक्ष की आवाज दबाने और महाराष्ट्र में नफरत फैलाने वाले भाषणों की बढ़ती घटनाओं का आरोप लगाया और संसदीय और विधानसभा क्षेत्रों के आसन्न परिसीमन से उत्पन्न चुनौतियों पर चिंता व्यक्त की।

आतंकी हमले का लिया जाएगा बदलाः अजित पवार

वॉइस ऑफ प्रतिज्ञा पुणे

महाराष्ट्र के डिप्टी सीएम अजित पवार ने पहलगाम आतंकी हमले की निंदा की। उन्होंने कहा कि आतंकी हमले का बदला लिया जाएगा। पूरा देश यही चाहता है। इसके अलावा पुणे के दीनानाथ मंगेशकर अस्पताल में भर्ती न करने पर हुई गर्भवती महिला की मौत के मामले में उन्होंने कहा कि इसने सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा प्रणाली में विसंगतियों और असंवेदनशीलता को उजागर किया है। पुणे में राज्य परिवार कल्याण भवन एवं प्रशिक्षण केंद्र के शिलान्यास समारोह और 43 नए आपला दवाखाना क्लीनिकों के उद्घाटन मौके पर डिप्टी सीएम अजित पवार ने कहा कि भारतीय सेना जम्मू एवं कश्मीर में मंगलवार को हुए हमले के लिए जिम्मेदार लोगों के खिलाफ निर्णायक कार्रवाई करेगी। उपमुख्यमंत्री ने कहा कि हमने हमले में जान गंवाने वालों को श्रद्धांजलि अर्पित की है। इनमें महाराष्ट्र के छह लोग भी शामिल हैं। पूरे देश में यह भावना है कि हमले का बदला लिया जाना चाहिए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सिंधु जल संधि को निलंबित करने जैसे कुछ महत्वपूर्ण निर्णय लिए हैं और पाकिस्तान के साथ सभी संबंध तोड़ दिए गए हैं। उन्होंने कहा कि कायरतापूर्ण हमले में निर्दोष पर्यटक मारे गए। सभी ने इस कृत्य की निंदा की है और इसकी पुनरावृत्ति नहीं होनी चाहिए। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि हमारी भारतीय सेना इस कृत्य के लिए जिम्मेदार लोगों को खत्म कर देगी। दीनानाथ मंगेशकर अस्पताल द्वारा 10 लाख रुपये जमा कराने की मांग को लेकर कथित तौर पर गर्भवती महिला को भर्ती करने से इनकार करने के बाद उसकी मौत के मामले में अजित पवार ने कहा कि राज्य सरकार आपातकालीन चिकित्सा सेवाओं को मजबूत करने के लिए काम कर रही है। साथ ही ऐसी नीति लागू करने की योजना बना रही है, जिससे आपात स्थिति में मरीजों को उपचार देने से मना न किया जाए। महिला की मौत को हृदय विदारक बताते हुए पवार ने कहा कि इस घटना से उसके परिवार को अपूरणीय पीड़ा पहुंची है और समाज की अंतरात्मा को गहरा आघात पहुंचा है। यह प्रकरण सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली में जारी विसंगतियों और असंवेदनशीलता को उजागर करता है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने मामले का गंभीरता से संज्ञान लिया है। जांच शुरू कर दी गई है। हमें प्रारंभिक रिपोर्ट मिल चुकी है और जिम्मेदारों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। इसका उद्देश्य सिर्फ जिम्मेदारी तय करना नहीं है बल्कि यह भी सुनिश्चित करना है कि ऐसी घटनाएं दोबारा न हों। राज्य सरकार मृतक महिला के परिवार को न्याय दिलाने में कोई कसर नहीं छोड़ेगी। उपमुख्यमंत्री ने कहा कि स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाना हमारा कर्तव्य है। हमने इस संबंध में महत्वपूर्ण निर्णय लिए हैं। निजी अस्पतालों के लिए नियम और कानून और कड़े किए जाएंगे।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक, संदीप कुमार के लिए कसाणा प्रिंटिंग प्रेस, नियर बस स्टैंड भिण्डुसी, तहसील- तिजारा, जिला- अलवर (राजस्थान) पिन कोड- 301405, से मुद्रित तथा 109, धर्मशाला के पास, वीपीओ- हींगवाहेड़ा, तहसील- तिजारा, जिला- अलवर (राजस्थान) पिन कोड- 301411 से प्रकाशित। संपादक, संदीप कुमार Mob- 9414508610 E-mail:- pratigya.alwar@gmail.com पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के लिए जिम्मेदार, समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र अलवर होगा